स्वदेश TODAY digital

रांची, सोमवार
22.04.2024
वर्ष : 09, अंक : 111, पृष्ठ : 12
मूल्य : 3 रुपया
www.swadeshtoday.com

हिन्दी दैनिक
स्वदेश टुडे
देश की आवाज

@swadeshtoday | @swadesh_today | swadesh_today | swadesh today | @swadesh_today | 8092174888 | 9031730388

मतदाताओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए मिनी मैराथन का आयोजन

3

NEWS IN Gallery

चुनाव आयोग ने शिवसेना (यूबीटी) को भेजा नोटिस

मुंबई : चुनाव आयोग ने रविवार को शिवसेना (यूबीटी) को नोटिस भेजकर कैंपेन सॉन्ग से 'भवानी' शब्द हटाने को कहा है। आयोग ने कहा कि यह शब्द हिंदू देवी से जुड़ा हुआ शब्द है। इलेक्शन में इस तरह के धार्मिक नारे का इस्तेमाल नहीं कर सकते। आयोग के नोटिस पर उद्धव ठाकरे ने नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि वे अपने थीम सॉन्ग से भवानी शब्द को नहीं हटायेंगे। आयोग को जो कार्रवाई करनी है करे। दरअसल, उद्धव गुट ने इलेक्शन कैंपेन के लिए 16 अप्रैल को प्रमोशन सॉन्ग रिलीज किया था, जिसमें भवानी शब्द का जिक्र है।

सूरत में कांग्रेस कैंडिडेट का नामांकन रद्द

सूरत : गुजरात के सूरत में कांग्रेस कैंडिडेट नीलेश कुंभाणी का नामांकन फॉर्म रद्द कर दिया गया है। उनके पर्चे में गवाहों के हस्ताक्षर में गड़बड़ी थी। डीईओ सौरभ पारधी ने शनिवार को इस मामले में स्पष्टीकरण मांगते हुए कुंभाणी से को रविवार सुबह 11 बजे तक का समय दिया था। भाजपा की ओर से कुंभाणी के तीन समर्थकों के हस्ताक्षर पर सवाल उठाया गया था। इसके बाद कलक्टर ने तीनों समर्थकों को हाजिर होने को कहा था, लेकिन तीनों के हाजिर न होने पर कुंभाणी का नामांकन पत्र खारिज कर दिया गया है। दूसरी ओर मामले में कांग्रेस ने हाई कोर्ट जाने का निर्णय किया है।

बीजापुर मुठभेड़ में नक्सली ढेर

बीजापुर : छत्तीसगढ़ के भैरमगढ़ थाना क्षेत्र अंतर्गत केशकुतुल के जंगल में रविवार सुबह 5.30 बजे सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ में एक नक्सली को ढेर कर दिया। सुरक्षाबलों ने मुठभेड़ स्थल से नक्सली का शव बरामद करने के अलावा हथियार, विस्फोटक एवं अन्य नक्सली सामग्री बरामद किया है। जानकारी के अनुसार, केशकुतुल-केशामुंडी के जंगल में नक्सलियों के डिविजन सप्लाई का टीम कमांडर कवासी पण्डरू एवं अन्य 15-20 नक्सलियों की उपस्थिति की सूचना पर डीआरजी बीजापुर के जवानों ने सर्चिंग अभियान चलाया था।

भाजपा नेता अमित मालवीय के खिलाफ एफआईआर

कोलकाता : पश्चिम बंगाल के कोलकाता जिले के गरियाहाट पुलिस थाने में भाजपा नेता अमित मालवीय के खिलाफ प्राथमिक दर्ज की गयी है। ममता सरकार की मंत्री चंद्रिमा भट्टाचार्य ने शनिवार को मालवीय के खिलाफ शिकायत दर्ज करायी थी। भट्टाचार्य का आरोप है कि मालवीय ने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी की। अमित मालवीय पश्चिम बंगाल भाजपा के सह प्रभारी एवं पार्टी की आईटी सेल के प्रमुख हैं।

रांची में आयोजित उलगुलान न्याय महारैली में देशभर से पहुंचे आईएनडीआईए के नेताओं ने दिखाई एकजुटता, कहा –

संविधान व लोकतंत्र बचाने की लड़ रहे लड़ाई

स्वदेश संवाददाता

रांची : राज्य की राजधानी रांची के प्रभात तारा मैदान में रविवार को झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) के तत्वावधान में उलगुलान न्याय महारैली का आयोजन किया गया। इसमें इंडी गठबंधन के कई बड़े नेता शामिल हुए। सभी ने जमकर केंद्र सरकार को निशाने पर लिया। साथ ही दावा किया कि अबकी बार जनता उन्हें दिल्ली की गद्दी से बाहर कर देगी। जुमलेबाजी, बढ़ती महंगाई से जनता ऊब चुकी है। मोदी सरकार की विदाई तय है। उलगुलान न्याय महारैली में गठबंधन के कई राज्यों के पूर्व मुख्यमंत्रियों सहित अन्य वरिष्ठ नेताओं ने कहा कि मोदी सरकार ने झूठ बोलकर सत्ता हासिल की है और जनता ठगी महसूस कर रही है। इस बार के लोकसभा चुनाव में मोदी सरकार को अंजाम भुगतना पड़ेगा। देश की जनता मोदी सरकार की सत्ता को उखाड़ फेंकेगी।

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने उनके पति अरविंद केजरीवाल और झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को भी जेल में डाल दिया। कहते हैं जांच चल रही। यह कैसी जांच है। दोष साबित होने से पहले ही जेल में डाल दिया। सुनीता ने कहा कि केजरीवाल पहली बार जब मुख्यमंत्री बने तो 39 दिनों में ही इस्तीफा दे दिया। ऐसे व्यक्ति जो देश को नंबर वन बनाना चाहते हैं, उनको जेल में डाल दिया। अरविंद केजरीवाल ने जेल से कहा है कि यदि मौका देंगे तो हम सब मिलकर देश को महान बनायेंगे। ऐसी तानाशाही सरकार से लड़ने के लिए तैयार रहें ताकि दोनों नेता जेल के अंदर से बाहर निकल सकें।

मैं चीनी या पाकिस्तानी नहीं, भारतीय मुसलमान हूं : जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री और नेशनल कॉन्फ्रेंस के प्रमुख फारूक अब्दुल्ला ने कहा कि वह मुसलमान हैं लेकिन चीनी या पाकिस्तानी मुसलमान नहीं हैं। वह हिंदुस्तानी मुसलमान हैं। भारत के मुसलमान हैं। भारत में अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग भाषा बोलने वाले लोग रहते हैं। यही हमारे लोकतंत्र की खूबसूरती है। हम सबको एक उम्मीद ने जोड़ रखा है कि यदि हमें आगे बढ़ना है, भारत को आगे बढ़ना है तो हम सबको मिलकर रहना होगा। उन्होंने कहा कि राम पूरे विश्व के राम हैं। हरेक के राम हैं।

आदिवासियों को अशिक्षित रखना चाहती है भाजपा : चंपाई सोरेन

झारखंड के मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने कहा कि भाजपा की सरकार ने पांच हजार स्कूल बंद किये, लेकिन हमारी सरकार ने स्मार्ट स्कूल खोलने शुरू कर दिये। भाजपा झारखंड के आदिवासियों, दलितों, मूलवासियों और पिछड़ा वर्ग के बच्चों को अशिक्षित रखना चाहती थी, लेकिन हेमंत सोरेन ने मॉडल स्कूल खोलना शुरू किया तो भाजपा परेशान हो उठी। वर्ष 2022 तक सभी लोगों को पक्का आवास देने की बात भाजपा ने कही थी। झारखंड को पीएम आवास नहीं मिला तो हेमंत सोरेन ने अबुआ आवास योजना की शुरुआत कर दी। हम 30 लाख परिवारों को अबुआ आवास देने जा रहे हैं।

मल्लिकार्जुन खड़गे बोले – भाजपा ने वोट के लिए आदिवासी को बनाया देश का राष्ट्रपति

कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने सालाना दो करोड़ लोगों को नौकरी देने, किसानों की आय दोगुनी करने, हर किसी के खाते में 15 लाख रुपये डालने का मुद्दा उठाया। उन्होंने मोदी को झूठों का सरदार कहा। साथ ही कहा कि ये लोग झूठ बोलकर वोट लेते हैं और बाद में जनता को तबाह कर देते हैं। खड़गे ने कहा कि हमेशा मोदी कहते हैं कि मैंने आदिवासी को इस देश का राष्ट्रपति बनाया, मैंने शेड्यूल कास्ट के व्यक्ति को राष्ट्रपति बनाया। उन्होंने कहा कि तुमने वोट के लिए उन्हें राष्ट्रपति बनाया। उनके कल्याण या स्वाभिमान के लिए नहीं। उनके स्वाभिमान को आपने ठेस पहुंचायी है। खड़गे ने कहा कि मोदी गरीबों का वोट छीन लेना चाहते हैं। वह बार-बार कहते हैं कि अबकी बार 400 पार। उन्होंने कहा कि हमारी संसद में 543 सीटें हैं। मोदी कहते हैं 400 पार। गनीमत है कि उन्होंने अब तक नहीं कहा 600 पार। साथ ही कहा कि गठबंधन की शक्ति इस बार इतनी है कि मोदी हो या कोई और हमारी मजबूती को तोड़ नहीं सकते। हेमंत सोरेन को जेल में डालने से हम डरने वाले नहीं हैं। केजरीवाल को जेल में डालने से हम डरने वाले नहीं हैं। हम जनता से डरते हैं। तुम्हारे जैसे लीडरों से नहीं डरते।

इंडी गठबंधन के नेताओं ने केंद्र सरकार पर साधा निशाना

लोकतंत्र का करना है बचाव : तेजस्वी यादव

बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने कहा कि भाजपा को भगाकर देश के लोकतंत्र को बचाव करना है। गंगा-यमुना तहजीब को बचाना है। देश में जो तानाशाही चल रही है उसे उखाड़कर फेंकना है। तेजस्वी ने कहा कि दिल्ली और झारखंड में अच्छा काम चल रहा था, लेकिन ईडी को लगाकर सबको जेल में डालने का काम किया जा रहा है। हम इनसे डरेंगे नहीं। इन्हें वोट नहीं देना है। हमारे भगवान श्रीकृष्ण का जन्म भी जेल के अंदर हुआ था। मोदी से बदला लेना है। मोदी ने देश में गरीबी, महंगाई और जुमलेबाजी बढ़ाने का काम किया। इसलिए आईएनडीआईए के उम्मीदवारों को भारी मतों से विजय बनाने का काम करें।

षडयंत्र रच कर हेमंत को भेजा गया जेल : कल्पना

हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना सोरेन ने हेमंत सोरेन की ओर से जेल से भेजे गये पत्र को पढ़कर सुनाया। पत्र में हेमंत सोरेन ने कहा है कि षडयंत्र रच कर जेल के अंदर रखा है। उनकी तरह अरविंद केजरीवाल को भी जेल में बंद किया गया है। जबसे केंद्र में मोदी सरकार बनी है तब से देश में केंद्रीय एजेंसियों का गलत उपयोग किया जा रहा है। झारखंड में पलायन, विस्थापित और बेरोजगारी जैसी समस्याओं पर बात नहीं की जा रही।

संविधान और लोकतंत्र को बचाने का संकल्प : मान

पंजाब के मुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी के नेता भगवंत मान ने कहा कि यह राजनीतिक रैली नहीं। शक्ति प्रदर्शन भी नहीं। संविधान, लोकतंत्र को बचाने को संकल्प लेने को आये हैं। सुनीता और कल्पना के पति जेल में हैं। उनका कसूर क्या था। वे बेरोजगारी मिटाना चाहते थे। महिलाओं को मुफ्त में सफर, बिजली देने की बात करते थे। अरविंद केजरीवाल, हेमंत सोरेन की खाली कुर्सियां ही भाजपा की कुर्सियां खाली करवायेंगी। भाजपा समझती है कि जेल में आवाज डालकर आवाज दबा देंगे। छह महीने बाद संजय सिंह को ईडी ने कहा कि कोई सबूत नहीं है। ऐसे ही हेमंत सोरेन को कहेंगे।

बदलाव का आ गया है समय : अखिलेश यादव

समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा कि भाजपा यह न भूले कि उसने शेर को गिरफ्तार किया है, लेकिन उसकी दहाड़ अभी भी गिरफ्तार नहीं हुई है। उलगुलान की यह आवाज ऐलान कर रही है कि बदलाव का समय आ गया है। जनता को बताने के लिए भाजपा के पास अब कुछ भी नहीं है। अखिलेश ने कहा कि किसानों को भी ठगने का काम किया। भाजपा की सरकार के आने के बाद किसानों की हालत और खराब हो गयी।

विपक्ष का गला घोंटने में लगी है एजेंसियां : प्रियंका

शिवसेना (उद्धव ठाकरे गुट) की प्रियंका चतुर्वेदी ने कहा कि उद्धव ठाकरे महाराष्ट्र में चुनाव के मौसम में व्यस्त हैं। उन्होंने संदेश दिया है कि हमारी दो बहनें दिल्ली और झारखंड की हैं। उनके लिये आवाज उठाओ। ईडी, सीबीआई विपक्षी आवाज का गला घोंटने में लगी है। झूठी सरकार के खिलाफ बोलने वालों के खिलाफ एक्शन हो रहा है। वर्ष 2014 से अब तक एक भी वादे मोदी ने पूरे नहीं किये। हम आने वाली पीढ़ी के लिए लड़ाई लड़ते रहेंगे और जो-जो ईडी, सीबीआई का दुरुपयोग कर रहे हैं, उन सबको सबक सिखायेंगे।

सीता सोरेन का हमला : पोस्टर शेयर करते हुए लिखा – कदम-कदम बढ़ाये जा, झारखंड को नोच खाये जा

स्वदेश संवाददाता

रांची : झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन पर उनकी भाभी और दुमका लोकसभा सीट से भाजपा की प्रत्याशी सीता सोरेन ने सोशल मीडिया पर जोरदार हमला बोला है। उन्होंने रविवार को रांची में हेमंत सोरेन के समर्थन में हो रही इंडिया गठबंधन की रैली के ठीक पहले एक्स पर हेमंत सोरेन का कंधे पर गठरी ढोता हुआ पोस्टर शेयर किया, इस पर लिखा - कदम-कदम बढ़ाये जा, झारखंड को नोच खाये जा।

पोस्टर में इस स्लोगन को आईएनडीआईए गठबंधन का एंथम बताया गया है। सीता सोरेन ने लिखा - बाती में तेल नहीं, जनता से कोई मेल नहीं। भ्रष्टाचार और अत्याचार से गठबंधन को परहेज नहीं। जिस प्रकार दीया बुझने से पहले खूब तेजी से फड़फड़ाता है, ठीक उसी प्रकार अपना राजनीतिक अस्तित्व मिटने से पहले इंडी गठबंधन वाले आखिरी बार फड़फड़ा रहे हैं। उन्होंने रैली को लेकर सोशल मीडिया पर कई और पोस्ट शेयर किये। एक अन्य पोस्ट में उन्होंने लिखा - मुंह में सोने का चम्मच लेकर पैदा हुए इन नेताओं को झारखंड के आदिवासियों और जल-जंगल-जमीन से कोई सरोकार नहीं है, ये बस अपना अस्तित्व बचाने के लिए इकट्ठा हुए हैं। इन्हें लगता है कि जनता इनके कारनामे को नहीं जानती है, लेकिन इन्हें ये नहीं पता कि जनता इनके इरादे से अच्छी तरह वाकिफ है। उन्होंने आगे लिखा - गरीब आदिवासियों की जमीन छीनने वाले आज लोकतंत्र को खतरे में बता रहे हैं। लेकिन वो ये भूल जाते हैं कि जनता के सामने ये नौटंकी नहीं चलने वाली। जनता जानती है कि गरीब के हक पैसा छीनने वाला ये घमंडिया गिरोह ही लोकतंत्र का सबसे बड़ा दुश्मन है।

गोड्डा से दीपिका का टिकट कटा, रांची से यशस्विनी सहाय कांग्रेस उम्मीदवार

स्वदेश संवाददाता

रांची : कांग्रेस ने गोड्डा से दीपिका पांडेय सिंह का टिकट काटकर अब विधायक प्रदीप यादव को मैदान में उतारा है। वहीं, रांची से कांग्रेस ने पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय की बेटी यशस्विनी सहाय को प्रत्याशी बनाया है।

रांची में आयोजित उलगुलान रैली के कुछ ही देर बाद ही यशस्विनी सहाय को टिकट देने का ऐलान किया गया। रैली के मंच पर पहुंच कर यशस्विनी ने कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे का आशीर्वाद लिया था। बता दें कि गोड्डा में दीपिका पांडेय को टिकट दिये जाने का विरोध बड़े पैमाने पर कांग्रेस संगठन में हो रहा था। विरोध को देखते हुए यह बदलाव किया गया है।

1.40 करोड़ की अफीम के साथ पिता-पुत्र गिरफ्तार

चतरा : गिद्धौर थाना पुलिस ने एक करोड़ 40 लाख की अफीम के साथ तस्करी के आरोपित पिता-पुत्र को गिरफ्तार किया है। आरोपितों के पास से 28 किलो 85 ग्राम अफीम और दो मोबाइल फोन पुलिस ने जब्त किया है। दोनों बाहर से अफीम मंगवाकर और उसे तैयार कर पंजाब, हरियाणा समेत अन्य राज्यों में भेजते थे। आरोपितों में गिद्धौर मेन चौक निवासी महेंद्र दांगी और उसके पुत्र दीपेंद्र दांगी शामिल है।

उक्त जानकारी सिमरिया एसडीपीओ अजय कुमार केसरी ने रविवार को सिमरिया स्थित कार्यालय कक्ष में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर दी। उन्होंने बताया कि चतरा एसपी विकास कुमार पांडेय को गुप्त सूचना मिली थी कि गिद्धौर थाना क्षेत्र के बरली टोला स्थित महेंद्र दांगी के जानवर शेड में भारी मात्रा में अफीम रखा हुआ है, जिसे बाहर भेजने की तैयारी है। सूचना पर गठित छापेमारी टीम ने कार्रवाई करते हुए बरली टोला स्थित जानवर शेड पहुंचकर अफीम बरामद किया। साथ ही पिता-पुत्र को गिरफ्तार कर लिया। इस संबंध में गिद्धौर थाना कांड संख्या 28/24 के तहत एनडीपीएस एक्ट का मामला दर्ज कर दोनों को जेल भेज दिया गया।

जम्मू कश्मीर में आतंकियों का मददगार गिरफ्तार

- पाकिस्तानी पिस्तौल और चीनी ग्रेनेड बरामद

एजेंसी

श्रीनगर : जम्मू-कश्मीर पुलिस ने पुंछ जिले के हरि बुद्ध इलाके के एक स्कूल से आतंकी के मददगार शख्स को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने रविवार को बताया कि आतंकी का मदद करने वाला कमरुद्दीन स्कूल का हेडमास्टर है। उसके पास से एक पाकिस्तानी पिस्तौल और दो चीनी ग्रेनेड मिले हैं। पुलिस ने कहा- सूचना मिलने पर स्पेशल ऑपरेशन ग्रुप के साथ मिलकर सर्च ऑपरेशन चलाया गया था। कमरुद्दीन के ठिकानों पर कई जवान एक साथ पहुंचे। हमें आशंका है कि लोकसभा चुनाव से पहले इलाके में अंशाति फैलाने के लिए कुछ प्लानिंग की जा रही थी। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, जम्मू-कश्मीर पुलिस को पहले से ही हेड मास्टर पर शक था, लेकिन सबूत न होने की वजह से कार्रवाई नहीं की गयी थी। करीब दो महीने से जम्मू-कश्मीर पुलिस हेड मास्टर की हर एक्टिविटी पर नजर रख रही थी।

महावीर जयंती | पीएम मोदी 2550वें निर्वाण समारोह में हुए शामिल, स्मारक टिकट और सिक्का किया जारी

भगवान महावीर के मूल्यों का जश्न मनाता रहेगा देश : पीएम

- पीएम बोले - भगवान महावीर के प्रति प्रतिबद्धता दर्शाती है कि सही दिशा में जा रहा देश

एजेंसी

नई दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को महावीर जयंती के अवसर पर 2550वें भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव का उद्घाटन किया। इस अवसर पर एक स्मारक टिकट और सिक्का भी जारी किया गया। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने कहा कि आज के समय में भगवान महावीर के मूल्यों के प्रति युवाओं की प्रतिबद्धता दशार्ती है कि देश सही दिशा में आगे बढ़ रहा है।

प्रधानमंत्री मोदी ने नई दिल्ली के भारत मंडपम में महावीर जयंती के शुभ अवसर पर 2550वें भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव का उद्घाटन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि हम 2500 वर्षों के बाद भी भगवान महावीर का निर्वाण दिवस मना रहे हैं और उन्हें यकीन है कि देश आने वाले हजारों वर्षों तक भगवान महावीर के मूल्यों का जश्न मनाता रहेगा। दुनिया में जारी कई युद्धों के बीच हमारे तीर्थंकरों की शिक्षाओं ने एक नयी प्रासंगिकता हासिल की है। उन्हीं की शिक्षाओं पर चलते हुए आज भारत विभाजित दुनिया में 'विश्व बंधु' के रूप में अपनी जगह बना रहा है।

कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री ने भगवान महावीर की मूर्ति पर चावल और फूलों की पंखुड़ियों से श्रद्धांजलि अर्पित की और स्कूली बच्चों द्वारा भगवान महावीर स्वामी पर 'वर्तमान में वर्धमान' नामक नृत्य नाटिका की प्रस्तुति देखी। अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत के लिए आधुनिकता शरीर है और आध्यात्मिकता उसकी आत्मा है। नयी पीढ़ी मानती है कि भारत की पहचान उसका गौरव है। भारत इस बात का प्रमाण है कि जब स्वाभिमान की भावना जागृत हो जाती है तो किसी राष्ट्र को रोकना असंभव हो जाता है।

केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने असम के सिलचर में किया रोड शो

एजेंसी

कछार/असम : केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने रविवार को बराक घाटी के कछार जिला मुख्यालय सिलचर में एक रोड शो (विजय संकल्प यात्रा) में भाग लिया। इस दौरान गृहमंत्री के साथ मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा, सिलचर सीट से भाजपा के उम्मीदवार परिमल शुक्लबैद्य के साथ ही कई वरिष्ठ भाजपा के नेता मौजूद थे। गृहमंत्री के रोड शो में बड़ी संख्या में बराक घाटी के लोग उमड़ पड़े। रोड शो के दौरान सिलचर की मुख्य सड़कों पर सभी वर्ग के लोगों ने उनका स्वागत किया। कई स्थानों पर भाजपा नेता अमित शाह के काफिले पर पुष्प की गयी। इस मौके पर मुख्यमंत्री डॉ हिमंत बिस्व सरमा ने कहा कि अमित शाह के रोड शो में जिस तरह से लोगों की भीड़ उमड़ी है, उसे देखते हुए कहा जा सकता है कि बराक घाटी की जनता ने भाजपा उम्मीदवारों को विजयी बनाने का मन बना लिया है।

NEWS IN Gallery

गर्मी में बढ़ी पानी की समस्या, लोग परेशान

सिल्ली : झारखंड में गर्मी का कहर लगातार जारी है और जैसे-जैसे भीषण गर्मी बढ़ती जा रही है वैसे ही पानी की समस्या भी क्षेत्र में बढ़ती जा रही है। इसी क्रम में सिल्ली प्रखंड के नागेडीह पंचायत के अंतर्गत जारागोड़ा के वनधार निवासी संतोष कुमार महतो ने पानी की समस्या की जानकारी देते हुए बताया कि वनधार निवासियों को पीने का पानी के लिए बहुत परेशानी हो रही है। वर्तमान समय में सिंचाई कूप के पानी पीने को मजबूर है। इसकी सूचना जलदाय विभाग को सिल्ली प्रखंड कांग्रेस अध्यक्ष कार्तिक चंद्र महतो ने दी है और अतिशीघ्र वनधार में लगी जलमीनार का अधूरे काम को पूरा करने की मांग की है। जिससे वहां के निवासियों को पीने का पानी का समस्या का समाधान हो सके।

अफीम और डोडा के साथ एक गिरफ्तार

खूंटी : मुरहू थाना पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर शनिवार को मुरहू के जाते मधुटोली गांव निवासी विलियम बोदरा के घर में छापामारी कर घर में छुपा कर रखी गई 960 ग्राम अवैध अफीम और 65 किलोग्राम अफीम डोडा बरामद किया। मौके पर आरोपित विलियम बोदरा को गिरफ्तार कर लिया गया। यह जानकारी रविवार को खूंटी एसडीपीओ वरूण रजक ने दी। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार आरोपित के विरुद्ध मुरहू थाने में एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज कर उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। एसडीपीओ ने बताया कि इससे पूर्व शुक्रवार को लोकसभा चुनाव के मद्देनजर मुरहू थाना क्षेत्र में चलाई गई एंटी क्राइम चेकिंग के दौरान एक बाइक सवार युवक के पास से लगभग 40 लीटर अवैध महुआ देसी शराब बरामद की गई। मौके पर बाइक सवार युवक मुरहू के पसराबेड़ा गांव निवासी पोगरो मुंडा (35) को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। छापामारी अभियान में मुरहू थाना प्रभारी गोडवीन केरकेट्टा, एसआई रोशन कुमार सहित सशस्त्र बल के जवान शामिल थे।

टिकट चेकिंग अभियान में पकड़े गये 1933 यात्री

रामगढ़ : धनबाद मंडल अंतर्गत बरकाकाना रेल जंक्शन पर मजिस्ट्रेट चेकिंग और टिकट चेकिंग अभियान चलाया गया। धनबाद मंडल के द्वारा टीम बनाकर गहन जांच की गयी। इस अभियान में मंडल के धनबाद-पहाड़पुर और गोमो-चंद्रपुर खंड में मजिस्ट्रेट की उपस्थिति में टिकट चेकिंग के साथ- साथ मंडल के विभिन्न खंडों में विशेष टिकट चेकिंग अभियान चलाया गया। इसमें गोमो, कोडरमा, डाल्टनगंज, चोपन, बरकाकाना, सिंगरौली स्टेशनों में गहन टिकट चेकिंग की गयी। वरीय मंडल वाणिज्य प्रबंधक अमरेश कुमार ने बताया कि इस दौरान की गई चेकिंग में 194 टिकट चेकिंग कर्मियों को लगाया गया था। इस विशेष टिकट चेकिंग अभियान के दौरान कुल 1933 यात्रियों को पकड़ा गया एवं उनसे 08 लाख 55 हजार 655 रुपये जुर्माने के रूप में राशि प्राप्त की गयी।

भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. गुरु प्रकाश ने विपक्षियों पर साधा निशाना, कहा –

संविधान की रक्षा की दुहाई देने वाले न्यायपालिका का कर रहे अपमान

स्वदेश संवाददाता

रांची : भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ. गुरु प्रकाश पासवान ने कहा कि झारखंड मुक्ति मोर्चा में हिम्मत था तो न्याय उलगुलान रैली में पिछले पांच वर्ष का रिपोर्ट कार्ड देते। जनता को बताते कि पिछले पांच साल में उन्होंने झारखंड के लिए क्या किया है? पिछले पांच साल में उनके द्वारा किये गये दावे और वादे सब खोखले रहे। उन्होंने पांच लाख नौकरियां देने का वादा किया था। हर साल एक जेपीएससी कराने की बात कही थी। सरकार के मंत्री का कहना है कि अब तक झारखंड में महज जेपीएससी से 400 नीतियां हुई है। उन्होंने कहा कि उनके पास बताने के लिए कुछ नहीं था। यही कारण है कि नकारात्मकता के आधार पर राजनीति कर रहे हैं। वे हरमू रोड स्थित भाजपा प्रदेश मुख्यालय के मीडिया सेंटर में रविवार को संवाददाताओं से बातचीत कर रहे थे। डॉक्टर पासवान ने कहा कि हेमंत सोरेन और अरविंद केजरीवाल का घोटाला सामने आया है। न्यायालय के आदेश पर यह दोनों जेल में है। संविधान की दुहाई देने वाली पार्टियां न्यायपालिका का अपमान कर रही है। शिबू सोरेन और लालू यादव को जेल में कांग्रेस ने डाला था। मंच पर जुटी पार्टियां जेल में डालने वालों से गलबहियां कर रही है। इन पार्टियों में परिवारवाद और तुष्टिकरण ही समानता है। डॉक्टर पासवान ने कहा कि इस रैली में पार्टियों का चरित्र, चेहरा, संस्कार सब प्रदर्शित हो गया है। लोकतंत्र का महापर्व चुनाव होता है। रैली में शर्मसार करने वाला दृश्य सामने आया है। मर्यादित और असभ्य हरकत की गयी। रैली चल रही थी और हिंसा हो रही थी। अपशब्द बोले जा रहे थे। ऐसे में इन लोगों को लोकतंत्र और संविधान पर बोलने का कोई अधिकार नहीं रहा जाता है।

राष्ट्रीय प्रवक्ता ने कहा कि रैली में मंच साझा करने वाली पार्टियां का भी यही हाल है। उन्होंने कहा कि मंच साझा करने वाली पार्टियां झारखंड की निर्माता नहीं क्रेता और विक्रेता रही हैं। आदिवासी हित की बात इनके मुंह शोभा नहीं देती है। देश के सर्वोच्च पद पर आदिवासी बेटी के बैठने के पर भी उनके नेताओं द्वारा लगातार अपशब्द कहा गया। भारतीय जनता पार्टी द्वारा आदिवासी बेटी को दिया गया सम्मान सहन नहीं हुआ। डॉ. पासवान ने कहा कि जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारूख अब्दुल्ला सामाजिक न्याय और संविधान की बात करते हैं। कश्मीर में धारा-370 हटाने के बाद ही वहां आदिवासी, दलित और महिलाओं को सम्मान और हक मिला है। आरक्षण लागू हुआ है। उन्हें आत्ममंथन करना चाहिए। बिहार के तेजस्वी यादव सामाजिक न्याय की बात करते हैं आम जनता इस बात को नहीं भूली है कि लालू प्रसाद यादव ने कहा था कि उनकी लाश पर झारखंड बनेगा। उन्होंने कहा कि यहां ड्यूटी सभी पार्टियों में सिर्फ परिवारवाद है, बिहार में मुख्यमंत्री लालू बनेंगे। अवसर मिलने पर पत्नी राबड़ी देवी नेता प्रतिपक्ष बनेगी। दोनों बेटा उपमुख्यमंत्री बनेंगे। बेटी राज्यसभा जायेगी। इस बार मौका मिला तो फिर बेटी को ही लोकसभा चुनाव लड़ा रहे हैं। झारखंड मुक्ति मोर्चा को देख लें। स्थापना के बाद से अब तक यह पार्टी परिवार से बाहर नहीं निकली है। आम आदमी पार्टी का भी यही स्थिति है।

भाजपा नेतृत्व पर है जनता का भरोसा : पीएन सिंह

स्वदेश संवाददाता

धनबाद : धनबाद सांसद पशुपतिनाथ सिंह ने रविवार को इंडी गठबंधन की उलगुलान न्याय महारैली पर जमकर हमला बोला। उन्होंने झामुमो पर निशाना साधते हुए कहा कि जिस पार्टी का जन्म झारखंड आंदोलन से हुआ वो यदि चाहती तो 1990 के दशक में झारखंड बनवाने का उन्हें मौका मिला था। दरअसल, नरसिम्हा राव सरकार को समर्थन के बदले जेएमएम राज्य के निर्माण के लिए दबाव बना सकती थी लेकिन झामुमो ने सौदा कर लिया।

हाउसिंग कॉलोनी स्थित पार्टी के चुनावी कार्यालय में आयोजित पत्रकार वार्ता में उन्होंने झारखंड सरकार को आड़े हाथों लेते हुए इस सरकार को आदिवासी, किसान, महिला और दलित विरोधी बताया। साथ ही कहा कि अभी भी इंडी गठबंधन में इनका कोई नेता नहीं है। यदि ये लोकसभा चुनाव जीत भी जायें तो इनका प्रधानमंत्री का उम्मीदवार कौन होगा किसी को नहीं पता जबकि भाजपा के पास पीएम मोदी का नेतृत्व है और यही कारण है कि आने वाले समय में जनता बीजेपी के नेतृत्व पर ही भरोसा करेगी।

पीएन सिंह ने भाजपा में जेवीएम के नेताओं को तरजीह मिलने के सवाल पर चुप्पी साध ली। धनबाद लोकसभा सीट से प्रत्याशी ढुल्लू महतो 50 अलग-अलग मामलों में आरोपित रहे हैं, इस सवाल पर उन्होंने कहा कि किसी एक मामले में उन पर दो साल की सजा नहीं हुई है। ऐसे में चुनाव लड़ने को लेकर कोई अवरोध नहीं है और बाकी अन्य जो भी मामले हैं वो सभी कोर्ट में विचाराधीन है। ऐसे में इस पर कोई टीका टिप्पणी नहीं की जा सकती। धनबाद में भाजपा प्रत्याशी को लेकर राजपूतों में नाराजगी के सवाल पर सांसद पीएन सिंह ने कहा कि समाज राजनीति का प्लेटफॉर्म नहीं होता है।

सीआरपीएफ ने शहीद हवलदार एएम भेंगरा को दी श्रद्धांजलि

स्वदेश संवाददाता

खूंटी : लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना बढ़ाने और देश की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देनेवाले बलिदानी नायकों की वीरता और बलिदान का सम्मान करने की कड़ी में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल द्वारा रविवार को आरसी मध्य विद्यालय रोहने तपकरा में बलिदानी हवलदार जीडी एएम भेंगरा के बलिदानी दिवस के अवसर पर एक कार्यक्रम का आयोजन कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। बलिदानी एएम भेंगरा टोपनो 30वीं बटालियन सीआरपीएफ में तैनाती के दौरान आज ही के दिन जम्मू कश्मीर के पुंछ जिला में आतंकवादियों से वीरता पूर्वक लड़ते हुए देश की रक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया था। बलिदानी दिवस पर उप कमांडेंट अंजन कुमार मंडल 94 बटालियन ने बलिदानी की प्रतिमा पर पुष्पमाला अर्पित कर उन्हें नमन किया और उनकी पत्नी अलिशा भेंगरा को सम्मानित करते हुए उपहार भेंट किया और उनकी समस्याओं के बारे में चर्चा की। मौके पर तपकरा थाना प्रभारी श्यामल कुमकर, आरसी मध्य विद्यालय रोहने की प्राचार्या इमलिया गुड़िया सहित अन्य ग्रामवासी और सीआरपीएफ के जवान उपस्थित थे।

झारखंड चैंबर के कस्टोडियन कमिटी की बैठक में कई प्रस्ताव हुए पारित

स्वदेश संवाददाता

रांची : फेडरेशन ऑफ झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के कस्टोडियन कमिटी की बैठक होटल कैपिटल हिल में रविवार को संपन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता पूर्व अध्यक्ष आरके सरावगी ने की। वहीं, बैठक में चैंबर अध्यक्ष किशोर मंत्री और महासचिव परेश गट्टानी ने चैम्बर की वर्तमान गतिविधियों पर चर्चा करते हुए अपनी भावी योजनाओं से अवगत कराया। राज्यस्तर पर चैंबर को सशक्त बनाने के साथ ही क्षेत्रीय उपाध्यक्ष की सहभागिता से जिला चैंबर ऑफ कॉमर्स और सम्बद्ध संस्थाओं को चैंबर के कार्यकलापों में सहभागी बनाने पर भी बैठक में सदस्यों द्वारा बल दिया गया। कहा गया कि जिला स्तर पर दौरों के आयोजन के माध्यम से फेडरेशन की उपस्थिति से व्यापारियों का मनोबल बढ़ता है। चैंबर अध्यक्ष किशोर मंत्री ने कहा कि पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी फेडरेशन द्वारा राज्यस्तर पर गतिविधियों का आयोजन सुनिश्चित किया जा रहा है। इसी क्रम में चैंबर के कार्यकारिणी समिति की आगामी बैठक 27 अप्रैल को नेतरहाट में आयोजित की गयी है जिसमें रांची के अलावा पलामू, गुमला, लोहरदगा के व्यापारी शामिल होंगे। चैंबर भवन बिल्डिंग के रख-रखाव, अव्यवस्थित जनरेटर को सुव्यवस्थित बनाने तथा पूरे परिसर को साफ-सुथरा रखने में कार्रवाई के लिए पूर्व अध्यक्ष ललित केडिया के नेतृत्व में कमिटी का गठन किया गया। भवन में नया लिफ्ट लगाने का प्रस्ताव भी सर्वसम्मति से पारित किया गया, जिसके लिए पूर्व अध्यक्ष पवन शर्मा को अधिकृत किया गया। बैठक में पूर्व अध्यक्ष आरके सरावगी, केके साबू, ललित केडिया, महेश पोद्दार, गिरीश मल्होत्रा, मनोज नरेडी, रंजीत टिबडेवाल, बिकास सिंह, पवन शर्मा, रंजीत गाडोदिया, कुणाल अजमानी, चैंबर अध्यक्ष किशोर मंत्री और महासचिव परेश गट्टानी उपस्थित थे।

आजसू पार्टी के केंद्रीय सचिव बनाये गये आशुतोष तिवारी

स्वदेश संवाददाता

चान्हो : चान्हो प्रखंड के पूर्वी जिला परिषद सदस्य आशुतोष तिवारी, मांडर पश्चिम जिप सदस्य परमेश्वर भगत पार्टी ने केंद्रीय सचिव का पदभार दिया है। सांगठनिक कुशलता और राजनीतिक दूरदर्शिता को देखते हुए आशुतोष तिवारी को आजसू पार्टी ने इस पद पर नियुक्त किया है। केंद्रीय सचिव बनाये जाने के बाद आशुतोष तिवारी ने कहा कि पार्टी ने मुझे इतनी बड़ी जिम्मेदारी दी है उस पर मैं शत-प्रतिशत खरा उतरूंगा। मैं जनता की सेवा शुरू से ही करते आ रहा हूं। अब केंद्रीय सचिव बन जाने के बाद मैं जनता की सेवा और मेहनत से करूंगा। उनके दुख दर्द में शामिल रहूंगा और दूर करने का प्रयास करूंगा। पार्टी और जनता का आभार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि यह जनता का प्यार है कि वह हमसे कदम से कदम मिलाकर चलते हैं। जिसका नतीजा आज आजसू पार्टी ने मुझे इतनी बड़ी जिम्मेदारी दी है। पार्टी से जुड़े हुए महज डेढ़ महीना हुआ है और आजसू पार्टी ने केंद्रीय सचिव के पद पर आशुतोष तिवारी को नियुक्त किया है। तैलिक विकास संघ चोरिया के अध्यक्ष अनिल कुमार साहु ने केंद्रीय सचिव बनाये जाने पर समाज की ओर से आशुतोष को बधाई दी है।

पशुपतिनाथ मंदिर प्राण–प्रतिष्ठा अनुष्ठान में भजन संध्या व श्री राम कथा का आयोजन

स्वदेश संवाददाता

रांची : बिरसा कृषि विश्वविद्यालय परिसर स्थित पशुपतिनाथ मंदिर में प्राण-प्रतिष्ठा अनुष्ठान के दूसरे दिन रविवार को संध्या बेला में भजन संध्या और श्री राम कथा का आयोजन किया गया। श्री पशुपतिनाथ महादेव और माता दुर्गा की आरती की गयी। इसके बाद प्रसिद्ध रामकथा वाचिका संगीता किशोरी ने संगीतमय राम कथा की प्रस्तुति की। आओ मेरे राम जी, पधारो मेरे राम जी, श्री जानकी वल्लभ राम जी, श्री दशरथ नंदन राम जी भजन पर भक्त झूम उठे। इसके बाद उन्होंने बताया कि जब भाग्य का उदय होता है तभी भगवान की कथा श्रवण का सौभाग्य मिलता है। उन्होंने कहा कि श्री राम जी के चरित्र के करोड़ों गुणों में से किसी एक भी गुण को हम यदि अपने जीवन में उतार लें तो हमारा उद्धार हो जायेगा।

उन्होंने कहा कि अस्वस्थ होने पर यदि आप सशरीर प्रभु की कथा में सम्मिलित नहीं हो पाते हैं तो केवल उसका अनुमोदन करने मात्र से ही हम लोग गोपद पार करने की तरह सहजता से भवसागर को पार कर जाते हैं। हम सभी की डोर भगवान के हाथों में हैं। उनके साथ भजन टोली में निर्मला कुमारी, राजकिशोर महतो, बुधन स्वांसी, डमरूधर कुंभकार, भोला कालिंदी, भूषण मिश्रा शामिल थे।

तोरपा में प्रखंड स्तरीय सरहुल महोत्सव का आयोजन, कोचे मुंडा बोले –

परंपरा और पर्यावरण की हर हाल में रक्षा करें

स्वदेश संवाददाता

खूंटी : अखिल भारतीय सरना समाज के तत्वावधान में मंगलवार को तोरपा में प्रखंड स्तरीय सरहुल महोत्सव का आयोजन किया गया। पाहनों की देखरेख में शांति नगर स्थित सरना स्थल पर पूजा-अर्चना की। पूजा अनुष्ठान में भारी संख्या में सरना धर्मावलंबी शामिल हुए। सरहुल महोत्सव में मुख्य अतिथि के तौर पर विधायक कोचे मुंडा उपस्थित थे। मौके पर विधायक ने विभिन्न गांवों से पहुंचे पाहनों को अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया। पूजा अर्चना के बाद प्रखंड मैदान से भव्य शोभायात्रा निकाली गई, जो मेन रोड होते हुए हिल चौक स्थित भगवान बिरसा मुंडा की प्रतिमा तक गई, जहां प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। समारोह को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि कोचे मुंडा ने कहा कि आज दुह्यख-विपत्ति क्यों आ रही है, क्योंकि हम अपनी परंपरा को छोड़ते जा रहे हैं और प्रकृति का संरक्षण नहीं कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमारे पूर्वज ऑक्सीजन देंने वाले पीपल, तुलसी आदि में हर दिन पानी डाला करते थे। इससे पेड़ों को संजीवनी मिलती है, पर हम इस तरक की कई परंपराओं का छोडते जा रहे है। विधायक ने कहा कि यदि हम अपनी परंपरा और प्रकृति का सरंक्षण संवर्द्धन नहीं करेंगे, तो पूरी दुनिया का विनाश तय है।

कार्यक्रम धूमधाम से मना भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक महोत्सव

जीओ और जीने दो का दिया संदेश, निकाली भव्य शोभायात्रा

स्वदेश संवाददाता

रामगढ़ : जिले में भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक महोत्सव धूमधाम के साथ मनाया गया। इस मौके पर श्री दिगंबर जैन मंदिर में पूजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम श्री जी का अभिषेक एवं शांति धारा किया गया। स्वर्ण कलश से जलाभिषेक भगवान महावीर स्वामी की मूलनायाक प्रतिमा, प्राचीन प्रतिमा, पांडुशीला पर विराजमान अष्ट धातु की प्रतिमा पर स्वर्ण कलश से जलाभिषेक किया गया। जलाभिषेक में इंद्रमणि देवी चूड़ीवाल, ललीत चूड़िवाल, विद्याप्रकाश, पदमचंद छाबड़ा, राजेंद्र राजेश चूड़ीवाल शामिल थे। वही, भगवान आदिनाथ स्वामी पर हीरामणि देवी चूड़ीवाल, सुशील चूड़ीवाल परिवार ने जलाभिषेक किया। भगवान पारसनाथ स्वामी पर मांगीलाल और अशोक चूड़ीवाल ने जलाभिषेक किया। शांतिधारा में इंद्रमणि देवी चूड़ीवाल, ललित चूड़ीवाल, राजेंद्र कुमार,राजेश कुमार चूड़ीवाल शामिल थे। महावीर जयंती को लेकर श्री दिगंबर जैन मंदिर से भव्य शोभायात्रा निकाली गयी। शोभायात्रा थाना चौक, गोला रोड, चट्टी बाजार, लोहार टोला, शिवाजी रोड, सुभाष चौक होते हुए पुनः दिगंबर जैन मंदिर पहुंची। शोभा यात्रा में आकर्षक का केंद्र झांकी थी। भगवान महावीर का दिव्य संदेश से आज पूरे शहर में नारा दिया गया। अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है। अतः हमें 'जीओ और जीने दो' के संदेश पर कायम रहना चाहिए। महावीर स्वामी के पंचशील सिद्धांत जिसमें अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, सत्य और अपरिग्रह शामिल हैं। भगवान महावीर का आत्म धर्म जगत की प्रत्येक आत्मा के लिए समान था। उनका कहना था कि हम दूसरों के प्रति भी वही व्यवहार व विचार रखें जो हमें स्वयं को पसंद हों। उन्होंने न केवल इस जगत को मुक्ति का संदेश दिया, अपितु मुक्ति की सरल और सच्ची राह भी बतायी।

शोभायात्रा का सामाजिक संगठनों ने किया स्वागत : शोभायात्रा के दौरान विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक संगठन के द्वारा शोभा यात्रा का पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया। इस दौरान रोटरी रामगढ़ सेंट्रल, श्याम अरदास कीर्तन परिवार, मारवाड़ी धर्मशाला समिति, रानी सती दादी मंदिर, मारवाड़ी युवा मंच और सिख समाज ने शोभा यात्रा में शामिल लोगों पर पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। मौके पर समाज अध्यक्ष मानिक चंद जैन पाटनी, सचिव सचिव नागरमल गंगवाल, कोषाध्यक्ष जंबू जैन, नरेंद्र छाबड़ा, जीवन मल जैन, राजेंद्र चूड़ीवाल, मांगीलाल चूड़ीवाल, आनंद जैन, अजय जैन, राहुल जैन पाटनी सहित कई लोग मौजूद थे।

भंडारे में हजारों श्रद्धालुओं ने ग्रहण किया प्रसाद

स्वदेश संवाददाता

रांची : एमआरएस श्री कृष्ण प्रणामी सेवाधाम ट्रस्ट रांची एवं स्वामी सदानंद प्रणामी चैरिटेबल ट्रस्ट रांची शाखा के सयुंक्त तत्वाधान में पुंदाग स्थित निर्माणाधीन मंगल राधिका सदानंद दिव्यांग सेवाधाम आश्रम परिसर में निःशुल्क 146वां श्री कृष्ण प्रणामी अन्नापूर्णा भंडारा सत्संग, सुमरिन और सेवा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मौके पर लगभग 1300 श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। भंडारा का आयोजन स्व. शैला सर्राफ की पुण्य स्मृति में संस्था के वरिष्ठ सदस्य पुर्णमल सर्राफ उनके पुत्र अनमोल सर्राफ, बेटी-दामाद प्रिया पंकज नेमानी, पायल भाष्कर, हिम्मत सिंहका और उनके परिवार के सौजन्य से आयोजित किया गया था। यजमान पुर्णमल सर्राफ, अनमोल सर्राफ, प्रिया नेमानी सहित अन्य सभी यजमानों को संस्था के अध्यक्ष डुंगरमल अग्रवाल ने अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया। सेवा के महान कार्य में विशेष रूप संस्था के अध्यक्ष डुंगरमल अग्रवाल, उपाध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद अग्रवाल, सचिव मनोज कुमार चौधरी, पुर्णमल सर्राफ, सुशील नारसरिया, अनमोल सर्राफ, ओम प्रकाश सरावगी, नंद किशोर चौधरी सहित संस्था के अन्य सदस्य उपस्थित थे। यह सभी जनकारी संस्था के उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अग्रवाल (राजु अग्रवाल) ने दी।

उलगुलान न्याय महारैली में केंद्र सरकार पर जमकर बरसे आईएनडीआईए के नेता

स्वदेश संवाददाता

रांची : झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) की उलगुलान न्याय महारैली में रविवार को राज्य सरकार के मंत्री आलमगीर आलम ने कहा कि तानाशाही रवैया के तहत एकजुट होकर केन्द्र की सरकारी को सत्ता से बेदखल करना होगा। चुनाव में केंद्र सरकार को सबक सिखायेंगे। झामुमो के विनोद पांडे ने कहा कि यह महारैली जल, जंगल, जमीन लूटने वालों के खिलाफ उलगुलान है। सरकारी संपत्ति को बेचने वाले, बेरोजगारी के खिलाफ, महंगाई जैसी व्यापक तमाम समस्याओं के खिलाफ उलगुलान है, जिससे पूरा देश त्रस्त है। धुर्वा के प्रभात तारा मैदान में आयोजित उलगुलान न्याय महारैली में शिव सेना की सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने कहा कि दिल्ली और झारखंड में दो मुख्यमंत्रियों के खिलाफ ज्यादती हो रही है। झूठे केस कर जिस तरह नेताओं को फंसाने का काम किया जा रहा है। आने वाले चार जून को आईएनडीआईए की सरकार बनेगी।

भाकपा माले के महासचिव दीपांकर भट्टाचार्य ने कहा कि कल्पना सोरेन को उपचुनाव लड़ना है और लोकसभा का चुनाव भी है। अब एक-एक वोट का चोट लगाकर गठबंधन को विजय बनायें। उन्होंने कहा कि दिल्ली और झारखंड के मुख्यमंत्री को जानबूझकर फंसाया गया। इस दमनकारी नीति के खिलाफ अब आवाज उठाने की जरूरत है। पहली चरण में ही भाजपा की हवा निकल गयी है। आगे जैसे-जैसे चुनाव का परिणाम आयेगा 400 पार का नारा की हवा निकाल जायेगी। देश और राज्य में बेरोजगारी की सबसे बड़ी समस्या व्याप्त है। रोजगार के लिए लोग दर-दर भटक रहे हैं। आम आदमी पार्टी के नेता संजय सिंह ने कहा कि मोदी सरकारी ने हमारे सभी नेताओं को जेल में डाल दिया है। झारखंड को जिसने बनाने का काम किया है उसे जेल से डराने की कोशिश मत करना पूरा देश एकजुट है। भाजपा बाबा साहब की संविधान को नहीं मानती। नरेंद्र मोदी की तानाशाही अब समाप्त होगी। मोदी की जमानत जब्त होगी। सभी लोकतंत्र को बचाने के लिए आगे आयें।

महारैली में कई दिग्गज नेता हुए शामिल

झामुमो की धुर्वा स्थित प्रभात तारा मैदान में आयोजित उलगुलान न्याय महारैली में आईएनडीआईए के कई नेता पहुंचे। इनमें प्रमुख रूप से झामुमो सुप्रीमो शिबू सोरेन, मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन, पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल, आप सांसद संजय सिंह और उनकी पत्नी, यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री और समाजवादी पार्टी के प्रमुख नेता अखिलेश यादव, बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव, जम्मू कश्मीर के पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला सहित अन्य कई प्रमुख नेता शामिल हुए।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी नहीं हुए शामिल

कांग्रेस नेता राहुल गांधी फिलहाल बीमार हैं और वे राजधानी रांची में रविवार को आयोजित आईएनडीआईए की 'उलगुलान न्याय रैली' में शामिल नहीं हुए। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव जयराम रमेश ने एक्स पोस्ट में कहा - राहुल गांधी सतना और रांची में चुनाव प्रचार के लिए पूरी तरह से तैयार थे, लेकिन वह अचानक बीमार हो गये हैं और फिलहाल नई दिल्ली से बाहर नहीं जा सकते हैं।

केंद्रीय मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने साधा निशाना, कहा –

जमीन पर नहीं है विपक्ष

- **अन्नपूर्णा देवी बोलीं - आईएनडीआईए गठबंधन वैसे लोगों की जमात है, जो जेल में हैं व बेल पर हैं**

स्वदेश संवाददाता

रांची : आईएनडीआईए गठबंधन की ओर से आयोजित उलगुलान रैली पर केंद्रीय मंत्री और कोडरमा से भाजपा उम्मीदवार अन्नपूर्णा देवी ने विपक्ष पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि विपक्ष जमीन पर कहीं भी दिख नहीं रहा है। भगवान बिरसा मुंडा ने अंग्रेजों से लोहा लेने के लिए और आदिवासियों की जमीन बचाने के लिए झारखंड में उलगुलान का ऐलान किया है, जबकि आदिवासियों की जमीन हड़पने वाले लोग आज उलगुलान रैली आयोजित कर रहे हैं।

अन्नपूर्णा देवी ने कहा कि आईएनडीआईए गठबंधन वैसे लोगों की जमात है, जो जेल में हैं व बेल पर हैं। आईएनडीआईए गठबंधन विकास विरोधी और सनातन विरोधी के साथ झारखंड विरोधी भी है। अन्नपूर्णा देवी ने कहा कि विपक्ष विकास पुरुष पीएम नरेंद्र मोदी से डरा-सहमा नजर आ रहा है। देश की जनता विपक्ष के कारनामों से पूरी तरह वाकिफ है, इसलिए इनकी उलगुलान रैली फ्लॉप होने वाली है। भाजपा इसबार अपने 400 के आंकड़े को जरूर पूरा करेगी।

चेहरे पर हेमंत सोरेन का मास्क लगाकर महारैली में पहुंचे लोग

आईएनडीआईए की धुर्वा स्थित प्रभात तारा मैदान में आयोजित उलगुलान न्याय महारैली में राज्यभर से कार्यकर्ताओं का जुटान हुआ। राज्य के अलावा दूसरे राज्यों से भी गठबंधन के लोग महारैली में पहुंचे। इस दौरान लोगों ने केंद्र सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। ज्यादातर लोग चेहरे पर हेमंत सोरेन का मास्क लगाकर पहुंचे थे। धुर्वा एचईसी परिसर से लेकर रैली में पहुंचने वाले लोगों की बसें, कार और बाइक का हुजूम दिख रहा था। महारैली में मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन के अलावा बड़ी संख्या में गठबंधन के सदस्य मौजूद थे।

गठबंधन की रैली में कांग्रेस व राजद कार्यकर्ता आपस में भिड़े

रांची : आईएनडीआईए गठबंधन की ओर से रांची में आयोजित न्याय उलगुलान महारैली में राष्ट्रीय जनता दल व कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के बीच भिड़ंत हो गयी। इस दौरान कुछ लोग घायल हो गये। बताया जा रहा है कि जब गठबंधन के नेता लोगों को संबोधित कर रहे थे। उसी दौरान किसी बात को लेकर राष्ट्रीय जनता दल व कांग्रेस के कार्यकर्ताओं के बीच भिड़ंत हो गयी। दोनों दलों के कार्यकर्ता एक-दूसरे पर कुर्सी, डंडा आदि लेकर टूट पड़े। वहां मौजूद लोगों व सुरक्षाकर्मियों ने बीच-बचाव की कोशिश की, लेकिन तब तक कुछ लोग चोटिल हो गये थे। इससे रैली में अफरा-तफरी मच गयी। लोग इधर-उधर भागने लगे। इस दौरान कई लोग जमीन पर गिर पड़े। खबरों के मुताबिक, राजद के कार्यकर्ताओं की चतरा से आईएनडीआईए गठबंधन में शामिल कांग्रेस उम्मीदवार केएन त्रिपाठी के गुट से भिड़ंत हुई है। इस भिड़ंत में केएन त्रिपाठी के भाई गोपाल त्रिपाठी का सिर फट गया। उन्होंने कहा कि रैली में 10-15 बाहरी लोग आये थे। उन्हीं लोगों ने अव्यवस्था फैलाने की कोशिश की। जानबूझकर हमला किया गया। जिस समय यह घटना हुई, उस समय मंच पर इंडिया ब्लॉक के बड़े नेता मौजूद थे।

बिरसा मुंडा केंद्रीय कारागार में लगा जेल अदालत, दो कैदी रिहा

स्वदेश संवाददाता

रांची : झालसा के निर्देश पर जिला विधिक सेवा प्राधिकार द्वारा रविवार को बिरसा मुंडा केंद्रीय कारा होटवार जेल अदालत का आयोजन किया गया। यह आयोजन मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी कृष्णकांत मिश्रा की अध्यक्षता में किया गया। इस दौरान बिरसा मुंडा केन्द्रीय कारा होटवार में बंद नौ बंदियों का आवेदन जेल अदालत के लिए समर्पित किया गया था जिसमें दो बंदी को जेल अदालत का लाभ देते हुए रिहा किया गया। रिहा हुए कैदियों में आनंद कच्छप और धनंजय तिर्की शामिल है।

ब्राउन शुगर की खरीद-बिक्री कर रहा युवक गिरफ्तार

रांची : ब्राउन शुगर की खरीद बिक्री कर रहे युवक को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। रविवार को कोतवाली डीएसपी प्रकाश सोए के नेतृत्व में पुलिस टीम ने कार्रवाई करते हुए सुखदेवनगर थाना क्षेत्र स्थित इरगु टोली से प्रदीप कुमार को गिरफ्तार किया है। उसके पास से पुलिस ने सात ग्राम ब्राउन शुगर समेत कई अन्य सामान बरामद किया है। कोतवाली डीएसपी प्रकाश सोए के नेतृत्व में पिछले कई दिनों से ब्राउन शुगर के कारोबार के खिलाफ लगातार अभियान चलाया जा रहा है।

स्कूल ऑफ पॉलिटिक्स संस्थान के इलेक्शन ऑन व्हील्स कार्यक्रम में युवाओं से संवाद कार्यक्रम आयोजित

पढ़ाई, दवाई और न्याय हमारा मूल एजेंडा : सुदेश

स्वदेश संवाददाता

रांची : स्कूल ऑफ पॉलिटिक्स संस्थान के इलेक्शन ऑन व्हील्स कार्यक्रम के तहत देश के अलग-अलग राज्यों से होकर रांची पहुंचे युवाओं ने हरमू स्थित आजसू पार्टी के केंद्रीय कार्यालय में रविवार को आजसू पार्टी अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो से मुलाकात की। इस दौरान सुदेश महतो ने राज्य को विकसित बनाने को लेकर रोडमैप और झारखंड के गौरवशाली इतिहास पर विस्तृत चर्चा की। भारत के 18 राज्यों से आये विभिन्न प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थाओं से जुड़े युवा प्रोफेशनल्स से बातचीत के इस सत्र में युवाओं ने राज्य के राजनीतिक परिदृश्य, पार्टी के गठन के साथ साथ राजनीति और झारखंड आंदोलन से जुड़े विषयों पर सुदेश महतो से सवाल पूछे, जिसका उन्होंने बारी-बारी से जवाब दिया।

सुदेश महतो ने अपने राजनीतिक जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अस्तित्व, भाषा, विचार, कला व संस्कृति की हिफाजत के लिए अलग राज्य की लड़ाई में शामिल हुआ। फिर जनता के विश्वास के साथ चुनाव में जीत हासिल की। इसके साथ उन्होंने अपने राजनीतिक सफर और संघर्ष के विभिन्न पहलुओं से युवाओं को अवगत कराते हुए इस बात पर जोर दिया कि इसके केंद्र में रहा जनसेवा। महतो ने कहा कि राजनीति को एक दिन में नहीं समझा जा सकता है। यह सभी चीजों का केंद्र है। जिज्ञासा से राजनीतिक स्तर में अंतर लाना संभव है। विकास के मानकों पर झारखंड को देश में टॉप फाइव में शुमार करने की दिशा में काम करना है। राज्य में चिमनी के धुएं से ही सिर्फ रोजगार मिलेगा यह जरूरी नहीं है। यहां पर्यटन के क्षेत्र में असीमित संभावनाएं है। अपने लोगों के पलायन को रोकना, रोजगार के अन्य विकल्प तैयार करना, एक मौसम नहीं साल भार खेती हो ऐसी हमारी तैयारी है। राज्य को उसकी हैसियत पर खड़ा करना हमारा लक्ष्य। पढ़ाई, दवाई और न्याय हमारा मूल एजेंडा है। सिल्ली विधानसभा क्षेत्र में स्टूडेंट एक्सप्रेस, उड़ान कोचिंग, स्मार्ट स्कूल, सिल्ली स्टेडियम, आधारभूत संरचनाओं की मजबूती जैसी अन्य कई विकास कार्यों की जानकारी इलेक्शन ऑन व्हील्स के सभी प्रतिभागियों को दी गई। सिल्ली के विकास को देखने के लिए सुदेश महतो ने सभी युवाओं को सिल्ली आने का निमंत्रण दिया।

गठबंधन के पास ना कोई विकल्प और ना ही संकल्प

आजसू पार्टी के अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो ने कहा कि इंडी गठबंधन के पास ना कोई मोदी का विकल्प है और ना ही राष्ट्र के लिए संकल्प। सत्तारूढ़ जेएमएम और कांग्रेस का एक ही ध्येय है तुष्टीकरण की राजनीति करना। जेएमएम का तो सारा समय और ध्यान प्रदेश में अपने परिवार को स्थापित करने और लिए झारखंड को ही विस्थापित बनाने में लगा हुआ है। सुदेश कुमार महतो रविवार को डिमना लेक एरिया, जमशेदपुर में आयोजित जमशेदपुर लोकसभा स्तरीय ग्राम प्रभारी सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पांच लाख नौकरी का वादा करने वाली सरकार 10 हजार नौकरियों का भी आंकड़ा नहीं पार कर पाई है। स्थानीय, विस्थापित और नियोजन नीति का वादा कर सत्ता में बैठने वाले लोगों ने अपने वादों को भुला दिया। राज्य की जनता को साढ़े चार साल न कोई नीति मिली न ही नियोजन मिला।

मतदाता जागरुकता | मतदाताओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए मिनी मैराथन का आयोजन

रन फॉर डेमोक्रेसी में रांची ने लगायी दौड़

- **रन फॉर डेमोक्रेसी के बाद डीजे इवेंट का भी किया गया आयोजन**
- **मतदाता जागरुकता से संबंधित गीतों और धुनों पर जमकर झूमे युवा**

स्वदेश संवाददाता

रांची : लोकसभा चुनाव में मतदाताओं की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से स्वीप के तहत रविवार को रन फॉर डेमोक्रेसी (मिनी मैराथन) का आयोजन किया गया। रांची के मोरहाबादी मैदान से मिनी मैराथन की शुरुआत हुई। रन फॉर डेमोक्रेसी के बाद मोरहाबादी मैदान में डीजे इवेंट का भी आयोजन किया गया, जिसमें मतदाता जागरुकता से संबंधित गीतों एवं धुनों पर युवा जमकर झूमे।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के रवि कुमार, अपर मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी संदीप सिंह, पुलिस उप महानिरीक्षक अनूप बिरथरे, जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त राहुल कुमार सिन्हा, वरीय पुलिस अधीक्षक चंदन सिन्हा, नोडल पदाधिकारी स्वीप सह उपविकास आयुक्त दिनेश कुमार यादव ने संयुक्त रूप से झंडी दिखाकर मिनी मैराथन की शुरुआत की। मिनी मैराथन में मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के रवि कुमार के साथ उपस्थित सभी पदाधिकारियों ने भी दौड़ लगायी। उन्होंने मैराथन के माध्यम से लोगों को जागरूक करते हुए संदेश दिया कि मतदान करने जरूर जायें। मतदान करने से देश मजबूत होता है और लोकतंत्र के इस महापर्व में हमारी हिस्सेदारी सुनिश्चित होती है।

पूरे परिवार के साथ लोकतंत्र के महापर्व में उत्साह के साथ निभायें अपनी भागीदारी

के. रवि कुमार ने कहा कि हम सभी एक दूसरे को मतदान के प्रति जागरूक करें। पूरे परिवार के साथ लोकतंत्र के महापर्व में उत्साह के साथ अपनी भागीदारी निभायें। उन्होंने कहा कि मतदान के दिन सरकारी तथा निजी संस्थानों में सवैतनिक अवकाश भी रहेगा। इसका सार्थक उपयोग करना हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी भी बनती है। मैराथन में शामिल युवाओं ने मोरहाबादी मैदान के चारों ओर तीन चक्कर लगाया। पुरुष वर्ग में पवन सिंह ने प्रथम, विकेश कुमार ने द्वितीय तथा अनूप उरांव ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। महिला वर्ग में ममता कुमारी को पहला, नीता कुमारी को दूसरा तथा शीतल कुमारी को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। विजेताओं को मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार, एडिशनल सीईओ संदीप सिंह, डीआईजी अनूप बिरथरे ने पुरस्कृत किया।

इतिहास से सबक लेकर हम बना सकते हैं बेहतर भविष्य : हरिवंश

स्वदेश संवाददाता

रांची : रांची के प्रेस क्लब में रविवार को बसंत हेतमसरिया की पुस्तक 'विश्वयुद्ध और बढ़ते अलगाव के साये में स्वतंत्रता आंदोलन' का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में राजसभा के उप सभापति हरिवंश थे। मौके पर उन्होंने कहा कि आज दुनिया में सबसे बड़ी होड़ टेक्नोलॉजी को लेकर है। मॉडर्न टेक्नोलॉजी आज आपको कंट्रोल कर रही है। जब दुनिया तोप से लड़ रही थी, तब आपके हाथ में तलवार थी, नतीजतन आप युद्ध हार गये। इतिहास से सबक लेकर हम बेहतर भविष्य बना सकते हैं। पुस्तक की तारीफ करते हुए हरिवंश ने कहा कि यह पुस्तक आपका साक्षात्कार इतिहास से करवाती है। यदि हम इतिहास से सबक नहीं लेते तो हमारा भविष्य भी संकट में पड़ता है। हरिवंश ने कहा कि रामगढ़ कांग्रेस अधिवेशन में शामिल बड़े नेताओं ने 1940 में जिन मुद्दों पर चिंता जतायी थी, कालांतर में वो सभी कुछ घटित हुआ और सबलोग देखते रह गये। उन्होंने कहा कि गांधी जी चाहते थे कि वे एक अनुशासित कांग्रेस बनायें, जो उसूलों पर चले, लेकिन वे बना नहीं पाये। उन्होंने कहा कि पहले नेताओं को अपनी बात सुनाने के लिए कार्यकर्ताओं को बुलाने की जरुरत नहीं पड़ती थी, लोग स्वतः अपने नेताओं को सुनने चले आते थे, लेकिन आज परिस्थितियां बदल चुकी है।

NEWS IN Gallery

युवक ने भगवान की प्रतिमा को किया खंडित, गिरफ्तार

रांची : जगन्नाथपुर थाना क्षेत्र के मौसीबाड़ी गोलचक्कर के पास शनिवार देर रात एक युवक ने भगवान हनुमान की प्रतिमा को खंडित कर दिया। हालांकि, इस दौरान स्थानीय लोगों को इसकी सूचना मिल गयी। इसके बाद लोगों ने इसकी जानकारी पुलिस को दी। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और स्थानीय लोगों की सहयोग से आरोपित युवक को गिरफ्तार कर लिया। इस मामले को लेकर मंदिर के अध्यक्ष रामप्रवेश यादव ने जगन्नाथपुर थाना में लिखित शिकायत दर्ज करवायी है। साथ ही आरोपी युवक के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की मांग की है। थाना प्रभारी हरदेव प्रसाद ने बताया कि युवक मानसिक रूप से बीमार है। उसे पकड़ लिया गया है। उसे पहले रिनपास भेजा जायेगा। इसके बाद आगे की कार्रवाई की जायेगी।

पीएम पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाले नेता ने मांगी माफी

रांची/साहेबगंज : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने वाले झारखंड मुक्ति मोर्चा के नेता नजरूल इस्लाम ने माफी मांग ली है। उन्होंने सदर एसडीओ की कोर्ट में पेश होकर लिखित माफीनामा पेश किया। नजरूल के खिलाफ साहिबगंज नगर थाने में बीडीओ सुबोध कुमार ने आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन करने सहित अन्य मामलों में केस दर्ज कराया था। इसके बाद एसडीओ कोर्ट ने उन्हें नोटिस भेजा था। नजरूल इस्लाम शनिवार को अपने समर्थकों के साथ नगर थाना पहुंचे और बयान दर्ज कराया। इसके बाद वह साहिबगंज सदर एसडीओ कोर्ट में हाजिर होकर लिखित रूप से अपना पक्ष रखा। नजरूल इस्लाम झामुमो की केंद्रीय कमेटी का सदस्य हैं। वह पार्टी के जिलाध्यक्ष भी रह चुके हैं।

मोबाइल टावर का आठ लाख का मोडम चोरी करते एक गिरफ्तार

रांची : रांची के मांडर थाना पुलिस ने एयरटेल कंपनी के मोबाइल टावर पर लगने वाला 3जी और 4जी हाई स्पीड मोडम को चोरी करने के मामले में गणेश कुमार को गिरफ्तार किया है। आरोपित बिहार के पटना का रहने वाला है। इसके पास से आठ लाख कीमत का 3जी और 4जी का हाई स्पीड मोडम एवं तीन पीस रिंच बरामद किया गया है। मांडर थाना प्रभारी राहुल ने रविवार को बताया कि काफी दिनों से सूचना मिल रही थी कि रांची क्षेत्र में अज्ञात चोरों के जरिये एयरटेल और अन्य टावर से 4जी हाई स्पीड मोडम की चोरी कर ली जा रही है। सूचना के बाद वरीय पदाधिकारी के निर्देशानुसार अज्ञात चारों को पकड़ने के लिए एक टीम का गठन किया गया। टीम को अनुसंधान के क्रम में सूचना मिली कि मांडर थाना अंतर्गत महुआजाड़ी में भी टावर से 4जी हाई स्पीड मोडम की चोरी की जा रही है। त्वरित कार्रवाई करते हुए टीम उक्त स्थान पर पहुंची। वहां पहुंची टीम ने एक व्यक्ति को टावर से 4जी हाई स्पीड मोडम की चोरी करते हुए पाया।

NEWS IN Gallery

ट्रेन की चपेट में आने से युवक की मौत

कोडरमा : ट्रेन की चपेट में आने से रविवार को कोडरमा के युवक की मौत हो गयी। जानकारी के अनुसार, कोडरमा दूधीमाटी निवासी अमित कुमार (42) क्षिप्रा एक्सप्रेस 22912 से कोलकाता से कोडरमा आ रहा था। गाड़ी के एसी कोच से उतरने के दौरान फिसलकर प्लेटफॉर्म के नीचे गिर जाने से वह ट्रेन की चपेट में आ गया, जिससे उसकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई। घटना के बाद मृतक के भाई सुमित कुमार ने आकर शिनाख्त की, जिसके बाद शव को अंत्यपरीक्षण के लिए सदर अस्पताल भेजा गया।

कोयल नदी में डूबने से छात्र की मौत

लोहरदगा : किस्को थाना क्षेत्र के नारी नवाडीह गांव निवासी 16 वर्षीय देवांश कुमार की कोयल नदी के गहरे पानी में डूबने से मौत हो गई। देवांश कुमार किस्को मोड़ स्थित ट्यूशन सेंटर में ट्यूशन पढ़ने गया था। ट्यूशन के बाद मित्रों के साथ कोयल नदी नहाने चला गया, जहां गहरे पानी में डूब गया। देवांश के दोस्तों ने पहले उसे बचाने का प्रयास किया लेकिन जब सफलता नहीं मिली तब लोगों को सूचना दी। लोगों की सूचना पर सदर पुलिस मत्स्य समिति के लोगों के साथ संपर्क स्थापित करते हुए घटनास्थल पर पहुंची। दो घंटे कड़ी मशक्कत के बाद मत्स्य समिति के लोगों ने देवांश को पानी से निकालकर सदर अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। देवांश कुमार लिवेंस एकेडमी में दसवीं क्लास का छात्र था। पोस्टमार्टम के बाद शव उसके परिजनों को सौंप दिया गया।

पश्चिम सिंहभूम के आधा दर्जन गांवों में नक्सलियों ने की पोस्टरबाजी

पश्चिम सिंहभूम : जिले के नक्सल प्रभावित मनोहरपुर प्रखंड के जराईकेला थाना क्षेत्र में नक्सलियों ने पोस्टरबाजी कर लोकसभा चुनाव का विरोध किया है। नक्सलियों ने रवांगदा, डोमलोई, पंचपाहिया और जराईकेला इलाके में कई जगहों पर पोस्टरबाजी की है। जिले में सिंहभूम संसदीय सीट पर लोकसभा चुनाव की प्रक्रिया जारी है। प्रत्याशी नामांकन करने लगे हैं। 13 मई को मतदान होगा। इसको लेकर लगातार पुलिस नक्सल प्रभावित इलाकों में लगातार सघन छापेमारी अभियान चला रही है, ताकि चुनाव शांतिपूर्ण माहौल में सम्पन्न हो। पुलिस ने पोस्टर को जब्त कर मामले की जांच कर रही है। हालांकि, जिस तरह पश्चिमी सिंहभूम जिले में पुलिस का दबाव बढ़ा है, उससे नक्सली बैकफुट पर नजर आ रहे हैं। हाल ही के दिनों में पुलिस को नक्सलियों के विरुद्ध कई सफलता मिली है।

दुर्घटनाग्रस्त होने से बाल-बाल बची लुधियाना-धनबाद एक्सप्रेस

ब्रेक बाइंडिंग होने के कारण ट्रेन के पहियों में लगी आग

स्वदेश संवाददाता

कोडरमा : लुधियाना धनबाद एक्सप्रेस (13308) ट्रेन रविवार की सुबह ब्रेक बाइंडिंग के बाद बड़ी दुर्घटना से बच गई। रविवार सुबह 7:15 बजे गाड़ी के कोडरमा जिला अंतर्गत परसाबाद रेलवे स्टेशन पार करने के बाद रेलवे कर्मी की नजर इंजन से सटे बोगी के नीचे पहिया के पास से धुआं और आग की निकलती लपटों पर पड़ी। इसकी सूचना तुरंत चौबे रेलवे स्टेशन को दी गई। वहां ड्यूटी पर तैनात स्टेशन मास्टर ने गाड़ी को चौबे स्टेशन पर आपातकालीन स्थिति में सुबह 7:21 बजे रुकवाया। इसके बाद रेलवे कर्मियों की मदद व अग्निशमन यंत्र के माध्यम से धधकती आग पर काबू पाया गया। उस बोगी को तुरंत दुरुस्त किया गया, जिसका पहिया से ब्रेक सटा था। इसके बाद गाड़ी को अगले स्टेशन के लिए खोला गया। यदि समय रहते आग पर काबू नहीं पाया जाता तो बड़ी घटना हो सकती थी। यात्रियों के अनुसार, परसाबाद रेलवे स्टेशन के बाद अगले डिब्बे से काफी तेज घर्षण जैसी आवाज आने लगी और धुएं की लपटे भी पिछली बोगी तक पहुंच रही थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि ट्रेन का कोई हिस्सा अब-तब टूटने की कगार पर है। जैसे ही चौबे रेलवे स्टेशन पर ट्रेन रुकी वैसे ही सभी रेलयात्री ट्रेन के पिछले डिब्बे से कूद कर बाहर निकले। उस समय ट्रेन के लगभग पांच पहियों के पास से जोरदार आग की लपटें दिखाई दे रही थी। इस बाबत आरपीएफ सहायक उप निरीक्षक अरुण कुमार ने बताया कि चलती गाड़ी में कभी-कभी ब्रेक बाइंडिंग हो जाती है। इस कारण पहिया के पास से धुआं निकलने लगता है। उन्होंने बताया कि स्थिति सामान्य होने के बाद गाड़ी को दोबारा प्रस्थान करवाया गया।

टायर गोदाम में लगी आग, लाखों का नुकसान

गिरिडीह : जिले के पचंबा थाने के शांतिनगर में रविवार की दोपहर संकट मोचन टायर गोदाम में असामाजिक तत्वों ने आग लगा दी। आग लगने से इलाके में कुछ देर के लिए अफरा-तफरी का माहौल उत्पन्न हो गया। पूरा इलाका धुआं-धुआं हो गया। सूचना पर पहुंची फायर ब्रिगेड की टीम ने काफी मेहनत के बाद आग बुझाया। बताया गया कि टायर का यह गोदाम कृषि बाजार समिति के समीप स्थित एक खाली पड़े मैदान में बनाया गया है, जहां काफी संख्या में टायर जमा कर रखा गया था। स्थानीय लोगों का मानना है कि किसी शरारती तत्वों ने आग लगाया है। आग धीरे-धीरे पूरे गोदाम में फैल गयी। आसपास के निवासी घरों से बाहर निकल गये। इस घटना में दो से तीन लाख के नुकसान का अनुमान है।

लोहरदगा में मतदाता जागरुकता के लिए दौड़ का आयोजन

स्वदेश संवाददाता

लोहरदगा : लोहरदगा लोकसभा क्षेत्र में 13 मई को होने वाले मतदान में अधिक से अधिक मतदाताओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए रविवार को स्वीप कार्यक्रम के तहत रन फॉर वोटिंग अवेयरनेस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रतिभागियों को हरी झंडी दिखाकर उप विकास आयुक्त दिलीप प्रताप सिंह शेखावत ने रवाना किया। इस मौके पर उप विकास आयुक्त ने इस बार लोकसभा चुनाव में 90 प्रतिशत से अधिक मतदान के लिए लोगों से अपील की। साथ ही कहा कि बिना किसी प्रभाव में आये नैतिक मतदान करें और लोकतंत्र के इस महापर्व को साथ मिलजुल कर मनायें। जिला प्रशासन द्वारा निर्वाचन को सफल बनाने के लिए पूरी तैयारी की गई है। मतदान से जुड़े सभी पदाधिकारियों व कर्मियों को प्रशिक्षण दिया गया है। जिला प्रशासन के इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। सभी प्रतिभागियों ने पूरे उत्साह के साथ इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। कार्यक्रम के अंत में सभी विजेता प्रतिभागियों को उप विकास आयुक्त व अन्य पदाधिकारियों ने मेडल व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में सभी उपस्थित लोगों को मतदाता शपथ दिलायी गयी।

गढ़वा में हाथियों ने ग्रामीण को कुचलकर मार डाला, लोगों में आक्रोश

गढ़वा : झारखंड में गढ़वा जिले के चिनियां वन क्षेत्र मे एक बार फिर जंगली हाथियों का आतंक देखने को मिला है। चिनियां थाना क्षेत्र के चिरका टोला मे एक दर्जन से अधिक हाथियों का झुण्ड अचानक आ धमका, जिसके बाद गांव मे अफरा-तफरी मच गई। लोग जान बचा कर भागने लगे तभी महुआ चुन रहे दशरथ सिंह नामक एक व्यक्ति हाथी के सामने आ गया जिसे हाथी ने अपने पैरों तले कुचल दिया। घटना की जानकारी जैसे ही वन विभाग और पुलिस को लगी, तत्काल दोनों टीम घटनास्थल पर पहुंच कर शव को अपने कब्जे मे लेते हुए पोस्ट मॉर्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया। मौके पर ग्रामीणों ने वन विभाग के प्रति आक्रोश जताते हुए कहा कि पिछले चार माह से हाथी इस इलाके मे तबाही मचाये हुए है, लेकिन इसको देखने वाला कोई नहीं। कभी आदमी को मार रहा है तो कभी घर गिरा रहा है तो कभी फसलों को नुकसान पंहुचा रहा है, हमलोग बेबस हो गए हैं, कोई सुनने वाला नहीं है। वहीं वन विभाग ने तत्काल सहायता के रूप मे दस हजार रूपए की आर्थिक मदद की, जबकि मुआवजा के लिए आश्वासन दिया, लेकिन हाथी भगाने पर चुप्पी साध गए।

मतदाता जागरूकता वैन को उपायुक्त ने हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

स्वदेश संवाददाता

चतरा : लोकसभा आम चुनाव 2024 के तहत चतरा-4 लोकसभा क्षेत्र के लिए मतदान की तिथि 20 मई 2024 को निर्धारित है। इस दौरान लोगों को अपने मताधिकार का प्रयोग करने के प्रति जागरूक करने को लेकर जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त चतरा रमेश घोलप के निर्देश पर स्वीप कोषांग द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में चतरा जिले के मतदाताओं को अपने मताधिकार का प्रयोग करने के प्रति रचनात्मक तरीके से जागरूक करने तथा लोगों को उनके मतदान के महत्व को समझाने के लिए सूचना एवं जन सम्पर्क निदेशालय झारखंड रांची से प्राप्त वर्चुअल वैन को समारहणालय परिसर से जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। मौके पर उपायुक्त ने वर्चुअल रियलिटी वैन के माध्यम से लोगों को जागरूक करने के लिए तैयार किये गये कंटेंट का भी जायजा लिया। वहीं, उन्होंने स्वयं भी वर्चुअल रियलिटी यंत्र का प्रयोग कर आवश्यक दिशा-निर्देश दिया। इस दौरान उप विकास आयुक्त, अपर समाहर्ता, अनुमंडल पदाधिकारी चतरा व सिमरिया, जिला जन सम्पर्क पदाधिकारी समेत अन्य पदाधिकारी व कर्मी उपस्थित थे।

बोकारो स्टील लिमिटेड को 250 एमवीए अतिरिक्त बिजली उपलब्ध करायेगा डीवीसी

स्वदेश संवाददाता

बोकारो : चंद्रपुरा भारतीय इस्पात प्राधिकार लिमिटेड (सेल) की इकाई बोकारो स्टील लिमिटेड (बीएसएल) को दामोदर घाटी निगम (डीवीसी) 250 एमवीए की अतिरिक्त बिजली की आपूर्ति करेगा। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि इस संबंध में डीवीसी और बीएसएल के बीच एक समझौता हो गया है और शनिवार को बोकारो स्टील सिटी में उनके बीच एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किया गया है। वर्तमान में डीवीसी बीएसएल, सेल को 220 एमवीए बिजली की आपूर्ति करता है और एमओयू के अनुसार, अतिरिक्त आपूर्ति 2027-28 से शुरू होगी। जानकारी के अनुसार, उक्त समझौता बीएसएल के आसन्न विस्तार के कारण अतिरिक्त बिजली की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए किया गया है। डीवीसी विभिन्न प्रतिष्ठानों में स्थापित की जा रही अपनी आगामी ब्राउन फील्ड थर्मल पावर परियोजनाओं से बढ़ी हुई मांग को पूरा करेगा। डीवीसी की ओर से सदस्य (वित्त) अरूप सरकार, कार्यकारी निदेशक (वाणिज्यिक) संजीव श्रीवास्तव, ईडी (सिस्टम) डीके सिंह, ईडी (वित्त) जॉयदीप मुखर्जी इस अवसर पर उपस्थित थे। जबकि बीएसएल की ओर से ईडी (वर्क्स), ईडी (परियोजनाएं) और ईडी (वित्त) के अलावा दोनों पक्षों के उच्च अधिकारी उपस्थित थे।

लोस प्रत्याशी अनुपमा सिंह ने चलाया जनसंपर्क अभियान

स्वदेश संवाददाता

बोकारो : धनबाद लोकसभा से कांग्रेस प्रत्याशी अनुपमा सिंह और बेरमो के कांग्रेस विधायक कुमार जय मंगल सिंह लगातार लोगों से मिलकर आतंक के खिलाफ वोट देने की अपील कर रहे हैं। बोकारो के लोहांचल में प्रबुद्ध लोगों के साथ प्रत्याशी और उनके पति ने बैठक कर लोगों से वोट देने की अपील की। इस दौरान कुमार जय मंगल सिंह और उनकी पत्नी ने आतंक के खिलाफ बोकारो को उठ खड़े होने की अपील की। लगातार परिवारवाद का आरोप लगाये जाने पर कांग्रेस विधायक कुमार जय मंगल सिंह ने कहा कि परिवारवाद सिर्फ कांग्रेस में ही नहीं बीजेपी में भी है, लेकिन परिवारवाद हमारे लिए सेवावाद है। क्योंकि हमारे संस्कार ऐसे हैं। लोगों को सेवा करना ही हमारा धर्म है। उन्होंने कहा कि राजनीति करनेवाले के घरवाले राजनीति नहीं करेंगे तो और क्या करेंगे। यह लोगों को समझना होगा और हम स्वच्छ राजनीति करने के लिए धनबाद में आये हैं।

धनबाद में साढ़े आठ किलो गांजा के साथ एक तस्कर गिरफ्तार

धनबाद : धनबाद की महुदा थाना पुलिस ने गुप्त सूचना के आधार पर साढ़े आठ किलो गांजा के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। जबकि तस्कर सहयोगी मौके से फरार होने सफल रहा। इस संबंध में रविवार को अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी आनंद ज्योति मिंज ने प्रेस कांफ्रेंस में बताया कि वरीय पुलिस अधीक्षक को गुप्त सूचना मिली थी की शनिवार की देर रात दो तस्कर मोटरसाइकिल से गाजा की तस्करी के उद्देश्य से महुदा थाना की तरफ आ रहे है। वरीय पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी बाघमारा के नेतृत्व में एक छापामारी दल का गठन कर कतरी नदी पर कपुरिया की तरफ से आने वाले सभी वाहनों का जाँच अभियान शुरू किया गया।

धनबल से धनबाद जीतने का किया जा रहा है प्रयास इस सपने को जनता चकनाचूर कर देगी : महतो

स्वदेश संवाददाता

बोकारो : चास धनबाद लोकसभा मे चुनावी माहौल धूप के साथ तेजी से बढ़ती जा रही। लोकसभा क्षेत्र के बोकारो विधानसभा में इंटक कांग्रेस के सैकड़ों कार्यकर्ताओ ने आज केन्द्र के मोदी सरकार पर बिस्वास करते हुए भाजपा परिवार की सदस्यता ग्रहण जिला अध्यक्ष जयदेव राय ने दिलाया। सदस्यता अभियान में मुख्य रूप से लोकसभा प्रत्याशी ढुल्लु महतो, बोकारो विधायक बिरंची नारायण, रोहितलाल सिंह, मुकुल ओझा ने माला व पट्टा पहना कर स्वागत किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए ढुल्लू महतो ने कहा कि जिस प्रकार से मोदी के परिवार में लोग शामिल हो रहे हैं ऐसे में हमें उम्मीद है कि पिछले लोकसभा के रिकॉर्ड को सभी मिलकर तोड़ेंगे और 8 लाख से जीत होगी। ढुल्लू महतो ने कहा कि धनबल से धनबाद से जीतने का प्रयास किया जा रहा है और इस सपने को जनता चकनाचूर कर देगी। विधायक बिरंचि नारायण ने कहा कि जिस प्रकार से आज कांग्रेस और इंटक छोड़कर लोगों ने भाजपा की सदस्यता ली है ऐसे में पार्टी मजबूत हुई है और 400 के पर के नारे को मजबूती मिलेगी और धनबाद से कमल फूल जीतकर लोकसभा पहुंचेगी। तथा चास नगर के उतरी क्षेत्र में भी कार्यकर्ता सम्मेलन का आयोजन किया गया था जिसमें पन्नालाल कांडू की अध्यक्षता में और राजेश घोषाल के द्वारा दर्जनों की संख्या में महिलाएं और पुरुषों ने सदस्यता ग्रहण किया।

अज्ञात वाहन ने बाइक को कुचला, बेटी की मौत, पिता गंभीर

रामगढ़ : रामगढ़ थाना क्षेत्र के चुटूपालू घाटी में अज्ञात वाहन ने एक बाइक को कुचल दिया। रविवार को हुए इस हादसे में बाइक पर सवार पिता गंभीर रूप से घायल हो गये और उनकी बेटी की घटनास्थल पर ही मौत हो गयी। इस हादसे में एक वर्षीय बच्चा विशांक बाल-बाल बच गया। लेकिन उसे भी इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जानकारी के अनुसार रांची जिले के ओरमांझी थाना क्षेत्र के बजरा मरार निवासी खिरोधर महतो अपनी स्प्लेंडर बाइक संख्या (जेएच-01ईएल-9478 से अपनी बेटी को लेने के लिए उसके ससुराल रामगढ़ के बुढ़ाखुखरा महादेवटांड़ पहुंचे थे।

कार्यक्रम | जैन मिलन केंद्र सेक्टर-2 में भगवान महावीर की 2623वीं जयंती मनायी गयी

अपने सुख और दुख के जिम्मेदार हम स्वयं : मधुर प्रज्ञा जी

स्वदेश संवाददाता

बोकारो : जैन मिलन केंद्र सेक्टर 2 में भगवान महावीर की 2623वीं जयंती धूमधाम से मनाई गई। एवं विश्व शांति दूत आचार्य श्री महाश्रमण जी की विदुषी शिष्या समणी निर्देशिका मधुर प्रज्ञा जी, समणी शुभ प्रज्ञा जी, समणी मनन प्रज्ञा जी के सानिध्य में संपन्न हुई। जैन मिलन के अध्यक्ष संजय बैद ने समणीयों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि भगवान महावीर के संदेश द्वारा ही हम मानवता की सेवा कर सकते हैं। बैद ने कहा कि आज महावीर की वाणी हमारे जीवन में सुख और समृद्धि ला सकती हैं। इसके पूर्व अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन से कार्यक्रम की शुरूआत हुई। जैन पब्लिक स्कूल के बच्चों ने भगवान महावीर के भजनों पर बहुत सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। जैन समाज के बच्चों एवं महिलाओं ने भी प्रदूषण पर एक नाटिका का मंचन किया। समणी निर्देशिका मधुर प्रज्ञा जी ने कहा कि भगवान महावीर की आराधना के साथ भगवान महावीर के संदेश को भी अपने जीवन में उतारना होगा, आत्मसात करना होगा। समणी मधुर प्रज्ञा जी ने कहा कि भगवान महावीर की कथनी और करनी में अंतर नहीं था, उन्होंने त्याग, तप और संयम का जीवन जिया।

इस अवसर पर जैन समाज के एवं जैन पब्लिक स्कूल के मेधावी बच्चों को प्रशस्ति पत्र एवं पुरस्कार देकर के सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन सुशील बैद ने किया। जैन मिलन के सचिव आलोक कुमार जैन ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए समणी जी एवं आगुंतो का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर संपत मल बैद, बिनोद चोपड़ा, मदन चंद चोरड़िया, श्याम सुंदर जैन, सुभाष जैन, अजय लूंकड, विपुल मेहता, प्रकाश कोठारी, मनीष जैन, संजय जैन, प्रवीण जैन, जयचंद बांठिया, विकास जैन, आकाश जैन, कमल जैन, अंकित जैन, केतन मेहता, बजरंग लाल चोरड़िया, अंकित चोपड़ा आदि उपस्थित रहे।

संथाल परगना मोटर मजदूर यूनियन के अध्यक्ष अरुण सिंह पर जानलेवा हमला

दुमका : कचहरी चौक के पास रविवार की सुबह संथाल- परगना मोटर मजदूर यूनियन के अध्यक्ष अरुण सिंह को दो अपराधियों ने गोली मारने की कोशिश की। लेकिन उनकी सूझ बूझ से जान बच गयी। बताया जाता है कि सुबह अरुण सिंह अखबार बांटने के लिए बस स्टॉप आ रहे थे। इसी क्रम में कचहरी चौक के पास खड़े ई-रिक्शा से दो लोग उतरे और उनकी बाइक को रोकी। दोनों युवकों में से एक ने तुरंत पिस्तौल निकालकर उनकी कनपटी पर रख दी और गोली चलाने की कोशिश की। लेकिन अरुण सिंह ने साहस दिखाते हुए उनकी पिस्तौल पकड़कर घुमा दी और उससे भिड़ गये। इसके बाद दोनों ने मिलकर उनकी जमकर पिटाई कर दी। इसके बाद हमलावर पुलिस को सूचना देने पर जान से मारने की धमकी देकर भाग गये। घटना की जानकारी मिलते ही एसपी पीतांबर सिंह खेरवार मौके पर पहुंचे और हमले में शामिल एक व्यक्ति को गिरफ्तार कर लिया। एसपी ने कंट्रोल रूम के सीसीटीवी फुटेज की भी जांच की, ताकि आगे की कार्रवाई की जा सके। अरुण सिंह एक दैनिक अखबार के एजेंसी के मालिक भी हैं। घायल अरुण सिंह ने बताया कि बस स्टॉप पर कुछ कुली रहते हैं, जो बस से आने वाले सामान का मनमाना किराया वसूलते हैं। उनकी प्रतिदिन की आय हजारों में है। व्यवसायियों की शिकायत पर उन्होंने कुलियों को बस स्टॉप से बाहर निकलवा दिया। इसे लेकर कुलियों में काफी आक्रोश था। आज उनमें से एक कुली अपने साथी के साथ उन्हें मारने आया था लेकिन ईश्वर की कृपा से उनकी जान बच गयी। उन्होंने कहा कि वे सभी हमलावरों को पहचानते हैं।

मूंग की उन्नत किस्में और विशेषताएं

के. 851

यह किस्म संकरण (4453-23 टा. 44) द्वारा चन्द्र शेखर आजाद कृषि विश्व विद्यालय कानपुर (उ.प्र.) के दलहन वैज्ञानिकों ने विकसित की है। इसमें लगभग 85 प्रतिशत फलियाँ एक समय में पकती हैं और बाकी फलियों को पकने में 5-7 दिन लगते हैं। इस किस्म में फलियों के चटकने की समस्या भी अपेक्षाकृत बहुत कम है। फसल की एक बार में कटाई की जा सकती है। फसल 60 से 65 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म का पौधा मध्यम आकार का (लम्बाई 60-80 से.मी.) गहरे हरे रंग का सीधा खड़े रहने वाला होता है। इसकी फलियां लम्बी और 10 से 11 दाने वाली होती हैं। दाने आकर्षक और चमकदार हरे होते हैं। एक हजार दानों का औसत वजन लगभग 42-45 ग्राम होता है। इसके दानों में लगभग 24.5 प्रतिशत प्रोटीन होती है। इस किस्म से दानों की औसत उपज 10 से 12 क्विंटल प्रति हैक्टर है। इस किस्म में पीला मोजेक रोग का प्रकोप होता है

टाइप- 44

इसके पौधे सीधे उगने वाले और 60 से 70 से.मी. ऊंचे होते हैं। फसल 60 से 65 दिन में पककर तैयार हो जाती है। फलियाँ मध्यम लम्बी और 11-12 बीजवाली होती हैं। दाने औसत आकार के मटमैले हरे रंग के होते हैं। इसके पौधे सीधे बढ़ते हैं इसको कपास और गन्ने के साथ मिलवां फसल के रूप में उगाया जा सकता है। यह भी पीले मोजेक रोग तथा जीवण्विक अंगमारी रोगों के प्रति ग्रहणशील है। औसत उपज 8 से 10 क्विंटल प्रति हैक्टेयर है।

पूसा वैसाखी

यह किस्म टाइप 44 से चयन करके निकाली गई है। इसका पौधा बौना झाड़ीनुमा होता है। पत्तियाँ हरी होती हैं तथा तने पर हल्के गुलाबी धब्बे पाये जाते हैं. फूल भूरा रंग लिए हुए क्रीमी रंग के तथा बीज हरे रंग के व मध्यम आकार के होते हैं. पौधे पर प्रकाश की अवधि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। फसल 60 से 70 दिन में तैयार हो जाती है। फलियाँ मध्यम लंबाई की और 10-11 दाने वाली होती हैं। इसको भी कपास और गन्ना के साथ मिलवां फसल के रूप में उगाया जा सकता है। इसकी पैदावार क्षमता 8 से 10 क्विं. प्रति हैक्टे. है। इस किस्म को सभी मौसमों में उगाया जा सकता है।

पी.एस.7

इस किस्म के पौधे छोटे (65-70 से.मी. ऊंचे) और गठे हुए होते हैं। पत्तियाँ चौड़ी और हल्के लाल रंग की होती हैं। यह पकने में 60 से 65 दिन लेती हैं। फलियां लम्बी 10-11 दाने वाली होती हैं एक साथ पकती हैं। फलियाँ पकने के बाद चटकती नहीं हैं, फसल को एक बार में काटा जा सकता है। दाने बड़े और मटमैले रंग के हरे होते हैं। इसकी उत्पादन क्षमता 8-10 क्विं. प्रति हैक्टे. होती है।

पी.एस. 1-

यह किस्म सीधी बढ़ने वाली भा. कृ. अनुसं.प. नई दिल्ली से विकसित की गई है. यह 60-70 दिन में पककर तैयार हो जाती है। यह किस्म बसन्त तथा ग्रीष्मकालीन बुआई के लिये सम्पूर्ण भारत के लिये उपयुक्त है। पौधे की लं. 45 से.मी. तक होती है। पत्तियाँ पीलापन लिए हरे रंग की होती हैं। फूल पीले तथा बीज चमकदार हरे रंग के होते हैं। फलियाँ पतली 12 से 13 दाने वाली होती हैं। इसकी उत्पादन क्षमता 12 से 15 क्विं. प्रति हेक्टे. तक है।

पंत मूंग-1

पौधा सीधा बढ़ने वाला एवं गहरे हरे रंग का होता है। बीज मध्यम आकार के हरे रंग के होते हैं। यह किस्म पीला मोजेक विषाणु एवं सर्कोस्पोरा एवं चित्ती रोगों के लिए काफी हद तक प्रतिरोधी है। पकने के लिए 65-70 दिन लेती है। उपज -10-15क्विं./है.

पंत मूंग-2

इसका पौधा मध्यम ऊंचाई का होता है। बीज चमकीले हरे रंग एवं मध्यम आकार के होते हैं। यह किस्म पीला मोजैक विषाणु रोग के लिये मध्यम प्रतिरोधी है। जायद में यह किस्म 60-65 दिन में पक जाती है। एक फली में औसतन 10 से 11 दाने होते हैं। औसत पैदावार 6 से 8 क्विंटल प्रति हैक्टर है।

जी 65

पंजाब से विकसित 65 से 70 दिन में पककर तैयार हो जाती है। उत्पादन क्षमता 8 से 10 क्विंटल प्रति हैक्टर है। इस किस्म में पीले मोजेक रोग का प्रकोप होता है। यह ग्रीष्मकालीन खेती के लिये पंजाब हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान तथा उ.प्र.में उपयुक्त पाई

जायद की पालक व चौलाई

जायद अथवा ग्रीष्म ऋतु में उगाई जाने वाली हरी पत्तेदार सब्जियों में पालक व चौलाई का प्रमुख स्थान है। इन सब्जियों में लवण एवं विटामिन (ए) प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त विटामिन बी काम्पलेक्स, पाचनशील कार्बोहाइड्रेट, लोहा तत्व व रेशायुक्त होने के कारण ये अत्यंत स्वास्थ्यवर्धक भी हैं। जायद में पालक व चौलाई उगाकर कृषक इससे अच्छे भाव प्राप्त कर सकते हैं.

जलवायु

बहुत अधिक तापमान होने पर इन सब्जियों को नहीं उगाया जा सकता है। पालक व चौलाई बसंत ऋतु एवं वर्षा ऋतु दोनों में उगायी जा सकती है।

भूमि

पालक व चौलाई को सभी प्रकार की भूमि में आसानी से उगाया जा सकता है किंतु बलुई दोमट मिट्टी व अच्छी खाद युक्त भूमि, काली व चिकनी मृदा की अपेक्षा अच्छी रहती है।

किस्में

पालक- जोबनेर ग्रीन, पूसा ज्योति, पंजाब ग्रीन, आलग्रीन,पूसा हरित, पूसा भारती.

चौलाई

बड़ी चौलाई, छोटी चौलाई, कोयम्बटूर-1, पूसा किरण, पूसा किटी, पूसा लाल चौलाई, अर्का सुगना, अर्का अरुणिमा

खाद व उर्वरक- हरी पत्तीदार सब्जी होने के कारण पालक व चौलाई में अच्छी वानस्पतिक वृद्धि के लिये नत्रजन की आवश्यकता अधिक रहती है। बुवाई से पूर्व 100 क्विंटल सड़ी गोबर खाद, 25 किलो नत्रजन, 40 किलो फास्फोरस तथा 40 किलो पोटाश प्रति हेक्टर के हिसाब से बुवाई पूर्व भूमि में मिलावें। प्रत्येक कटाई के बाद 25 किलो नत्रजन प्रति हेक्टर सिंचाई के बाद दें।

बुवाई

जायद की बुवाई हेतु पालक व चौलाई की बुवाई फरवरी-मार्च में कर देनी चाहिए। चौलाई की बुवाई हेतु 2 से 2.5 किलो व पालक 25 से 30 किलो प्रति हेक्टर की दर से बुवाई करें। अच्छे अंकुरण के लिये पालक के बीज को बुवाई पूर्व एक रात पानी में भिगो दें। बुवाई छिटकवां अथवा कतारों में करनी चाहिए. पालक के लिये कतार से कतार की दूरी 20 सेमी. व चौलाई में 20 से 30 सेमी. रखनी चाहिए।

सिंचाई व निराई-गुड़ाई

फसल में 8 से 10 दिन के अंतराल पर आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। 2 से 3 बार हाथ से निराई -गुड़ाई करनी चाहिए।

रसायनिक उर्वरकों के लाभकारी

उर्वरकों के भरपूर लाभ कैसे लें इसके लिये निम्नलिखित बातें ध्यान रखें -

» मिट्टी परीक्षण के आधार पर नत्रजन, फास्फोरस एवं पोटाश तत्व का संतुलित मात्रा में प्रयोग करें.» मिट्टी परीक्षण के आधार पर गौण व सूक्ष्म पोषक तत्वों का उपयोग करें. » रसायनिक उर्वरकों के साथ जैविक खादों का समावेश करें.

» फसल चक्र अपनायें. » उपयुक्त सस्य क्रियायें अपनायें.

मिट्टी परीक्षण के आधार पर गौण व सूक्ष्म पोषक तत्वों का उपयोग

जैसा कि विदित है कि हमारे द्वारा लगातार अधिक मुख्य तत्वों वाले रसायनिक उर्वरक उपयोग कर उपज में बढ़ोत्तरी की है लेकिन जमीन से गौण व सूक्ष्म पोषक तत्व जमीन में नहीं दिये जा रहे हैं. जिसके फलस्वरूप हमारी जमीन में मुख्य पोषक तत्वों के साथ-साथ गौण व सूक्ष्म पोषक तत्वों की भी कमी हो गई है। जिसमें सल्फर तत्व चौथे आवश्यक पोषक तत्व के रूप में उभर कर आया है। जिसका मुख्य कारण सघन खेती के साथ जमीन में इन पोषक तत्वों का उपयोग न करना तथा कार्बनिक पदार्थों का खेतों में न डालना है।

» रसायनिक उर्वरकों के साथ जैविक खादों का समावेश- परम्परागत खेती के समय रसायनिक खादों का उपयोग कम था लेकिन किसान खेती में गोबर खाद,हरी खाद एवं भूसा आदि को खेत में मिला दिया जाता था तथा सघन खेती भी नहीं होती थी जिसके कारण जमीन की जलधारण क्षमता अच्छी थी तथा पोषक तत्व भी पर्याप्त होते थे परंतु वर्तमान युग मशीनरी की खेती का युग हो गया है जिसमें पशुपालन कम होता जा रहा है किसान भाई अधिक उपज प्राप्ती के लिये मिट्टी के स्वास्थ्य का ध्यान रखना भूल गये हैं जिसके परिणाम किसानों को दिखने लगे हैं कि रासायनिक खाद दिये जाने पर फसल उसका उपयोग नहीं कर पा रहे हैं। इसलिये प्रत्येक तीन वर्ष में एक बार 15-20 टन गोबर खाद प्रति हेक्टर खेत में डालें.

फसल चक्र अपनायें

फसल चक्र से आशय एक ही फसल को लगातार न बोयें. पहली वर्ष यदि खरीफ में सोयाबीन और रबी में गेहूं तो दूसरी वर्ष खरीफ में मक्का एवं रबी में चना बोयें। फसल चक्र में दलहनी फसलों का समावेश अवश्य करें. दलहनी फसल वायुमंडलीय नत्रजन को अवशोषित कर स्थिर करती है. तथा नत्रजन दलहनी फसल में नहीं देना पड़ता है.उथली जड़ वाली फसल के बाद गहरी जड़ वाली फसल,अधिक पानी वाली फसल के बाद कम पानी चाहने वाली फसल बोये. फसल चक्र अपनाने से उर्वरकों की क्षमता तो बढ़ती ही है साथ ही साथ कीड़े बीमारी भी कम लगती है।

उपयुक्त सस्य क्रियायें अपनायें

उपयुक्त सस्य क्रियायं अपनाने से रसायनिक उर्वरकों की दी गई मात्रा अधिक से अधिक फसल द्वारा ली जावेगी जिससे उपज भी अच्छी मिलेगी. इसके लिये कुछ मुख्य कृषि क्रियायें मुख्य हैं जो निम्नलिखित हैं.

» उपलब्ध साधनों के अनुरूप अधिक उपज देने वाली किस्म बोयें. द्य बीज जनित रोगों से बचने के लिये बाबिस्टीन, थाइरम से बीज को उपचारित कर बोयें. द्य किस्म की पकने की अवधि के अनुसार समय पर बुवाई करें.द्य उर्वरकों को सही विधि व समय पर दें. द्य फसलों की बढ़वार के क्रान्तिक समय में खेत को खरपतवार रहित रखें. द्य सिंचाई आवश्यकतानुसार एवं सही विधि से करें. द्य रोग व बीमारियों का प्रबंधन करें. द्य समय पर कटाई कर,थ्रेसिंग कर उचित भंडारण करें.

संपादकीय

मौसम की प्रतिकूलता से धधक रही धरती

वैश्विक स्तर पर तापमान में लगातार हो रही बढ़ोतरी तथा मौसम का निरंतर बिगड़ता मिजाज गंभीर चिंता का सबब बना है। प्रकृति पिछले कुछ वर्षों से बार-बार भयानक आंधियों, तूफान और ओलावृष्टि के रूप में यह गंभीर संकेत दे रही है कि विकास के नाम पर हम प्रकृति से भयानक तरीके से जिस तरह का खिलवाड़ कर रहे हैं, उसके परिणामस्वरूप मौसम का मिजाज कब कहां किस कदर बदल जाये, कुछ भी भविष्यवाणी करना मुश्किल होता जा रहा है। ग्लोबल वार्मिंग के चलते दुनियाभर में मौसम का मिजाज किस कदर बदल रहा है, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उत्तरी ध्रुव के तापमान में एक-दो नहीं बल्कि बड़ी बढ़ोतरी देखी गयी। मौसम की प्रतिकूलता साल दर साल किस कदर बढ़ती जा रही है, यह इसी से समझा जा सकता है कि कहीं भयानक सूखा तो कहीं बेमौसम अत्यधिक वर्षा, कहीं जबरदस्त बर्फबारी तो कहीं कड़ाके की ठंड, कभी-कभार ठंड में गर्मी का अहसास तो कहीं तूफान और कहीं भयानक प्राकृतिक आपदाएं, ये सब प्रकृति के साथ हमारे खिलवाड़ के ही दुष्परिणाम हैं और हमें यह सचेत करने के लिए पर्याप्त हैं कि अगर हम इसी प्रकार प्रकृति के संसाधनों का बुरे तरीके से दोहन करते रहे तो हमारे भविष्य की तस्वीर कैसी होने वाली है। पहाड़ों में बढ़ती गर्माहट के चलते हमें अक्सर घने वनों में भयानक आग लगने की खबरें सुनने को मिलती रहती हैं। पहाड़ों की इसी गर्माहट का सीधा असर निचले मैदानी इलाकों पर पड़ता है, जहां का पारा अब हर वर्ष बढ़ता जा रहा है। धरती का तापमान यदि इसी प्रकार साल दर साल बढ़ता रहा तो आने वाले वर्षों में हमें इसके बेहद गंभीर परिणाम भुगतने को तैयार रहना होगा, क्योंकि हमें यह बखूबी समझ लेना होगा कि जो प्रकृति हमें उपहार स्वरूप शुद्ध हवा, शुद्ध पानी, शुद्ध मिट्टी तथा ढ़ेरों जनोपयोगी चीजें दे रही है, अगर मानवीय क्रियाकलापों द्वारा पैदा किये जा रहे पर्यावरण संकट के चलते प्रकृति कुपित होती है तो उसे सब कुछ नष्ट कर डालने में पल भर की भी देर नहीं लगेगी। करीब दो दशक पहले देश के कई राज्यों में जहां अप्रैल माह में अधिकतम तापमान औसतन 32-33 डिग्री रहता था, अब वह 40 के पार रहने लगा है।

सवाल यह है कि धरती का तापमान बढ़ते जाने के प्रमुख कारण क्या हैं? इसका सबसे अहम कारण है ग्लोबल वार्मिंग, जो तमाम तरह की सुख-सुविधाएं व संसाधन जुटाने के लिए किये जाने वाले मानवीय क्रियाकलापों की ही देन है। पेट्रोल, डीजल से उत्पन्न होने वाले धुएं ने वातावरण में कार्बन डाईऑक्साइड तथा ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा को खतरनाक स्तर तक पहुंचा दिया है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि वातावरण में पहले की अपेक्षा 30 फीसदी ज्यादा कार्बन डाईऑक्साइड मौजूद है, जिसकी मौसम का मिजाज बिगाड़ने में अहम भूमिका है। पेड़-पौधे कार्बन डाईऑक्साइड को अवशोषित कर पर्यावरण संतुलन बनाने में अहम भूमिका निभाते रहे हैं लेकिन पिछले कुछ दशकों में वन-क्षेत्रों को बड़े पैमाने पर कंक्रीट के जंगलों में तब्दील किया जाता रहा है।

एक और अहम कारण है बेतहाशा जनसंख्या वृद्धि। जहां 20वीं सदी में वैश्विक जनसंख्या करीब 1.7 अरब थी, अब बढ़कर 8 अरब से भी ज्यादा हो चुकी है। अब सोचने वाली बात यह है कि धरती का क्षेत्रफल तो उतना ही रहेगा, इसलिये कई गुना बढ़ी आबादी के रहने और उसकी जरूरतें पूरी करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का बड़े पैमाने पर दोहन किया जा रहा है, इससे पर्यावरण की सेहत पर जो जबरदस्त प्रहार हुआ है, उसी का परिणाम है कि धरती बुरी तरह धधक रही है। ब्रिटेन के प्रख्यात भौतिक शास्त्री स्टीफन हॉकिंग की इस टिप्पणी को कैसे नजरअंदाज किया जा सकता है कि यदि मानव जाति की जनसंख्या इसी कदर बढ़ती रही और ऊर्जा की खपत दिन-प्रतिदिन इसी प्रकार होती रही तो करीब 600 वर्षों बाद पृथ्वी आग का गोला बनकर रह जायेगी।

अध्यात्म पथ

लंका में विजय पाने के बाद अयोध्या के इस गुफा में रहने लगे थे हनुमान

जबसे अयोध्या में रामलला की स्थापना हुई है, तब से भक्तों की भीड़ बढ़ गयी है। हर कोई श्री राम के दर्शन करने अयोध्या जा रहे हैं। ऐसे में लोग अयोध्या में श्री राम के दर्शन के लिए आसपास स्थित प्रसिद्ध मंदिरों के दर्शन का प्लान बना सकते हैं। अगर आप भी अयोध्या रामलला के दर्शन करने जा रहे हैं तो आप एक बार हनुमानगढ़ी मंदिर में दर्शन करने जा सकते हैं। पौराणिक मान्यता के अनुसार, लंका विजय के बाद श्रीराम के साथ अनेक वानर वीर भी अयोध्या आये। जिसमें परम प्रिय दूत बजरंगबली भी शामिल हैं। अयोध्या के प्रसिद्ध हनुमानगढ़ी मंदिर शहर के बीचो बीच बना हुआ है। मंदिर राजद्वार के सामने ऊंचे टीले पर मौजूद है। अयोध्या की सरयू नदी के दहीने तट पर स्थित है। वहीं, इस मंदिर में पहुंचने के लिए भक्तों को 76 सीढ़िया चढ़नी पड़ती हैं। पौराणिक मन्यताओं में कहा जाता है कि इस मंदिर को श्री राम ने हनुमान जी को सौंपा था। उन्होंने मंदिर देते हुअ कहा कि कोई भक्त अयोध्या आएगा तब वो सबसे पहले हनुमान जी के दर्शन करेंगे। माना जाता है कि 18वीं शताब्दी के प्रारंभिक काल में इस मंदिर का निर्माण हुआ था। मंदिर को स्वामी अभयारामदास के निर्देश में सिरोजुद्दौला ने की थी। उस समय नवाब पुत्र को एक बीमारी थी, जिससे मुक्ति पाने के लिए उन्होंने इस मंदिर को बनवाया था। मंदिर बनने के बाद उनको बीमारी से मुक्ति मिल गयी थी। माना जाता है कि आज भी हुनमान जी इस मंदिर में निवास करते हैं और इसका ध्यान रखते हैं। हनुमान गढ़ी मंदिर पहुंचने के लिए आपको अयोध्या और फैजाबाद रेलवे स्टेशन से आना होगा। वहीं, इसके अलावा गोरखपुर, प्रयागराज और वाराणसी एयरपोर्ट से भी यहां पहुंचा जा सकता है।

पृथ्वी से ही है जीवन

गिरीश्वर मिश्र

> पृथ्वी से मिलने वाले प्रसाद का सेवन श्रेयस्कर होता है न कि लोभवश अंधाधुंध शोषण। पृथ्वी की अकूत सम्पदा में बहुत कुछ यदि पुनर्नवीकरण करने लायक (रिन्यूएबिल) होता है तो बहुत कुछ उपयोग के साथ क्रमशः खत्म होता जाता है। परंतु यह सब देख हम पृथ्वी को एक संसाधन मान बैठते हैं जिसका शोषण करने लगते हैं। पृथ्वी को उपभोग्य और उसके सभी पक्षों का उपभोग करते रहना हम अपना हक सा मान बैठे है। इस उपभोग के अनियंत्रित होने से जीवन की पारिस्थितिकी खतरे में पड़ने लगी है क्योंकि सब कुछ परस्पर सम्बंधित है। खेती-बारी, काम-धंधा, सुख-स्वास्थ और सामाजिक-आर्थिक उन्नति से जुड़ी सारी गतिविधियाँ धरती पर ही टिकी हैं। आधुनिक आदमी की सोच में मनुष्य ने पृथ्वी को जड़ मान अपने को अलग कर उस सम्पदा का स्वामी मान बैठा। उसे जीवन को संचालित करने के लिए विकास का एक नया मंत्र मिला गया जिसका आशय निरंतर आगे बढ़ना है और दुनिया के सारे संसाधनों का उपयोग करना है।

पृथ्वी, धरती, वसुंधरा, भूमि आदि विभिन्न नामों से जाने जाने वाली सता को हजारों साल से माता कहा जाता रहा है। अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में माताभूमिः पुत्रोहं पृथिव्याः का उद्घोष मिलता है। माता के रूप में पृथ्वी जाने कब से मनुष्य, पशु-पक्षी, कीट-पतंग आदि सभी जीवित प्राणियों यानी अपने आश्रितों का निर्व्याज भरण-पोषण करती आ रही है। माता का स्वभाव है कि वह स्वयं कष्ट सह कर भी अपना सारा प्रेम शिशुओं के ऊपर उड़ेलती रहती है, क्योंकि वह अपनी संततियों को अपने अस्तित्व से अलग नहीं रखती। वे उसी के अभिन्न अवयव या अंश होते हैं । वैसे भी सारी दुनिया में जो कुछ भी स्थित है वह ईश्वर का आवास हैः ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंचित जगत्यां जगत। इसलिए उस पर हमारा कोई अधिकार नहीं बनता। तभी भारत के आदमी ने सोचा कि पृथ्वी पर जीवन सिर्फ बसता नहीं है। वह प्राण शक्ति है और वह उसी की बदौलत जीता है। हमारी भाषा, विचार और शरीर-रचना सब पर इस भूमि का अनिवार्य प्रभाव पड़ता है। पृथ्वी प्राणियों के लिए आश्रय ही नहीं है वरन उसी से ही जीवन संभव हो पाता है। हम सब पृथ्वी के तत्वों से निर्मित होते हैं। मिट्टी की सबसे विलक्षण शक्ति उसकी उर्वरा क्षमता में निहित है। इस जीवनी शक्ति के चलते रूखे-सूखे बीज का रूपांतरण होता है, अंकुरित होकर वह बीज हरी-भरी घास, अन्न की लहलहाती फसल, नाना प्रकार के चित्ताकर्षक सुगंधित पुष्प, भांति-भांति के सुस्वादु रसीले फल वाले, औषधीय और अन्य किस्म के वृक्ष-वनस्पतियां आदि जानें क्या-क्या बन जाता है।

धरती के नीचे प्रवाहित जल हमारे जीवन का स्रोत है। उसके क्रोड़ में विभिन्न धातुएं-कोयला, सोना, चांदी, लोहा, हीरा, मोती हैं, ऊर्जा का स्रोत पेट्रोल है। क्या कुछ नहीं है उसमें। बहुत से पदार्थ ऐसे भी हैं जो रत्नगर्भा पृथ्वी ने अपने भीतर छिपा रखे हैं और हमें उनका ज्ञान नहीं है। ऐसी पृथ्वी जड़ नहीं है और हमें अपने अस्तित्व को उसके हिस्से के रूप में देखना चाहिए। हमारा पृथ्वी से संबंध एक समग्र रचना या अंगी के अंग के रूप समझना चाहिए। पृथ्वी को देवता माना गया। पृथ्वी रक्षणीय और वंदनीय हो गयी। भूमि को माता का दर्जा मिला। परंतु आज की स्थिति भिन्न है। अब वैश्विक स्तर पर सभी देशों को प्रभावित करने वाली चुनौतियों में जलवायु - परिवर्तन को लेकर चिंता बढ़ती जा रही है। ग्लेशियरों के बहुत बड़े पैमाने पर पिघलने की घटना से प्राकृतिक संतुलन खतरे में पड़ रहा है। हम सब प्रकृति और मनुष्य अलग-अलग देखने लगे हैं। प्रकृति का संसाधन वाला रूप बड़ा आकर्षक लगता है। विगत वर्षों में पर्यावरण से जुड़े हादसों में बड़ी तेजी से वृद्धि हुई है, किंतु मनुष्य अपने सीमित स्वार्थों के चलते बाज नहीं आता। उसे यह विस्मृत हो जाता है कि प्रकृति विकल्पहीन है। उसे खोने का खतरा हमें कहीं का न रखेगा। यूरोप और अमेरिका के विकसित देशों में बाढ़, लू, सूखा और तूफान जैसी चरम स्थितियों का कई कई बार सामना करना पड़ा है। भारत के अनेक क्षेत्रों में बाढ़ की विभीषिका का असर हुआ था। दुबई में हुई ताजा वर्षा और बाढ़ अभूतपूर्व है। विकास को लेकर चिंतन में टिकाऊ विकास के लक्ष्यों को पहचानना सराहनीय कदम था। पर उद्घोषणा को कार्यस्तर पर लागू करने तक की अब तक की यात्रा आगे नहीं बढ़ पा रही है। जीव-जंतुओं और वनस्पतियों की प्रजातियों के विनाश और जैव विविधता के ह्रास का खतरा बढ़ रहा है। सभी देश पर्यावरण की रक्षा के लिए जरूरी मानकों, मानदंडों और पाबंदियों को स्वीकार न करके छूट लेने की फिराक में हैं। ग्रीनगैस के उत्सर्जन को लेकर आज जो हालात हैं उसमें यह स्थिति खास तौर पर दिख रही है। अब पृथ्वी पर तापमान में वृद्धि अनियंत्रित होती जा रही है। विडंबना यह भी है कि इस वैश्विक पैमाने पर आ रही विपत्ति का नुकसान अक्सर कम विकसित देशों को ही भुगतना पड़ता है। अनुमान है कि विश्व को 2.5 से 2.9 सेल्सियस तापमान से गुजरना होगा। मौसम में होने वाले इस तरह के क्रांतिक बदलाव के भयानक परिणाम हो सकते हैं। आज प्रौद्योगिकी का जिस तेजी से विकास हो रहा है वह प्रकृति की संभावनाओं को और कुंठित करने वाला साबित हो रहा है। खेती में में रासायनिक खाद और कीटनाशकों आदि के विविध रूप विष की तरह मानव शरीर में पहुंच कर अनेक रोगों को जन्म दे रहे हैं। यही हाल आणविक ऊर्जा के उत्पादन से जुड़ी समस्याओं का भी है। वृक्षों आदि विभिन्न वनस्पतियों, मनुष्य और अन्य जीव जंतु सभी परस्पर निर्भर हैं। ये सभी एक दूसरे के लिए पूरक की तरह सक्रिय हो कर काम करते हैं। परंतु मनुष्य प्रकृति से लेता तो है पर उसे देने की बात याद नहीं रहती है। हां, कई लोगों को मन में यह भ्रम जरूर है कि प्रकृति असमाप्य है, कभी खत्म न होगी। हम प्रकृति को जड़ या निर्जीव मान कर मनोवांछित तरीके से इच्छानुसार उसके शोषण और दोहन में शामिल हो जाते हैं। यह हमारे स्वभाव का हिस्सा बनता जाता है। हम असंवेदनशील और असहिष्णु हो कर हिंसक बनते जाते हैं।

पृथ्वी से मिलने वाले प्रसाद का सेवन श्रेयस्कर होता है न कि लोभवश अंधाधुंध शोषण। पृथ्वी की अकूत सम्पदा में बहुत कुछ यदि पुनर्नवीकरण करने लायक (रिन्यूएबिल) होता है तो बहुत कुछ उपयोग के साथ क्रमशः खत्म होता जाता है। परंतु यह सब देख हम पृथ्वी को एक संसाधन मान बैठते हैं जिसका शोषण करने लगते हैं। पृथ्वी को उपभोग्य और उसके सभी पक्षों का उपभोग करते रहना हम अपना हक सा मान बैठे है। इस उपभोग के अनियंत्रित होने से जीवन की पारिस्थितिकी खतरे में पड़ने लगी है क्योंकि सब कुछ परस्पर सम्बंधित है। खेती-बारी, काम-धंधा, सुख-स्वास्थ और सामाजिक-आर्थिक उन्नति से जुड़ी सारी गतिविधियाँ धरती पर ही टिकी हैं। आधुनिक आदमी की सोच में मनुष्य ने पृथ्वी को जड़ मान अपने को अलग कर उस सम्पदा का स्वामी मान बैठा। उसे जीवन को संचालित करने के लिए विकास का एक नया मंत्र मिला गया जिसका आशय निरंतर आगे बढ़ना है और दुनिया के सारे संसाधनों का उपयोग करना है। दुनिया, जगत या पृथ्वी हमारे लिए साधन हैं जिनका मन मजी से उपयोग करना है। मनुष्य सब कुछ का केंद्र बन गया और उसके स्वार्थ की सिद्धि को प्रमुख मान लिया गया। पृथ्वी के सभी संसाधनों का अंधाधुंध दोहन शुरू हुआ। अनियंत्रित विकास के चलते एक ओर पृथ्वी की उर्वरा शक्ति कम होने लगी तो दूसरी ओर कूड़ा-कचरा का ढेर लगाने लगा। जो जितना विकसित हुआ उसने उतने ही ज्यादा कूड़ा पैदा किया। देखते-देखते राजधानी दिल्ली जैसे बड़े महानगरों में कूड़े के कई पहाड़ खड़े हो गए जिनका निस्तारण असंभव सी परियोजना हो गयी।

मातृभूमि का एक भौतिक आधार है पर वह सांस्कृतिक संकल्पना है। भौतिक विस्तार के क्षेत्र का घट-बढ होता रहा है। मातृभूमि राष्ट्रीय संस्कृति का मुख्य अंश रहा है। सुजलां, सुफलां, मलयजशीतलां मातरं, बंदे मातरम् का आवाहन हमें कर्म और त्याग के साथ मातृदेवो भव के संकल्प की ओर अग्रसर करता है। भारत भूमि ऐसी पुण्यभूमि के रूप में याद की गयी है जहां जन्म लेने के लिए देवता भी तरसते हैं। मातृभूमि की वंदना राष्ट्रीय संस्कृति का मुख्य भाग रहा है। यह राष्ट्रीय आस्था का विषय है। धरती के साथ हिंसा किसी भी तरह से स्वीकार्य नहीं हो सकती। पृथ्वी को जन की धात्री कहा है। उपेक्षा की जगह जागरूक हो कर पृथ्वी की सेवा-सुश्रूषा अपेक्षित है। भौतिक समृद्धि के साथ आध्यात्मिक उन्नति भी होनी चाहिए। एकांगी भौतिक विकास के परिणाम जलवायु परिवर्तन के दृष्टि से घातक हैं। मातृभूमि के संवर्धन में ही सबकी वृद्धि है। मतभेद, प्रतिस्पर्धा और हिंसा के फलस्वरूप मातृभूमि की हानि और सामान्य जन जीवन की भी हानि होती है। दोनों परस्पर निर्भर हैं। हर तरह की विविधता को परे करते हुए मातृभूमि सभी का ख़्याल रखती है। मातृभूमि का भाव निर्मल करने वाला होता है और वह बिना किसी के साथ भेद-भाव किये वह विभिन्न प्रकार के लोगों और समुदायों का भरण पोषण करती है। आज प्रकृति और मनुष्य के पारस्परिक रिश्ते को पहचानते हुए मनुष्य के आचरण पर बल देने की जरूरत है। अकेले मनुष्य नहीं बल्कि मनुष्य और प्रकृति के बीच पारस्परिक सम्बन्ध महत्वपूर्ण है। हमें प्रकृति के सहचर के रूप में रहना होगा। वह हमारा ख़्याल रखेगी यदि हम उसका ख़्याल रखेंगे।

- (लेखक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के पूर्व कुलपति हैं।)

शिवराज की जीत का कीर्तिमान बनायेंगी लाडली बहनें

> मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की उदार कार्यशैली का परिणाम ही रहा था कि विधानसभा चुनाव में भाजपा को 166 सीटों पर बड़ी जीत मिली थी। शिवराज सिंह चौहान के नवाचार निरंतर देखने में आते रहे हैं। बालिकाओं की संख्या कम होना किसी भी विकासशील समाज के लिए बड़ी चुनौती थी। इस चुनौती से तभी निपटा जा सकता है, जब स्त्री की आर्थिक हैसियत तय हो और समाज में समानता की स्थितियां निर्मित हों। इस नजरिये से मध्य प्रदेश में लाडली लक्ष्मी योजना एक कारगर औजार साबित हुई।

प्रमोद भार्गव

मध्य प्रदेश लोकसभा चुनाव में पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान को लाडली बहनों का साथ मिल गया तो वे मध्य प्रदेश में सबसे ज्यादा मतों से जीतने वाले प्रत्याशी हो सकते हैं। वैसे भी मतदान में इस आधी आबादी की लगभग बराबर की हिस्सेदारी है। प्रदेश में 2,73,87,122 महिला मतदाता हैं, जो कुल मतदाताओं की 47.75 फीसदी हैं। इनमें से एक करोड़ 29 लाख से अधिक लाडली बहनों को 1250 रुपये प्रतिमाह मिल रहे हैं। उज्ज्वला योजना की 80 लाख और पात्र लाडली बहनों को 450 रुपये में रसोई गैस सिलेंडर मिल रहा है। महिलाओं को सरकारी नौकरियों में 35 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान मुख्यमंत्री शिवराज के कार्यकाल में ही हुआ है। महिला स्व-सहायता समूह की 62 लाख सदस्यों में से 15 लाख लखपति दीदी हैं। विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा, भारिया और सहरिया जनजाति की 2 लाख 33 हजार महिलाओं को पोषाहार भत्ता का प्रावधान शिवराज के समय ही हुआ था। इसीलिए हम देख रहे हैं कि विदिशा संसदीय क्षेत्र से शिवराज के प्रत्याशी घोषित होने के बाद शिवराज भैया को चुनाव लड़ने के लिए धन दे रही हैं। विदिशा को शिवराज का गढ़ माना जाता है। 19 साल बाद शिवराज इस सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। जनता ने उनसे भाई और मामा का रिश्ता बना हुआ है। भांजे-भांजी उनके लिए गुल्लक में पैसे इकट्ठे करके दे रहे हैं। एक मोची ने शिवराज को 10 रुपए का चंदा दिया। यहां धनराशि को छोटी या बड़ी राशि के रूप में देखने की बजाय उसे शिवराज की लोकप्रियता के रूप में देखने की जरूरत है।

2018 के विधानसभा चुनाव की तुलना में 2023 में 1.52 प्रतिशत मतदान अधिक हुआ था। इसे लाडली बहनों का करिश्मा बताया गया है। शहर से कहीं ज्यादा ग्रामीण मतदाता की मतदान के प्रति जागरूकता दिखी है। इसीलिए ग्रामों में महिलाओं की लंबी-लंबी कतारें देखने में आयीं थीं। साफ है, जिस उत्साह से मतदाता घर से बाहर निकला उससे उसका लोकतंत्र के प्रति दायित्व बोध झलका ही, शिवराज के प्रति विश्वास भी नजर आया था। यही करिश्मा

विदिशा लोकसभा सीट पर दिखाई देगा। इस बहुचर्चित विदिशा संसदीय क्षेत्र में सात मई को मतदान होना है। यह सीट वैसे भी जनसंघ और भाजपा का गढ़ मानी जाती रही है। यहां से पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी से लेकर सुषमा स्वराज भी लोकसभा का चुनाव जीत चुकी हैं। स्वयं शिवराज इस सीट से पांच बार चुनाव जीत चुके हैं। यहां से कांग्रेस ने प्रताप भानु शर्मा को उम्मीदवार बनाया है। शर्मा सातवीं और आठवीं लोकसभा में विदिशा से सांसद रह चुके हैं। वे कोई ज्यादा दमखम दिखा पायेंगे ऐसा लग नहीं रहा है। इसलिए शिवराज का पलड़ा ही भारी दिख रहा है।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की उदार कार्यशैली का परिणाम ही रहा था कि विधानसभा चुनाव में भाजपा को 166 सीटों पर बड़ी जीत मिली थी। शिवराज सिंह चौहान के नवाचार निरंतर देखने में आते रहे हैं। बालिकाओं की संख्या कम होना किसी भी विकासशील समाज के लिए बड़ी चुनौती थी। इस चुनौती से तभी निपटा जा सकता है, जब स्त्री की आर्थिक हैसियत तय हो और समाज में समानता की स्थितियां निर्मित हों। इस नजरिये से मध्य प्रदेश में लाडली लक्ष्मी योजना एक कारगर औजार साबित हुई। दिल्ली, हरियाणा और पंजाब ने ही नहीं पूरे देश ने इस योजना का अनुसरण किया और बेटी बचाने के लिए जुट गये। क्योंकि बेटी बचेगी, तभी बेटे बचेंगे और सृष्टि की निरंतरता बनी रहेगी। जैविक तंत्र से जुड़े इस सिद्धांत को हमारे ऋषि-मुनियों ने भलि-भांति आज से हजारों साल पहले समझ लिया था, इसीलिए भगवान शिव-पार्वती के रूप में अर्धनारीश्वर के प्रतीक स्वरूप मंदिरों में मूर्तियां गढ़ी गयीं, जिससे पुरुष संदेश लेता रहे कि नारी से ही पुरुष का अस्तित्व अक्षुण है। किंतु, हमने शिव-पार्वती की पूजा तो की, परंतु उनके एकरूप में अंतर्निहित अर्धनारीश्वर के प्रतीक को आत्मसात नहीं किया। मुख्यमंत्री चौहान की करीब 18 साल के नेतृत्व की सार्वजनिक यात्रा का अवलोकन करें तो यह साफ देखने में आता है कि उनकी कार्य संस्कृति अन्य मुख्यमंत्रियों से भिन्न रही है। वे प्रकृति, कृषि व किसान प्रेमी हैं और युवाओं को कौशल दक्ष बनाने की प्रखर इच्छा रखते हैं। इसीलिए प्रदेश में अनेक प्रकार की छात्रवृत्तियां हैं, जिससे छात्र को आर्थिक बाधा का सामना न करना पड़े। गांव से यदि पाठशाला कुछ दूरी पर है तो बालिका को आने-जाने में व्यवधान न हो, इस हेतु साइकिल है। होनहार छात्रों को पढ़ाई में बाधा नहीं आये, इस नाते विद्यार्थियों को मोबाइल और लैपटॉप दिये। ये योजनाएं मुख्यमंत्री के अंतर्मन में आलोड़ित संवेदनशीलता को रेखांकित करती हैं। शिवराज कविता तो नहीं लिखते, लेकिन दूरांचल वनवासी-बहुल जिले झाबुआ में परंपरागत आदिवासी गुड़िया हस्तशिल्प कला को संरक्षित करने और इसे आजीविका से जोड़ने का उपाय जरूर करते हैं। फलस्वरूप अब स्थानीय लोगों के नाजुक हाथों द्वारा निर्मित यह कपड़े की गुड़िया मध्य-प्रदेश सरकार के एक जिला, एक उत्पाद योजना के अंतर्गत व्यापारिक उड़ान भरकर जर्मनी और आस्ट्रेलिया के बच्चों का खिलौना बन गयी है। सामाजिक सरोकार से इस संरचना की महिमा वही नवाचारी समझ सकता है, जो कल्पनाशील होने के साथ अपने दायित्वों के प्रति उदार और जनता के प्रति संवेदनशील हो। शिवराज के ये नवाचारी काम ऐसे हैं, जो उनकी जीत की आश्वस्ति प्रदान करते हैं। तय है, विदिशा संसदीय क्षेत्र में महिलाओं का ध्रुवीकरण शिवराज के पक्ष में मतदान उनकी मप्र में सबसे बड़ी जीत का आधार बन सकता है।

- (लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

RNI (JHAHIN/2016/69693) स्वत्वाधिकारी स्वदेश मीडिया नेटवर्क के लिए, मुद्रक एवं प्रकाशक मंगल प्रताप पाण्डेय द्वारा 237-बी,रोड़ न.2,अशोकनगर,रांची 834002 से प्रकाशित एवं शिवासाई पब्लिकेशन प्रा.लि. काठीटांड, (नियर टेंडर बगीचा) रातू, रांची-835222 झारखंड से मुद्रित।
प्रधान संपादक : मंगल पाण्डेय, **संपादक :** रौशन कुमार *, **विज्ञापन एवं प्रसार :** 8092174888, 9031730388, **कार्यालय:** 0651-7961780, किसी भी प्रकार के विवाद में न्यायिक क्षेत्र रांची होगा। (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेवार*)

सी-विजिल एप पर करें आदर्श आचार संहिता के उल्लंघन की शिकायत, 100 मिनट के अंदर होगी कार्रवाई

स्वदेश संवाददाता

हजारीबाग। लोकसभा चुनाव 2024 में स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव प्रक्रिया सुनिश्चित करने में आयोग के साथ साथ मतदाताओं की भी सजग भूमिका जरूरी है। जब तक मतदाता चुनाव में प्रलोभन देने के हथकंडों को आंख बंद करके यूं ही देखते रहेंगे, तब तक इस पर रोक लगाना संभव नहीं है। इसके लिए चुनाव आयोग ने तकनीक का इस्तेमाल करते हुए सी-विजिल मोबाइल एप मतदाताओं के लिए बनाया है । सी-विजिल एप के माध्यम से आम नागरिक आदर्श चुनाव आचार संहिता के

उल्लघंन की शिकायत कर सकते हैं। मोबाइल के प्ले स्टोर या एप स्टोर से सी-विजिल एप डाउनलोड कर लाइव फोटो अथवा लाइव वीडियो अपलोड कर शिकायत की जा सकती है। आदर्श आचार संहिता के उल्लघंन होने पर सी-विजिल एप में अपने मोबाइल नम्बर से लॉग इन कर आम नागरिक अपने शिकायत की सतत निगरानी भी कर सकते हैं।

क्या नाम और मोबाइल नंबर देना अनिवार्य है?

सी-विजिल एप पर शिकायत करने के लिए नाम व मोबाइल नम्बर देने की कोई बाध्यता नहीं है, परन्तु अगर शिकायतकर्ता अपना नाम व मोबाइल नम्बर देते हैं तो शिकायतकर्ता एप के माध्यम से अपनी शिकायत की निगरानी भी कर सकते हैं। अगर शिकायतकर्ता द्वारा अपना नाम एवं मोबाइल नम्बर दिया जाता है तो भी यह सार्वजनिक नहीं हो सकता है । चुनाव आयोग ने मतदाताओं से अपील की है कि वे बेखौफ होकर आयोग के "आंख नाक कान" बनकर सजक मतदाता की भूमिका निभायें ।

शिकायत का निष्पादन कैसे होता है?

शिकायत को निष्पादित करने की समयावधि 100 मिनट है। आम नागरिक द्वारा शिकायत दर्ज होने पर रिटर्निंग आफिसर द्वारा अपने नजदीक के उड़नदस्ता टीम (एफएसटी) को शिकायत स्थल पर भेजा जाता है। शिकायत की प्राथमिक तौर पर पुष्टि के बाद रिटर्निंग आफिसर के पोर्टल पर भेजा जाता है तथा रिटर्निंग आफिसर द्वारा शिकायत के निस्तारण के क्रम में निर्णय लिया जाता है ।

एप से क्या-क्या शिकायत दर्ज करा सकते हैं?

आम तौर पर सी-विजिल एप में धनराशि वितरण, गिफ्ट / कूपन वितरण, शराब वितरण, पैसा बांटने के लिए कूपन का वितरण, महिलाओं को साड़ी बांटने सहित अन्य प्रकार से प्रलोभन देने की शिकायत की जा सकती है । बिना अनुमति पोस्टर, बैनर लगाना, बिना अनुमति बैठक करना, बिना अनुमति के प्रचार में गाड़ी लगाना, धार्मिक तथा उन्मादी भाषणबाजी देकर मतदाताओं को लुभाने या डराने की भी शकियतें की जा सकती हैं ।

मृतक के परिजनों से कांग्रेस नेता मुन्ना सिंह ने किया मुलाकात

स्वदेश संवाददाता

कटकमदाग। प्रखंड के खपरियंवा पंचायत के वार्ड 02 के अजय कुमार साव, पिता पटी साव का पिछले दिन रामनवमी जुलूस से लौटने के क्रम में अज्ञात वाहन की चपेट से मृत्यु हो गई, जिसकी सूचना मिलते ही समाजसेवी मुन्ना सिंह जी उनके निवास स्थान खपरियंवा पहुंच कर उनके परिजनों से मुलाकात कर सांत्वना दिया, समाजसेवी मुन्ना सिंह जी ने कहा कि इस दुःख की घड़ी में हम आप के साथ है। मुख्य रूप से टोनी मिश्र, किशोर सावंत बबलू मिश्रा, राज कुमार साव, सुनील कुमार अशोक कुमार सुरज कुमार इत्यादि लोग उपस्थित थे।

सांसद व विधायक क्षेत्र की जनता को आश्वासन की घुट्टी पिला रही है : शशि मोहन सिंह

स्वदेशसंवाददाता

दारू (हजारीबाग)। प्रखंड के कविलाशी एवं पुनाई पंचायत के लोग जनप्रतिनिधियों से उपेक्षा का दंश झेल रहा है। बरकट्ठा विधायक व कोडरमा सांसद वोट लेने के समय बड़ी-बड़ी वादे करते हैं। ग्रामीण पूछता है कि झुमरा से बसरीया जोड़ने वाला मुख्य सड़क जो प्रखंड मुख्यालय दारू को जोड़ता है, इसमें कब तक कार्य प्रारंभ होगा। सड़क में बड़े-बड़े गड्ढे है,लगातार सड़क हादसा हो रहा है इस पर ध्यान नहीं लेकिन वोट कैसे लेना है? इन्हें पता है। इस बार वोट की चोट से जनप्रतिनिधियों को सबक सिखाएंगे। 20 सूत्री के जिला संयोजक शशि मोहन सिंह ने इस संबंध में कहा कि क्षेत्र के ग्रामीणों ने कई बार सांसद व विधायक का ध्यान आकृष्ट करवाया परन्तु सिर्फ लोगों को आश्वासन की घुट्टी पिलाई गई। इस क्षेत्र के लोग अपने आप को ठगा महसूस कर रहे हैं। सेवाने नदी पर बने पुल की हालत भी जर्जर हो चुकी है। इस पर भी किसी का ध्यान नहीं है। लोग इसका जवाब आगामी लोकसभा चुनाव में देंगे। उन्होंने कहा कि विधायक और सांसद के प्रति लोगों में भारी आक्रोश है। क्षेत्र में वर्तमान सांसद व विधायक का कार्य शुन्य रहा है। जनता इस बार इसका जवाब देगी।

रांची उलगुलान महारैली में संजीव बेदिया समेत सैकड़ों झामुमो कार्यकर्ता हुए शामिल

स्वदेश संवाददाता

बड़कागांव। रांची प्रभात तारा मैदान में आयोजित इंडिया उलगुलान महारैली में झामुमो केंद्रीय सचिव सह मुख्य संयोजक हजारीबाग संजीव कुमार के नेतृत्व व बड़कागांव झारखंड मुक्ति मोर्चा अध्यक्ष सह झारखंड श्रमिक संघ जिला सचिव संजय सिंह की संचालन में सैकड़ो कार्यकर्ता रैली में शामिल हुए। इंडिया गठबंधन जिंदाबाद हेमंत सोरेन जिंदाबाद, शिबू सोरेन जिंदाबाद झारखंड मुक्ति मोर्चा जिंदाबाद जेल का ताला टूटेगा हेमंत सोरेन छूटेगा झारखंड झुकेगा नहीं के नारों के साथ लोग रांची पहुंचे व रैली में शामिल हुए। मौके पर उपस्थित झामुमो केंद्रीय सचिव संजीव बेदिया, झामुमो केंद्रीय सदस्य सोनाराम मांझी, झामुमो प्रखंड अध्यक्ष सह झारखंड श्रमिक संघ जिला सचिव संजय सिंह,झमन प्रसाद, जिला सोशल मीडिया सदस्य संजय भुईयां, शंकर साव, प्रखंड सचिव सरोज मेहता, संजय करमाली, विवेक वर्मा, सुरेश यादव धीरेंद्र पासवान, चूरामन गंझू, पवन तुरी नंदकिशोर भुईयां, बसंत ठाकुर, दीपन साव ,राजेंद्र भुइयां आदि सैकड़ों की संख्या में महिला पुरुष झामुमो कार्यकर्ता शामिल हुए।

रामनवमी में दिखाए गए आकर्षक झांकी व जुलूस को महासमिति की ओर से किया गया पुरुस्कृत

स्वदेश संवाददाता

बड़कागांव। प्रखंड मुख्यालय में रामनवमी के निकाली गई झांकी व जुलूस शनिवार सुबह 5:00 बजे में संपन्न हो गया। सभी 12 अखाड़े के द्वारा 30 घंटे तक एक से बढ़कर एक झांकी एवं जुलूस प्रस्तुत किया गया जिसे हजारों लोगों ने अवलोकन किया। जुलूस में विधि व्यवस्था को लेकर बीडीओ जितेंद्र कुमार मंडल, अंचलाअधिकारी बालेश्वर राम, इंस्पेक्टर अनिल कुमार, थाना प्रभारी मुकेश कुमार सिंह अंतिम समय तक मॉनिटरिंग करते रहे। रामनवमी महासमिति के अध्यक्ष विवेक सोनी के नेतृत्व में झांकी एवं जुलूस का मूल्यांकन कराया गया। जिसमें मूल्यांकन कर्ता मनोज गुप्ता, विनोद सिंहा व प्रवीण कुमार के द्वारा झांकी एवं जुलूस की डेकोरेशन झांकी का संदेश, लाइटिंग, साउंड, ताशा पार्टी, शिष्टाचार, लाठी तलवार, भाला की करतब दिखलाने के अलावा अन्य चीजों की अवलोकन कर मूल्यांकन कर झांकियों को अंक दिए गए। बड़कागांव दैनिक बाजार में शनिवार रात आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य अतिथि पूर्व विधायक लोकनाथ महतो, थाना प्रभारी मुकेश कुमार सिंह, विशिष्ट अतिथि झारखंड मुक्ति मोर्चा के प्रखंड अध्यक्ष संजय सिंह व उपस्थित अतिथियों के द्वारा पुरस्कार वितरण किया गया, जिसमें संगम युवा क्लब बसरिया मोहल्ला की "ड्रग्स की गर्त में बर्बाद होता युवा" से संबंधित झांकी को प्रथम पुरस्कार दिया गया। वहीं अवतार क्लब लोहार मोहल्ला की झांकी शिव तांडव को द्वितीय पुरस्कार एवं तृतीय पुरस्कार आदर्श गुरु चट्टी रामनवमी पूजा समिति की झांकी अशोक वाटिका संवाद को पुरस्कार के लिए चुना गया। इसके अलावा लाठी भांजने तलवार की करतब दिखलाने ताशा पार्टी के अलावा अन्य बेहतर करने वाले को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। जिसमें सोनू कुमार और राजनंदिनी ने अपनी कलाकारी से लोगों का मन मोह लिया। कार्यक्रम का संचालन रितेश ठाकुर ने किया। मौके पर उपस्थित लोगों में मुख्य महासमिति अध्यक्ष विवेक सोनी, मुखिया संघ अध्यक्ष रंजीत कुमार, विशिष्ट अतिथि झामुमो प्रखंड अध्यक्ष संजय सिंह, कांग्रेसी नेता संजय तिवारी, रामसेवक सोनी, उप प्रमुख वचन देव कुमार, महासमिति कोषाध्यक्ष दिनेश सिंहा, पंसस सह मीडिया प्रभारी रितेश ठाकुर, संजय भुईंया, बसंती दुर्गा पूजा समिति अध्यक्ष अरविंद वर्मा , सुरेश राणा ,सुरेश वर्मा , प्रोफेसर कीर्ति नाथ महतो, घनश्याम जायसवाल, पिंटू गुप्ता, रवि राम, दामोदर प्रसाद मेहता, संदीप कुशवाह, रवि पासवान, सरोज सोनी, सहेश कुमार, सुरेंद्र प्रसाद सोनी, विक्रम ठाकुर, बैजनाथ महतो, रंजीत कुमार, राजा कुमार, प्रमोद कुमार, पंकज कुमार , किशोर कुमार, अनु विश्वकर्मा, सुभाष राणा, मेवालाल नाग, दीपक महतो के अलावा कई दर्जनों लोग उपस्थित थे।

प्रखण्ड टॉपर अनिकेत को मनीष जायसवाल व मनोज यादव ने समान्नित कर बढ़ाया मनोबल

स्वदेश संवाददाता

इंजीनियर बनने के सपने को करेंगे साकार, हर सभव करेंगे मदद : मनोज यादव

चौपारण। जैक बोर्ड की ओर से 19 अप्रैल को मैट्रिक बोर्ड परीक्षा का रिजल्ट जारी किया गया, जिसमें प्रखण्ड के लगभग सभी उच्च विद्यालय के छात्र छात्राओं ने उम्दा प्रदर्शन किया। वहीं प्रखण्ड के सिंहपुर में कस्तूरबा जनजागरण समिति द्वारा संचालित डॉ ललन बाबू कस्तूरबा गांधी उच्च विद्यालय सिंहपुर व मॉडर्न पब्लिक स्कूल दादपुर के मानव कुमार सिन्हा व अनिकेत कुमार सिन्हा ने मैट्रिक परीक्षा में 473 (94.60%) अंक लाकर पूरे प्रखण्ड में संयुक्तरूप से टॉपर बने। जनसम्पर्क अभियान के दौरान दादपुर आए सदर विधायक मनीष जयसवाल व बरही के पूर्व विधायक मनोज कुमार यादव ने प्रखण्ड टॉपर अनिकेत कुमार सिन्हा को मैट्रिक में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए समान्नित कर उसके हौसले को बढ़ाया। इस मौके पर विद्यालय के शिक्षकों को भी समान्नित कर उनके मनोबल को बढ़ाया। साथ ही उन्होंने कहा कि गांव के युवाओं में प्रतिभा कूट कूट कर भरी है बशर्ते उन्हें तराशने वाला सही कारीगर होने चाहिए और यहां के शिक्षक बखूबी अपनी जिम्मेवारियों को निभा रहे है। तभी विद्यालय के बच्चे अच्छे कर रहे हैं। वहीं प्रखण्ड टॉपर अनिकेत इंजीनियर बनकर देश का सेवा करना चाहता है।मौके पर भाजपा जिला महामंत्री सुनील साहू, भाजपा जिला उपाध्यक्ष राजेश सहाय, रमेश ठाकुर, जीप सदस्य राकेश रंजन, मुखिया गंदौरी दांगी, पूर्व मुखिया संघ अध्यक्ष राजदेव यादव आदि व विद्यालय अध्यक्ष अरबिंद सिन्हा, प्रभारी धीरेन्द्र सिन्हा, शिक्षक सुजीत सिन्हा, अभिनाश सिन्हा, अमित सिन्हा, अनिकेत के पिता अनुज सिन्हा सहित अन्य ग्रामीण उपस्थित थे।

हल्के तूफान से नल जल योजना का सोलर प्लेट घर में गिरा, कॉर्केट सीट टूटा

स्वदेश संवाददाता

बरकट्ठा। प्रखंड क्षेत्र के शिलाडीह पंचायत अंतर्गत ग्राम लेम्बुआ में भारत सरकार की महत्व कांक्षी योजना के तहत नल जल योजना का पानी टंकी लगाया गया है ।वहीं टंकी के ऊपर सोलर सिस्टम लगी है। शनिवार को आई हल्की तूफान से सोलर हवा में उड़ गई और इंदर ठाकुर के कोर्केट सीट के घर के ऊपर जा गिरा जिससे सीट टूट गया। वहीं सोलर प्लेट उड़ जाने से पानी नहीं मिल पा रहा है। गृह स्वामी इंदर ठाकुर ने कहा कि हम लोग गरीब हैं और सोलर प्लेट गिरने के कारण घर का छप्पर टूट गया।फिलहाल रहने में हमलोगों को दिक्कत हो रही है। बहरहाल हल्के तूफान में सोलर प्लेट का गिर जाना कहीं ना कहीं काम के गुणवत्ता पर प्रश्न चिन्ह खड़ा करता है।

चढ़ते पारा से जन जीवन अस्त-व्यस्त, 42 डिग्री तक चढ़ा पारा

स्वदेश संवाददाता

बरकट्ठा। शनिवार को 42 डिग्री तक पारा चढ़ गया। इस भयंकर गर्मी में लोग आफत भारी जिंदगी झेल रहे हैं। अप्रैल माह में गर्मी की यह बानगी है तो मई जून महीने में क्या हाल होगा, यह सोचनीय विषय है। एक ओर जहां शादी विवाह के लग्न जोरों पर है। वहीं लोग कार्य करते और आते जाते लोग गर्मी के तपिश में झुलस रहे हैं। चिलचिलाती धूप और बेतहाशा गर्मी से ताल तलैया समेत अन्य जलाशय के पानी तेजी से सुख रहे हैं। वहीं पीने के पानी उपलब्धता के लिए प्रखंड के गांवों में आधे अधूरे जलनल योजना शुरू हो पाया है। सुबह के नौ बजे से ही तेज धूप और लू के थपेड़े चलना शुरू हो जाता है। शाम के छह बजे से लोगों को थोड़ी राहत मिलती है।

श्मशान घाट सेवा समिति समाज के लिए वरदान साबित हो रहा है

रियासत हसन

अब तक लगभग 175 लोगों की अंतिम संस्कार के लिए लकड़ी मुहैया कराया

बड़कागांव। प्रखंड में संचालित श्मशान घाट सेवा समिति, समाज के लिए वरदान साबित हो रहा है। अब तक लगभग 175 शवों की अंतिम संस्कार के लिए लोगों के बीच निशुल्क लकड़ी मुहैया कराई है। पिछले कुछ वर्षों में प्रखंड में लाश जलाने के लिए लकड़ी की समस्या देखी जा रही थी । इस समस्या का समाधान के लिए श्मशान घाट सेवा समिति का निर्माण 2 वर्ष पूर्व 2022 में की गई थी। जो धरातल पर अब तक समाज के लिए बेहतर कार्य करने वाली समिति के रूप में सामने उभर कर आने लगी है।

यह समिति बड़का गांव प्रखंड के बुद्धिजीवी प्रबुद्ध जनों के द्वारा निर्माण कराया गया है। जिसमें सदस्य लोग श्मशान घाट सेवा समिति के बैंक खाते में आंशिक सहयोग राशि देकर, पुण्य के भागी बनते हैं। इसी राशि से लकड़ी की खरीदारी होती है और लोगों को अंतिम संस्कार के लिए निशुल्क लकड़ी मुहैया कराई जाती है, जिसमें कई लोग आशिक सहयोग राशि देकर पुण्य के भागी भी बनते हैं। उक्त कार्य में श्मशान घाट सेवा समिति के अध्यक्ष दिनेश कुमार सिंहा, सचिव सुभाष सिंह, केनरा बैंक मैनेजर शशि कुमार बागे, मुखिया संघ अध्यक्ष रंजीत कुमार, सुरेंद्र कुमार, बड़कागांव पूर्व रेंजर छोटेलाल साहू, पूर्व थाना प्रभारी विनोद तिर्की ,प्रवीण कुमार, पूर्व जिला परिषद सदस्य टुकेश्वर प्रसाद, वीरेंद्र प्रसाद, सहेश कुमार, संदीप कुशवाह, विष्णु रजक, मीणा महतो, नागेश्वर महतो, रमेश अग्रवाल, के अलावा कई विशिष्ट लोग श्मशान घाट सेवा समिति जुड़े हुए हैं और संस्था को सहयोग करते आ रहे हैं।

जी का जंजाल बना बरही का ट्रैफिक जाम!

बरहीवासियों को जाम से कब मिलेगी मुक्ति, शासन प्रशासन से पूछ रही है बरही की जनता!

अनुज कुमार सिंह

घण्टों घण्टा रह रहा है बरही चौक जाम, गर्मी में राहगीरों को हो रही है परेशानी

बरही। बरही को राष्ट्रीय चौराहा कहा जाता है लेकिन यह राष्ट्रीय चौराहा ट्रैफिक जाम से जूझ रहा है। यहां की ट्रैफिक व्यवस्था काफी स्लो है, जो लोगों के जी का जंजाल बनी हुई है। पुलिस प्रशासन की भी सारी नीतियां फेल हो चुकी हैं।

आर्थिक राजधानी कही जाने वाला बरही की सड़कों पर वाहनों की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। सड़कों पर वाहनों की बढ़ती संख्या के कारण लोगों को ट्रैफिक का भी सामना करना पड़ रहा है।

राष्ट्रीय चौराहा होने के कारण एम्बुलेंस, वीआईपी, वीवीआइपी लोगों का भी आवागमन इसी रास्ते से होता है। बावजूद इसके जाम की स्थिति से निपटने के लिए कोई ठोस कदम नही उठाया जा रहा है। जाम में घंटों तक फंसे लोग न केवल परेशान होते हैं, बल्कि उन्हें अपने गंतव्य स्थान पर पहुंचने में भी देरी होती है।

जाम में फंसे लोगों के समय और वाहन के ईंधन दोनों की बर्बादी होती है। इसके अलावा बढ़ते वाहनों की संख्या के चलते प्रदूषण भी बढ़ रहा है। प्रचंड गर्मी में घण्टों घण्टा बरही चौक पर लग रहे जाम से यात्री परेशान नजर आ रहे है और कोई दूसरे रास्ता को तलाश रहे है।

दादा जी रामनरेश यादव की तृतीय पुण्यतिथि पर शरबत वितरण सेवा

स्वदेशसंवाददाता

हजारीबाग। अपने दादाजी रामनरेश यादव की तीसरी पुण्यतिथि पर गौतम बुद्ध शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय मुकुंदगंज हजारीबाग के प्राचार्य डा.अरविंद कुमार यादव ने शरबत वितरण सेवा का आयोजन किया। झील परिसर स्थित प्रेस क्लब हजारीबाग के सहयोग से मुख्यद्वार के निकट रविवार को शरबत वितरण सेवा के अलावा नेशनल जर्नल "इडुनिक बुलेटिन" का विमोचन भी किया गया। यह आयोजन पितामह रामनरेश यादव स्मृति कोष, जौनपुर उत्तर प्रदेश से किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. गजेन्द्र सिंह, प्रो. मृत्यंजय सिंह, शिक्षक शिक्षाविद् सह झारखंड प्राथमिक शिक्षक संघ के कार्यकारी अध्यक्ष और गौतम बुद्ध शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय प्रबंधन समिति के उपाध्यक्ष मनोज कुमार, विशिष्ट अतिथि निशांत यदूवेन्द्र, प्रो. सत्यप्रकाश सिंह, प्रो. चेतलाल प्रसाद, डॉ. शशिकांत यादव, डॉ. परीक्षित लायक, प्रेस क्लब हजारीबाग के उपाध्यक्ष अभय सिंह कोषाध्यक्ष डॉ. अमरनाथ पाठक, कार्यकारिणी सदस्य बबलू कुमार, प्रमोद खंडेलवाल, संगीत प्राध्यापक अशोक कुमार सिन्हा, आकाशवाणी के सूरज कुमार आदि ने "इडुनिक बुलेटिन" का विमोचन किया। मौके पर संत जेवियर्स स्कूल सातवीं के छात्र आयुष्मान पाठक और विवेकानंद सेंट्रल स्कूल के छात्र सह रामनरेश यादव के प्रपौत्र अनमोल कुमार ने शरबत वितरण सेवा में भरपूर सहयोग किया।

एनडीए प्रत्याशी मनीष जायसवाल ने गोला प्रखंड के एक दर्जन पंचायतों में चलाया जनसंपर्क

स्वदेश संवाददाता

हजारीबाग। हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र में आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर सियासी पारा चढ़ने लगा है वहीं मौसम में गर्मी में भी बेतहाशा वृद्धि हो रही है। ऐसे में हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के एनडीए उम्मीदवार मनीष जायसवाल ने शनिवार को 44 डिग्री तापमान में बरही विधानसभा क्षेत्र के चौपारण में जनसंपर्क अभियान चलाया और रविवार की सुबह से ही रामगढ़ जिले के गोला प्रखंड क्षेत्र में 42 डिग्री सेल्सियस तापमान में चिलचिलाती धूप और प्रचंड गर्मी में जंगलों और पहाड़ों से घिरे पुरुलिया और बोकारो जिले के सिमाना क्षेत्र के गांव- गली-डगर में देर शाम तक पसीना बहाते हुए जनसंपर्क और जनसंवाद करते रहे। सांसद उम्मीदवार मनीष जायसवाल ने अपने जनसंपर्क और जन संवाद के दौरान आगामी 20 में को होने वाले हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के चुनाव में भाजपा के पक्ष में तीसरी बार मोदी सरकार बनाने का अपील किया। सांसद उम्मीदवार मनीष जायसवाल का गोला चौक पहुंचने पर भाजपा और राज्य के कार्यकर्ताओं ने फूल माला पहनकर गर्मजोशी से स्वागत किया। जिसके बाद गोला प्रखंड क्षेत्र के चोकाद पंचायत स्थित ग्राम चक्रवाली से अपने जनसंपर्क अभियान की शुरुआत की। तत्पश्चात खाखरा, ऊपर खाखरा, चोकाद, पतरातु, प्रखंड डुंडी गाछी, बेटूलकलां, बिसा, मुरुडीह, संग्रामपुर, अवराडीह, सुथरपुर, ऊपर बरगा, हेठ बरगा, बरलंगा बस्ती, सरगडीह, डिमरा, सोकला, सोनडिमरा, नावाडीह, हारूबेड़ा, कोराम्बे, घाघरा, छोटकी हेसल, पूरबडीह, रायपुरा, बाघाकुदर, बरियातू सहित अन्य गांवों में तुफानी जनसंपर्क अभियान चलाया। जहां हर गांव में स्थानीय लोगों ने प्रचंड गर्मी के बावजूद भी बड़ी संख्या में उपस्थित होकर मनीष जायसवाल का अभिनंदन किया और आने वाले चुनाव में पूर्ण समर्थन का भरोसा जताया । दौरे के क्रम में क्षेत्र में जनसंपर्क और जनसंवाद को संबोधित करते हुए हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र के एनडीए उम्मीदवार मनीष जायसवाल ने कहा की करीब 62 सालों तक कांग्रेस ने राज किया लेकिन गरीबों के उत्थान को एक भी योजनाओं का संचालन नहीं किया जबकि मोदी सरकार ने महज 10 सालों में गरीबों को विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं से जोड़ा बल्कि गरीबी रेखा से भी ऊपर उठाने का सकारात्मक पहल किया। कांग्रेस जिस इंडी महागठबंधन के साथ है उसमे ना नेता है, ना नियत और ना ही कोई नीति।

मौके पर विशेषरूप से गोला प्रखंड प्रमुख गीता देवी, रामगढ़ जिले के भाजपा जिला अध्यक्ष प्रवीण कुमार मेहता, आजसू के रामगढ़ जिला अध्यक्ष दिलीप दांगी, रामगढ़ के पूर्व बीजेपी जिला अध्यक्ष चंद्रशेखर चौधरी, भाजपा नेता रणंजय कुमार उर्फ़ कुंटु बाबू, राजू चतुर्वेदी, रंजन सिंह फौजी, भाजपा के बरलंगा मंडल अध्यक्ष अशोक कुमार महतो, गोला भाजपा मंडल अध्यक्ष बबलू साव, आजसू पार्टी के गोला प्रखंड अध्यक्ष अंगद महतो, आजसू नेता दिनेश कुमार महतो, जलेश्वर महतो, अशोक कुमार, रंजन चौधरी सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहें।

संक्षिप्त समाचार

अमेरिका में टिकटॉक पर लग सकता है प्रतिबंध, संसद के निचले सदन में विधेयक को मंजूरी

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी कांग्रेस (संसद) के निचले सदन प्रतिनिधि सभा ने शनिवार को एक विधेयक को मंजूरी दी। इसमें प्रावधान है कि अगर चीनी नागरिक के स्वामित्व वाले लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म टिकटॉक अपने अमेरिकी कारोबार को नहीं बेचता तो उस पर देश में प्रतिबंध लगाया जा सकता है। विधेयक में छह महीने के भीतर हिस्सेदारी बेचने की समयसीमा तय की गई है। यह विधेयक डेमोक्रेट और रिपब्लिकन दोनों दलों के भारी समर्थन से सदन में पारित हुआ। दोनों दलों ने एप के मालिक चीनी प्रौद्योगिकी फर्म बाइटांस लिमिटेड के संदर्भ में राष्ट्रीय सुरक्षा को लेकर चिंता जताई थी। इसमें संशोधित प्रावधानों को अब मंजूरी के लिए उच्च सदन सीनेट भेजा जाएगा। हालांकि, अगर कानून भी बन जाता है, तो भी कंपनी के पास खरीदार ढूंढने के लिए एक साल तक का समय होगा और वह संभवत: अदालत में संबंधित कानून को इस तर्क के साथ चुनौती दे सकती है कि यह एप के लाखों यूजर्स को उनके पहले संशोधन अधिकारों से वंचित कर देगा। अमेरिका में टिकटॉक के 17 करोड़ यूजर हैं।

ट्रम्प की आपराधिक सुनवाई अदालत के बाहर आत्मदाह करने वाले अमेरिकी व्यक्ति की मौत

न्यूयॉर्क, एजेंसी। जिस अमेरिकी व्यक्ति ने शुक्रवार दोपहर उस सड़क की दूसरी तरफ खुद को आग लगा ली थी, जहां पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप पर आपराधिक मुकदमा चल रहा था, उसकी उसी दिन मौत हो गई थी। स्थानीय मीडिया रिपोर्टों में यह जानकारी दी गई है। समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, गुमनाम कानून प्रवर्तन अधिकारियों के हवाले से रिपोर्ट में कहा गया है कि षड्यंत्र के सिद्धांत पर यकीन करने वाले मैक्स अज़ारेलो की शुक्रवार रात न्यूयॉर्क शहर के एक अस्पताल में गंभीर जलन और अन्य घावों के कारण मृत्यु हो गई। 37 वर्षीय व्यक्ति फ्लोरिडा से आया था और लोअर मैनहट्टन में कलेक्ट पॉन्ड पार्क में आत्मदाह करने से पहले इस सप्ताह न्यूयॉर्क शहर में था। 2016 में पोर्न स्टार स्टॉर्मी डेनियल्स को गुप्त धन के भुगतान को छिपाने के लिए ट्रम्प द्वारा व्यावसायिक रिकॉर्ड में हेराफेरी करने से संबंधित आपराधिक मुकदमा इस घटना से प्रभावित नहीं हुआ। जूरी चयन शुक्रवार को समाप्त हो गया और अगले सोमवार के लिए शुरुआती बयान निर्धारित किए गए हैं। मुकदमा लगभग छह से आठ सप्ताह तक चलने की उम्मीद है। ट्रम्प आपराधिक मुकदमे का सामना करने वाले पहले पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बन गए हैं।

इराक में ईरान समर्थक मिलिशिया के सैन्य अड्डे पर विस्फोट में एक की मौत, 8 घायल

बगदाद, एजेंसी। इराक में एक शक्तिशाली ईरान-सहयोगी मिलिशिया के सैन्य अड्डे पर विस्फोट में एक मिलिशिया सैनिक की मौत हो गई, वहीं आठ अन्य के घायल होने की खबर है। इराक की आधिकारिक समाचार एजेंसी आईएनए के अनुसार, सुरक्षा मीडिया सेल ने कहा कि इराक के बाबिल प्रांत के कैंप कलसू में इराकी सुरक्षा बलों और पॉपुलर मोबिलाइजेशन यूनिट्स के आवासीय परिसर में शनिवार तड़के विस्फोट और आग लगने से ये मौत हुई। विस्फोट और आग के कारणों की जांच के लिए एक समिति का गठन किया गया है, प्रारंभिक निष्कर्षों का हवाला देते हुए कहा गया है कि घटना के पीछे सैन्य कार्रवाई थी। हालांकि एक इराकी सुरक्षा अधिकारी ने पहले कहा था कि कलसू बेस पर मिसाइलों या ड्रोन से हमला किया गया था। बाबिल सुरक्षा समिति के प्रमुख मुहानेद अल-एनाजी ने टेलीविजन पर प्रसारित टिप्पणी में कहा कि हमले से उस स्थान पर आग लग गई जहां पीएमयू और इराकी सुरक्षा बलों की ब्रिगेड रहती हैं। अधिकारी ने कहा कि आग बुझा दी गई है। हमला ड्रोन से या मिसाइलों से किया गया, इसको लेकर जांच चल रही है, इस बात की भी जांच की जा रही है कि इस घटना के पीछे कौन है। यह कथित हमला इस्लामी गणतंत्र की कुछ परमाणु सुविधाओं वाले ईरानी प्रांत इस्फ़हान में एक संदिग्ध इजरायली हमले के एक दिन बाद हुआ। ईरान समर्थक मिलिशिया समूह ने बाबिल में हमले के पीछे इजरायल का हाथ होने का आरोप लगाया है। इराक में स्वयंभू इस्लामी प्रतिरोध ने शनिवार को हमले के जवाब में दक्षिणी इजरायली तटीय शहर इलियट पर एक महत्वपूर्ण लक्ष्य पर ड्रोन से हमला करने का दावा किया।

इस्राइल को अमेरिका से मिली सैन्य मदद के बाद टली जंग की संभावना, ईरान ने भी पीछे खींचे हाथ

वॉशिंगटन/यरुशलम, एजेंसी। दुनिया के कई देश युद्ध में घिरे हुए हैं। जहां रूस-यूक्रेन जंग को दो साल से ज्यादा का वक्त हो चुका है, वहीं हमास और इस्राइल बीते छह महीने से लड़ाई लड़ रहे हैं। इस बीच ईरान और इस्राइल के बीच भी जंग छिड़ती दिख रही थी। हालांकि, अब युद्ध की संभावना कम हो गई है। इसका कारण यह है कि इस्राइल के बचाव में उसका जिगरी दोस्त अमेरिका उतर आया है। अमेरिकी सांसदों ने शनिवार को इस्राइल के लिए नई सैन्य सहायता की मंजूरी दी है।

वेस्ट बैंक में संघर्ष तेज

बताया जा रहा है कि ईरान ने इस्राइल से बदला लेने के लिए कुछ कदम पीछे ले लिए हैं। उसने ड्रोन और मिसाइल हमले में कमी कर दी है। इस कदम ने उन आशंकाओं को कम दिया है कि कट्टर दुश्मनों के बीच बढ़ते हमले मध्य पूर्व में एक जंग में बदल सकते हैं। हालांकि, इराक में हाल ही में ईरान समर्थित सैन्य ठिकानों पांच धमाके हुए। इससे क्षेत्र में तनाव देखने को मिला। वहीं, गाजा में इस्राइल लगातार हमला कर रहा है। इससे वेस्ट बैंक में संघर्ष तेज हो गया है।

13 अरब डॉलर को मंजूरी

अमेरिका के निचले सदन हाउस ऑफ रिप्रजेंटेटिव ने आयरन डोम वायु रक्षा प्रणाली सहित इस्राइल की सुरक्षा को मजबूत करने के उद्देश्य से मदद करने का फैसला लिया। इसलिए उसने इस्राइल के लिए नई सैन्य सहायता के लिए 13 अरब डॉलर को मंजूरी दी।

नेतन्याहू ने किया सहायता का स्वागत

इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने सैन्य सहायता का स्वागत किया। उन्होंने एक्स पर कहा कि यह इस्राइल के लिए मजबूत द्विदलीय समर्थन प्रदर्शित करता है और पश्चिमी सभ्यता का बचाव करता है।

फलस्तीनी ने किया विरोध

हालांकि, फलस्तीनी राष्ट्रपति ने इसकी निंदा की।फलस्तीनी राष्ट्रपति महमूद अब्बास के प्रवक्ता नबिल अबू रुदैना ने कहा कि यह सहायता गाजा पट्टी और वेस्ट बैंक में हजारों मासूमों की जान लेने का कारण बनेगी।

बंधकों की रिहाई और चुनावों की मांग को लेकर हजारों इजरायलियों ने विरोध प्रदर्शन किया

तेल अवीव, एजेंसी। इजरायल में हजारों लोग गाजा में बंधक बनाए गए सभी बंधकों की तत्काल रिहाई और नए चुनावों की मांग को लेकर सड़कों पर उतर आए हैं। तेल अवीव में शनिवार शाम को एक सामूहिक रैली में लोगों ने जोर-शोर से फिलिस्तीनी तटीय क्षेत्र में इजरायल से अगवा किए गए सभी लोगों की तत्काल रिहाई के साथ-साथ नए चुनावों की मांग की। प्रदर्शनकारियों ने प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की ओर इशारा करते हुए कहा कि जिन्होंने उन्हें त्याग दिया है उसे उन्हें घर लाना होगा। अपहृत लोगों के परिजनों ने इजरायली सरकार पर फिलिस्तीनी इस्लामी संगठन हमास के साथ समझौते पर पहुंचने में कोई गंभीर रुचि नहीं होने का आरोप लगाया है। इजरायल और हमास महीनों से युद्धविराम और 7 अक्टूबर को अगवा किए गए अन्य बंधकों की रिहाई के बारे में अप्रत्यक्ष रूप से बातचीत कर रहे हैं। फिलहाल कोई सफलता नजर नहीं आ रही है।शनिवार शाम को तटीय शहरों तेल अवीव और हाइफा में हजारों लोगों ने और बेर्शेबा शहर में सैकड़ों लोगों ने विरोध प्रदर्शन किया। कथित तौर पर कैसरिया में प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के एक निजी विला के पास एक हजार से अधिक लोग एकत्र हुए थे। अन्य इजरायली शहरों में भी रैलियां हुईं। कुछ हफ्ते पहले तक, इजरायल ने मान लिया था कि बचे हुए 130 बंधकों में से 100 से भी कम अभी भी जीवित हैं। हालांकि, अब यह आशंका है कि उनमें से काफी अधिक लोग मारे जा सकते हैं।

न्यूयॉर्क में बोले ईरान के विदेश मंत्री, पश्चिम एशिया में तनाव कम हो

न्यूयॉर्क, एजेंसी। इजरायल और ईरान के बीच जारी जैसे को तैसा कार्रवाइयों के बीच ईरान के विदेश मंत्री हुसैन अमीरबदोल्लाहियान ने पश्चिम एशिया में तनाव कम करने की वकालत की है। न्यूयॉर्क में शनिवार को ईरानी मीडिया से रू-ब-रू होते हुए उन्होंने यह बात कही। अमीरबदोल्लाहियान ने कहा युद्ध और सैन्य तनाव से क्षेत्र में किसी भी पक्ष को कोई फायदा नहीं है, इसलिए मौलिक समाधान ढूंढे जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी पक्षों को राजनीतिक समाधान पर ध्यान देने की जरूरत है। अमीराबदोल्लाहियान ने अमेरिका की यात्रा के अंत में कहा कि इजरायल को क्षेत्र में अपने युद्ध अपराध बंद करने होंगे। इसके बाद गाजा संघर्ष में मानवीय सहायता और कैदियों के लिए बंधकों की अदला-बदली संभव हो जाएगी।संयुक्त राष्ट्र के कई सत्रों में शामिल होने के लिए न्यूयॉर्क दौरे पर आए अमीरबदोल्लाहियन ने इस बात पर जोर दिया कि ईरान शुक्रवार को अपने मध्य इस्फ़हान प्रांत में सैन्य ठिकानों पर हुए हमलों पर जवाबी कार्रवाई नहीं करेगा। इस हमले के लिए उसने इज़रायल को जिम्मेदार ठहराया है। अमीराबदोल्लाहियान के हवाले से कहा गया, इस्फ़हान के पास मार गिराए गए छोटे ड्रोन से न तो कोई क्षति हुई और न ही कोई हताहत हुआ। विदेश मंत्री ने हमलों को इजरायल समर्थक मीडिया द्वारा इजरायल का सैन्य प्रभुत्व दिखाने का प्रयास बताया।

बताया जाता है कि उन्होंने कहा था, गिराए गए छोटे ड्रोन उन खिलौनों की तरह थे जिनसे हमारे बच्चे खेलते हैं। लेकिन उन्होंने चेतावनी दी कि ईरान वास्तविक इज़रायली हमले का जोरदार और दृढ़ता से जवाब देगा। इस्फ़हान पर शुक्रवार के हमले, जहां ईरान के परमाणु हथियार उद्योग के प्रमुख स्थल हैं, को व्यापक रूप से पिछले सप्ताहांत में इजरायली क्षेत्र पर ईरानी ड्रोन और मिसाइलों द्वारा बड़े पैमाने पर हमले की प्रतिक्रिया के रूप में देखा गया है। उस हमले को 1 अप्रैल को ईरानी दूतावास परिसर पर हुए हमले की प्रतिक्रिया के रूप में देखा गया था, जिसका श्रेय इज़रायल को दिया गया है।

आर्थिक तंगी: पाकिस्तान ने एक सप्ताह के भीतर उधार लिए 657 अरब रुपये

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान गंभीर आर्थिक तंगी से जूझ रहा है। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की सरकार बनने के बाद बीते एक हफ्ते में पाकिस्तान 657 अरब रुपये उधार ले चुका है। भारत का यह पड़ोसी ओवरऑल अब तक लाखों करोड़ रुपये का ऋण ले चुका है।

आर्थिक संकट से जूझ रहे प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के नेतृत्व वाली पाकिस्तान सरकार ने एक सप्ताह के भीतर बैंकों से 657अरब पाकिस्तानी रुपया उधार लिया है। यह खुलासा डॉन ने शनिवार को अपनी रिपोर्ट में दी। यह कर्ज सरकार ने अपने बढ़ते खर्चों को पूरा करने के लिए लिया है। स्टेट बैंक ऑफ पाकिस्तान (एसबीपी) के आंकड़ों से पता चला है कि वाणिज्यिक बैंकों से सरकार की उधारी 1 जुलाई 2023 से 5 अप्रैल 2024 तक रिकॉर्ड 5.5 लाख करोड़ पाकिस्तानी रुपये तक पहुंच गई है।वहीं, 13 अप्रैल को एसबीपी की रिपोर्ट के अनुसार वाणिज्यिक बैंकों से सरकार की उधारी 4.8 लाख करोड़ थी। इससे पता चलता है कि एक सप्ताह के दौरान सरकार ने करीब 657 अरब पीकेआर का उधार लिया। डॉन के अनुसार यह भारी उधारी अर्थव्यवस्था पर अत्यधिक बोझ डाल रही है। वित्तीय विशेषज्ञों का मानना है कि आईएमएफ के साथ नया समझौता पाकिस्तान के लिए अंतरराष्ट्रीय बाजार से उधार लेने का रास्ता खोल सकता है। साथ ही जून 2024 के अंत तक उधारी 7 लाख करोड़ तक पहुंच सकती है।

प्रशिक्षण के दौरान हादसे का शिकार हुए दो सैन्य हेलीकॉप्टर, क्रैश में एक की मौत, सात लापता

टोक्यो, एजेंसी। शनिवार देर रात दो जापानी मिलिट्री हेलीकॉप्टर प्रशिक्षण के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो गए। जिसमें अब तक एक का शव बरामद हुआ है, अन्य सात लोग लापता हैं। हालांकि अब तक दोनों हेलीकॉप्टर के दुर्घटनाग्रस्त होने का कारण पता नहीं लग पाया है। वहीं लापता सात लोगों की खोज जारी है।

जापान के दो हेलीकॉप्टर रात में प्रशांत महासागर के इजू द्वीप पर पनडुब्बियों का मुकाबला करने का अभ्यास कर रहे थे। टोरीशिमा द्वीप के पास रात 10:38 के आसपास एक हेलीकॉप्टर से संपर्क टूट गया, उसके कुछ क्षणों बाद ही विमान से एक आपातकालीन सिग्नल प्राप्त हुआ। इसके लगभग 25 मिनट बाद करीबन 11:04 पर इसी क्षेत्र में प्रशिक्षण कर रहे दूसरे विमान से भी संपर्क टूट गया। जापान के आत्मरक्षा बल (एसडीएफ) के एक प्रवक्ता ने एएफपी को शनिवार देर रात की घटना की पुष्टि की और कहा कि एक व्यक्ति को बचाया गया था, लेकिन उसकी मौत हो गई।

रक्षामंत्री माइनोरू किहारा का कहना है कि समुद्र में विमान का हिस्से देखे गए हैं। जिससे अंदाजा लगाया जा रहा है कि दोनों दुर्घटनाग्रस्त हुए। हालांकि अब तक दुर्घटना का सही कारण नहीं पता चल पाया है, हमारी प्राथमिकता लोगों को बचाना है। एक चालक दल के सदस्य को बचाया गया था, लेकिन उपचार के दौरान उसकी भी मौत हो गई। लापता अन्य सात लोगों की खोज जारी है।

मैरीटाइम सेल्फ-डिफेंस फोर्स ने कहा कि आस-पास के जल क्षेत्र में कोई अन्य विमान या जहाज नहीं था, इसलिए घटना में किसी अन्य देश की संलिप्ता की संभावना नहीं है।

पहले भी हो चुके हैं हादसे

पिछले साल अप्रैल में एक सेना के हेलीकॉप्टर का दक्षिणी ओकिनावा में मियाको द्वीप पर एक्सीडेंट हो चुका है। इसमें 10 लोग सवार थे, जिसमें दो पायलट, दो मैकेनिक और एक सेना जनरल और अन्य सवार थे। इनमें से एक भी जीवित नहीं बचा।

वहीं जनवरी 2022 में भी एक लड़ाकू जैट मध्य इशिकावा में पानी में क्रैश हुआ था। इसमें बैठे दो पायलट की मौत हो गई थी। यही नहीं 2019 में एक स्टील्थ जेट का प्रशिक्षण मिशन पर उत्तरपूर्वी जापान से उड़ान भरने के बाद समुद्र में क्रैश हुआ।

पिछले साल नवंबर में अमेरिकी सेना का एक ऑस्प्रे सैन्य विमान जापान के पास दुर्घटनाग्रस्त हुआ, जिसमें सवार सभी आठ लोगों की मौत हो गई थी।

जापान रक्षा पर बढ़ा रहा है खर्चा

जापान इन दिनों देश की सुरक्षा के पर खास ध्यान दे रहा है। लगातार संयुक्त राज्य अमेरिका, एशिया के कई देशों के साथ अपने संबंध सुधारने में लगा हुआ है। सूत्रों की मानें तो इन दिनों चीन की आक्रामता और उत्तर कोरिया के कारण जापान अपनी सुरक्षा व्यव्यस्था पर खर्च बढ़ा चुका है।

लंदन मेयर पद की दौड़ में शामिल हुआ दिल्ली में जन्मा यह शख्स, पाकिस्तानी मूल के सादिक खान को देंगे चुनौती

लंदन, एजेंसी। इंग्लैंड के लंदन में मेयर पद पर पाकिस्तान मूल के सादिक खान तीसरी बार जीत हासिल करने के लक्ष्य के साथ चुनाव लड़ रहे हैं। हालांकि, इस बार उन्हें भारतीय मूल के एक उम्मीदवार से चुनौती मिलने वाली है। इनका नाम है तरुण गुलाटी। दिल्ली में जन्मे तरुण का कहना है कि लंदन के नागरिकों को सभी राजनीतिक पार्टियों ने दुखी किया है। उन्होंने आगे कहा कि वह लंदन को अनुभवी सीईओ की तरह चलाना चाहते हैं, जिससे सभी को लाभ मिल सके। उनका मानना है कि एक व्यवसायी और निवेश विशेषज्ञ के रूप में उनका अनुभव लंदन को लाभ पहुंचाने में मददगार साबित होगा।

निर्दलीय चुनाव लड़ रहे हैं तरुण गुलाटी

दो मई को होने वाले मेयर चुनाव में 63 वर्षीय भारतीय मूल के तरुण गुलाटी निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव में उतरेंगे। मेयर पद के लिए उनकी लड़ाई 13 अन्य उम्मीदवारों से होने वाली है। तरुण गुलाटी ने कहा, मैं लंदन को एक अनोखे वैश्विक शहर के तौर पर देखता हूं। यह विश्व के वैश्विक बैंक की तरह है, जहां दुनियाभर के लोग एकत्रित होते हैं।

अपने संबोधन में उन्होंने आगे कहा, मेयर के तौर पर मैं लंदन की बैलेंस शीट इस तरह से तैयार करूंगा कि यह निवेश के लिए एक प्रमुख विकल्प बन सके। इसमें सभी निवासियों के लिए सुरक्षा और समृद्धि सुनिश्चित हो। मैं एक अनुभवी सीईओ की तरह लंदन को प्रभावी ढंग से बदलूंगा। यहां लाभप्रदत्ता का मतलब सभी के लिए लाभ होगा। इस यात्रा में आप सभी शामिल होंगे। इसे अपने लंदन और अपने घर के लिए करें। लंदन की सड़कों में सुरक्षा उनके मुख्य एजेंडा में प्रमुख है। लेबर पार्टी के मौजूदा नेता सदिक खान की कुछ अलोकप्रिय नीतियों को खत्म करना भी तरुण गुलाटी का प्रमुख एजेंडा है। सादिक खान की इन नीतियों में अल्ट्रा लो एमिशन जोन (यूएलईजेड) शुल्क और लो ट्रैफिक नेबरहुड (एलटीएन) से जुड़ी उच्च लागत को खत्म करना शामिल है। तरुण गुलाटी ने कहा, हम यूएलईजेड, एलटीएन जैसी खराब नीतियां नहीं चाहते हैं। जलवायु परिवर्तन हो रहा है और हमें इसके प्रभावों को कम करने की जरूरत है। हमें जो भी परिवर्तन करना होगा, वह जनता की राय के अनुरूप होना चाहिए।तरुण गुलाटी ने मेयर पद के लिए कंजर्वेटिव पार्टी के उम्मीदवार सुजैन हॉल पर भी निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि कई वर्षों तक लंदन असेंबली के सदस्य होने के बावजूद वह इन नीतियों को रोकने में नाकाम रही हैं। उन्होंने आगे कहा, अगर राजनीतिक उम्मीदवार वह करते जो उन्हें करना चाहिए था, तो मैं मेयर पद की दौड़ में कभी शामिल नहीं होता। तरुण गुलाटी किफायती आवासीय व्यवस्था, लंदन में पर्यटन को बढ़ावा देना, मुफ्त स्कूल भोजन सुनिश्चित करना और काउंसिल टैक्स को कम करने जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

क्या डीपफेक के शिकार हो गए सिंगापुर के विदेश मंत्री? चिट्ठी में मिली फर्जी तस्वीरें और वसूली की धमकी

सिंगापुर, एजेंसी। सिंगापुर में भारतीय मूल के विदेश मंत्री विवियन बालाकृष्णन को धमकी भरा पत्र मिला है। इसमें उनकी कुछ तस्वीरें भी हैं, जिनसे छेड़खानी की गई है। इस धमकी भरे खत में वसूली की बात भी लिखी गई है। एएनआई की रिपोर्ट के मुताबिक बालाकृष्णन ने कहा है कि उन्हें और कई अन्य सांसदों को ऐसे पत्र मिले हैं, जिनमें धमकी के साथ फर्जी तस्वीरें भेजी गई हैं। विदेश मंत्री ने कहा है कि इस मामले में पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है और अब कानूनी कार्रवाई की तैयारी है।

सिंगापुर पुलिस ने क्या कहा? : इस मामले में पुलिस का कहना है कि विदेश मंत्री और अन्य सांसदों को डाक पत्रों के माध्यम से तस्वीरें भेजी गई हैं। तस्वीरों में कुछ चेहरे दिख रहे हैं, जो कथित तौर पर अंतरंग स्थिति को दर्शा रहे हैं। पुलिस के अनुसार मार्च से लेकर अब तक ऐसी 70 से अधिक रिपोर्ट्स दर्ज की जा चुकी हैं। पत्रों में कुछ ई-मेल एड्रेस दिए गए हैं और लिखा गया है कि अगर ई-मेल पर संपर्क नहीं किया गया, तो इसके परिणाम बुरे होंगे। पुलिस का कहना है कि जब पीड़ितों द्वारा ई-मेल पर संपर्क किया जाता है, तो उनसे बैंक अकाउंमट में रुपये ट्रांसफर करने के लिए कहा जाता है। साथ ही यह धमकी भी दी जाती है कि अगर रुपये ट्रांसफर नहीं किए तो तस्वीरों को सोशल मीडिया पर शेयर कर दिया जाएगा।

विदेश मंत्री ने जताई डीपफेक की आशंका : सिंगापुर के विदेश मंत्री बालकृष्णन का कहना है कि आजकल डीपफेक के मामले चल रहे हैं और सभी को मिलकर इसके खिलाफ सख्त एक्शन लेने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि उनकी फोटो के साथ छेड़छाड़ की गई है और इसके बाद उन्हें भी वसूली की धमकी दी गई। विदेश मंत्री के अनुसार आसान टूल्स के साथ कोई भी कुछ ही मिनटों में डीपफेक सामग्री बना सकता है। इसलिए यह एक महत्वपूर्ण खतरा पैदा कर सकता है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है और देखना है कि आगे क्या होता है।

अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन अगले सप्ताह जाएंगे चीन, इन अहम मुद्दों पर करेंगे चर्चा

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी विदेश विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि एंटनी ब्लिंकन जैसा हमेशा करते हैं, वैसा ही इस बार करेंगे। वह सीधे रूप से द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर अमेरिका की चिंताओं पर बात करेंगे।

अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन जल्द ही चीन का दौरा करने वाले हैं। इसकी जानकारी देते हुए अमेरिकी विदेश विभाग ने बताया कि ब्लिंकन 24 से 26 अप्रैल तक चीन की यात्रा पर रहेंगे। विदेश विभाग का कहना है कि ब्लिंकन शंघाई और बीजिंग में चीनी अधिकारियों के साथ द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर चर्चा करने के लिए मिलेंगे। इस दौरान मध्य पूर्व संकट, यूक्रेन के खिलाफ रूस का युद्ध, क्रॉस-स्ट्रेट मुद्दे और दक्षिण चीन सागर पर भी बात होगी।

इन मुद्दों पर भी होगी बात

एक बयान में कहा गया, विदेश मंत्री नवंबर में वुडसाइड शिखर सम्मेलन में राष्ट्रपति बाइडन और शी द्वारा किए गए प्रतिबद्धताओं को पूरा करने के लिए चल रहे कार्यों पर भी चर्चा करेंगे, जो कि काउंटरनार्कोटिक्स सहयोग, सैन्य-से-सैन्य संचार, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और लोगों के बीच संबंधों को मजबूत करने पर है।

यह लोग भी रहेंगे मौजूद

विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन के साथ सार्वजनिक कूटनीति और सार्वजनिक मामलों की अवर सचिव लिज एलेन, पूर्वी एशियाई और प्रशांत मामलों के ब्यूरो के सहायक सचिव डैनियल क्रिटेनब्रिंक, अंतरराष्ट्रीय नारकोटिक्स और कानून प्रवर्तन मामलों के ब्यूरो के सहायक सचिव टॉड रॉबिन्सन और साइबरस्पेस और डिजिटल नीति के लिए बड़े पैमाने पर राजदूत नथानिएल फिक भी होंगे।

महत्वपूर्ण मुद्दों पर काम करना लक्ष्य

विदेश विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, मंत्री की यात्रा निश्चित रूप से अमेरिका-चीन संबंधों को मजबूत करने के लिए होगी। वहीं, यह यात्रा पिछले एक साल में हमारी गहन कूटनीति पर आधारित होगी। सबसे पहले महत्वपूर्ण मुद्दों पर काम करना लक्ष्य है। हमारा मानना है कि उच्च स्तरीय कूटनीति हमें उन मुद्दों पर आगे बढ़ने के लिए दबाव डालने की अनुमति देती है जो अमेरिकी लोगों और दुनिया के लिए मायने रखते हैं और जहां पीआरसी के साथ सीधा जुड़ाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

हमेशा की तरह इस बार भी हमारे हितों के लिए बोलेंगे

उन्होंने आगे कहा कि विदेश मंत्री जैसा हमेशा करते हैं, वैसा ही इस बार करेंगे। वह सीधे रूप से द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक मुद्दों पर अमेरिका की चिंताओं पर बात करेंगे। वह हमारे मूल्यों और हमारे हितों के लिए बोलेंगे।

संक्षिप्त समाचार

जुड़वा बच्चों को जन्म देने वाली थी पत्नी, पति ने बेड से बांधकर लगा दी आग

अमृतसर, एजेंसी। पंजाब में एक गर्भवती महिला की हत्या का भयावह मामला सामने आया है। रिपोर्ट के मुताबिक, पत्नी से बहस होने पर गुस्से में आकर पति ने उसे आग लगाकर मार डाला। पुलिस ने बताया कि 23 वर्षीय महिला छह महीने की गर्भवती थी। बताया जा रहा है कि उसे जुड़वा बच्चे होने वाले थे। आग से वह इतना ज्यादा झुलस गई कि मौके पर ही उसकी मौत हो गई। पुलिस अधिकारी ने कहा कि कपल के बीच शुक्रवार को किसी बात को लेकर तीखी बहस हुई थी। आदमी गुस्से से आग बबूला हो गया और पत्नी को बेड से बांध दिया। इसके बाद उसने आग लगा दी। रिपोर्ट के मुताबिक, यह घटना शुक्रवार को अमृतसर के पास बुल्लेनांगल गांव की है। पुलिस अधिकारियों ने कहा, सुखदेव और पिंकी के बीच तनावपूर्ण संबंध थे। वे अक्सर अलग-अलग बातों को लेकर झगड़ते रहते थे। शुक्रवार को भी उनके बीच तीखी बहस हुई जिसके बाद सुखदेव ने पिंकी की हत्या कर दी और फिर वहां से भाग गया। बता दें कि घटना के बाद से फरार चल रहे सुखदेव को पुलिस ने शनिवार देर शाम गिरफ्तार कर लिया। पुलिस अधिकारियों ने कहा कि मामला दर्ज कर लिया गया है। उन्होंने यह भी बताया कि आगे की जांच जारी है। राष्ट्रीय महिला आयोग ने इस घटना को लेकर पंजाब पुलिस से विस्तृत रिपोर्ट मांगी है। महिला पैनल की ओर से एक्स पर कहा गया, अमृतसर में हुई भयावह घटना से स्तब्ध हैं। यहां एक व्यक्ति ने अपनी गर्भवती पत्नी को आग लगा दी। इस तरह की क्रूरता अकल्पनीय है। एनसीडब्ल्यू अध्यक्ष एनसीडब्ल्यू रेखा शर्मा ने अपराधी को गिरफ्तार करने को लेकर डीजीपी पंजाब को पत्र लिखा।

अब ममता ने इंडिया गठबंधन के मेनिफेस्टो पर लगाया अड़ंगा, जाति जनगणना पर टीएमसी की आपत्ति

कोलकाता, एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चुनावी रथ को रोकने के लिए तैयार इंडिया गठबंधन के सभी घटक दलों के बीच सीट शेयरिंग पर तो आम सहमति नहीं बन सकी, हालांकि अब साझा घोषणापत्र जारी करने पर विचार किया जा रहा है। वह भी ऐसे समय में जब पहले चरण की वोटिंग खत्म हो चुकी है। इंडिया गठबंधन में आम सहमति बनने में सबसे बड़ी बाधा पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और टीएमसी सुप्रीमो ममता बनर्जी बन रही हैं। सूत्रों का कहना है कि टीएमसी प्रमुख को मतदाताओं के सामने विपक्ष के वादों को पूरा करने के लिए एक न्यूनतम आम सहमति दस्तावेज पेश करने की तात्कालिकता पर जोर देकर अपने साथ लाने की कोशिशें जारी हैं। आपको बता दें कि टीएमसी ने आगे बढ़कर बंगाल में लेफ्ट के साथ गठबंधन से साफ इनकार कर दिया था। इतना ही नहीं, कांग्रेस के लिए भी सिर्फ एक या दो सीटें छोड़ी थी। सूत्रों ने कहा कि टीएमसी ने संयुक्त दस्तावेज में जाति आधारित जनगणना को शामिल करने पर आपत्ति जताई है। आपको बता दें कि कांग्रेस के घोषणा पत्र में इसे प्रमुखता से शामिल किया गया है। टीएमसी ने इंडिया गठबंधन के उस वादे पर फिर से आपत्ति जता दी है जिसमें कहा गया है कि अगर सत्ता में आती है, तो ओबीसी के साथ-साथ अन्य समुदायों की आबादी निर्धारित करने के लिए राष्ट्रव्यापी गणना कराया जाएगा। सूत्रों ने कहा कि टीएमसी संयुक्त दस्तावेज को लेकर अधिक उत्सुक नहीं दिखाई दे रही है। जाति जनगणना का बहाना बनाकर इसे रोकने की कोशिश की जा रही है। इस सबके बीच ममता बनर्जी ने शनिवार को एक बार फिर कांग्रेस और सीपीएम पर पश्चिम बंगाल में बीजेपी के साथ मिलीभगत का आरोप लगाया। ममका मे कहा, मैंने इंडिया नाम गढ़ा था, लेकिन इंडिया का अस्तित्व बंगाल में नहीं है। सूत्रों ने कहा कि जाति जनगणना के बिना दस्तावेज जारी करने का कोई मतलब नहीं है क्योंकि यह कांग्रेस के घोषणापत्र का एक प्रमुख मुद्दा है। टीएमसी को छोड़कर गठबंधन में सभी दल इस पर एकमत है। ऐसे में इस विकल्प पर भी चर्चा की जा रही है रि टीएमसी के समर्थन के बिना घोषणापत्र पेश किया जा सकता है। संयुक्त दस्तावेज में कांग्रेस द्वारा अपने घोषणापत्र में किए गए कुछ प्रमुख प्रमुख वादे होने की भी संभावना है।

केदारनाथ हेली सेवा जून तक फुल, बदरीनाथ, गंगोत्री-यमुनोत्री चारधाम को 11 लाख से ज्यादा रजिस्ट्रेशन

नईदिल्ली, एजेंसी। केदारनाथ धाम के लिए हेली सेवा बुकिंग शुरू हो गई है। पहले दिन शाम चार बजे तक 51 हजार 940 टिकट बुक हो गए थे। मई-जून महीने के सारे टिकट पहले दिन देर शाम तक ही बुक हो गए। बदरीनाथ, गंगोत्री-यमुनोत्री समेत चारों धामों के लिए 11 लाख से ज्यादा तीर्थ यात्रियों ने ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कराया है। विदित हो कि चारधाम रजिस्ट्रेशन 15 अप्रैल से शुरू हो गया था। फर्जीवाड़ा और हेली कंपनियों की मनमानी रोकने लिए उत्तराखंड नागरिक उड्डयन विकास प्राधिकरण (यूकाडा) ने लगातार दूसरे साल ऑनलाइन टिकट बुकिंग की जिम्मेदारी इंडियन रेलवे कैटरिंग एंड टूरिज्म कॉरपोरेशन (आईआरसीटीसी) को दी है। कंपनी ने शनिवार दोपहर 12 बजे से बुकिंग शुरू की। गत वर्ष एक-एक सप्ताह के स्लॉट पर बुकिंग की गई थी, लेकिन इस बार एक साथ 10 मई से 20 जून और फिर मानसून के बाद 15 सितंबर से 31 अक्तूबर तक की बुकिंग खोली। मई-जून के करीब 25 हजार टिकट देर शाम तक फुल हो गए। यूकाडा के सीईओ सी रविशंकर ने बताया कि इस बार भी केदारघाटी के तीन हेलीपैड के जरिए नौ हेली कंपनियां सेवाएं देंगी। पिछले सीजन में केदारनाथ में हुई हेली दुघर्टना के बाद प्रतिबंधित क्रेस्टल एविएशन भी इसमें शामिल है। डीजीसीए ने कंपनी को सिरसी हेलीपैड से उड़ान संचालन की अनुमति दे दी है।

अधिक वजन पर अतिरिक्त चार्ज : वेबसाइट पर बुकिंग की शर्तें स्पष्ट कर दी गई हैं। एक आईडी पर छह यात्रियों के लिए ही टिकट बुक हो पाएगा। दो साल से अधिक उम्र के बच्चे का पूरा टिकट लगेगा। इससे कम उम्र के बच्चे का टिकट तो नहीं लगेगा, लेकिन बच्चे का वजन, किसी एक अभिभावक के साथ जोड़ा जाएगा, ऐसी स्थिति में यदि वजन 80 किलो के पार गया तो फिर प्रति किलो 150 रुपये का अतिरिक्त चार्ज देना होगा।

चारधाम दर्शन को अब तक 11 लाख से ज्यादा रजिस्ट्रेशन : उत्तराखंड चारधाम यात्रा सीजन में दर्शन के लिए अब तक 11 लाख से ज्यादा श्रद्धालुओं ने रजिस्ट्रेशन करवा लिया है। इनमें सबसे ज्यादा रजिस्ट्रेशन केदारनाथ मंदिर के लिए हुए हैं। इस साल यात्रा के लिए रजिस्ट्रेशन पंद्रह अप्रैल से शुरू हुआ था। पर्यटन विभाग के अनुसार शनिवार को 78 हजार 857 लोगों ने रजिस्ट्रेशन कराया है। आज भी सबसे ज्यादा रजिस्ट्रेशन केदारनाथ के लिए ही हुए हैं।

अब तक रजिस्ट्रेशन

यमुनोत्री	205561
गंगोत्री	214302
केदारनाथ	383159
बदरीनाथ	326677
हेमकुंट साहिब	15315

चारों धामों के कपाट खुलने की तारीख

श्री केदारनाथ धाम	10 मई
श्री बदरीनाथ धाम	12 मई
श्री गंगोत्री धाम	10 मई
श्री यमुनोत्री धाम	10 मई
श्री हेमकुंड साहिब धाम	25 मई

हेली किराया

गुप्तकाशी से	8126
फाटा से	5774
सिरसी से	5772

(किराया रुपये प्रति व्यक्ति आना-जाना)

पहला चरण चार सौ पार का पहला पड़ाव-राजनाथ सिंह

नईदिल्ली, एजेंसी। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह का दृढ़ मत है कि गुजरे शुक्रवार को हुआ पहले चरण का मतदान राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) के 'चार सौ पार' के लक्ष्य का शुरुआती लेकिन अहम पड़ाव साबित होगा। वे शनिवार की सुबह अपने आधिकारिक आवास पर औपचारिक बातचीत कर रहे थे। राजनाथ सिंह ने कहा, 'हमारे पास पुख्ता जानकारी है कि मतदान करते समय, मतदाता ने मोदी जी के काम और नाम पर भरोसा जताया है- वे आगे जोड़ते हैं। 'इस बार तो मतदान का आंकड़ा गिरा है! उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और बिहार इस मामले में अव्वल रहे हैं। इसका यह मतलब तो नहीं कि मतदाता उदासीन है?' रक्षा मंत्री के जवाब पर इस संवाददाता ने प्रति प्रश्न किया। 'नहीं, ऐसा बिल्कुल नहीं है। मतदाता के मन में मोदी जी के प्रति विश्वास बढ़ा है। मोदी सरकार ने गुजरे दस वर्षों में हर क्षेत्र में जो काम किया है, वह लोगों ने देखा-परखा है। यही नहीं, कोरोना महामारी के बावजूद 25 करोड़ से अधिक लोग गरीबी की रेखा से ऊपर उठे हैं। विश्व इतिहास की यह अनोखी घटना है।'

उन्होंने कहा, 'हमारे पास कार्यकर्ताओं और समर्थकों का समर्पित समूह है। भारतीय जनता पार्टी सर्वाधिक संगठित राजनीतिक पार्टी है। अगर मतदान कुछ प्रतिशत गिरा भी है, तो इसका एक अर्थ यह भी है कि विपक्ष की करनी से उनके कार्यकर्ता निराश और वोटर का एक समूह हताश हो गया है। उनके समर्थक वोट डालने निकले ही नहीं। यहां यह भी ध्यान देने की बात है कि इस समय भीषण गरमी पड़ रही है। बहुतों के लिए ऐसे में घर से निकलना संभव नहीं हो पाता' - राजनाथ सिंह आगे जोड़ते हैं।

आप कल ही दक्षिण भारत से लौटे हैं, क्या इस बार भाजपा तमिलनाडु और केरल में खाता खोल पाएगी? विपक्ष का दावा है कि तमिलनाडु और केरल में एक भी सीट मिलना संभव नहीं होगा?

रक्षा मंत्री सवाल पूरा होने से पहले ही जवाब देने लगते हैं- ' वे जो बोल रहे हैं, उन्हें बोलने दीजिए। इस बार तमिलनाडु और केरल उन्हें सर्वाधिक चौंकाएंगे। एनडीए और भारतीय जनता पार्टी दक्षिण भारत के सभी राज्यों में अभूतपूर्व प्रदर्शन करेगी। मोदी जी के नेतृत्व में सभी लोगों ने वहां बहुत काम किया है और इन राज्यों के वोटर इससे प्रभावित हैं।' रक्षा मंत्री ने कहा, मोदी सरकार ने गुजरे दस वर्षों में हर क्षेत्र में जो काम किया है, वह लोगों ने देखा-परखा है। कोरोना महामारी के बावजूद 25 करोड़ से अधिक लोग गरीबी की रेखा से ऊपर उठे हैं।

चुनाव से पहले ही वायनाड में राहुल गांधी को लगा झटका, भाजपा में शामिल हो गए जिला महासचिव

वायनाड, एजेंसी। वायनाड में कांग्रेस पार्टी को शनिवार को उस समय झटका लगा, जब जिला कांग्रेस कमेटी के महासचिव ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल हो गए। भाजपा में शामिल होने के बाद मीडिया को संबोधित करते हुए पी एम सुधाकरन ने कहा कि वर्तमान सांसद और वायनाड लोकसभा सीट से कांग्रेस उम्मीदवार राहुल गांधी पार्टी के जिला नेताओं के लिए पहुंच से बाहर हैं। सुधाकरन ने कहा, 'अगर वह मेरे लिए पहुंच से बाहर हैं, तो एक आम आदमी की स्थिति की कल्पना करें। उन्हें पांच साल दिए गए थे। अगर हम एक और कार्यकाल देते हैं, तो यह वायनाड के विकास की संभावनाओं को नष्ट कर देगा।' उन्होंने गांधी को यह घोषणा करने की भी चुनौती दी कि वह अमेठी से चुनाव नहीं लड़ेंगे। भाजपा ने एक विज्ञप्ति में कहा कि दो अन्य प्रमुख नेता भी शनिवार को भाजपा में शामिल हो गईं। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के नेतृत्व वाले वाम लोकतांत्रिक मोर्चा (एलडीएफ) ने वायनाड निर्वाचन क्षेत्र से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (भाकपा) की वरिष्ठ नेता एनी राजा को मैदान में उतारा है। भाजपा ने इस सीट पर अपने प्रदेश प्रमुख के. सुरेंद्रन को उम्मीदवार बनाया है। केरल में 26 अप्रैल को लोकसभा चुनाव के लिए मतदान होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी वायनाड को लेकर राहुल गांधी पर तंज कसा और कहा कि जैसे वह अमेठी से भागे हैं वैसे ही वायनाड से भी भाग खड़े होंगे। उन्होंने कहा कि शहजादे और उनकी टोली 26 अप्रैल को वायनाड में चुनाव का इंतजार कर रही है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस का परिवार पहली बार है जब आजादी के बाद खुद कांग्रेस को वोट नहीं देगा।

खुद को बताता था जज, कई अपराधियों को दी जमानत, मास्टर चोर की मौत

नईदिल्ली, एजेंसी। झआज हम आपको धनी राम मित्तल की कहानी बताने जा रहे हैं, जो कि पेशे से एक स्टेशन मास्टर थे। एक दिन उसने केवल मनोरंजन के लिए अपनी शिफ्ट पूरी करने के बाद पार्किंग से गाड़ी चुराई। इसके बाद उसके खिलाफ केस दर्ज हुआ और मित्तल कोर्ट के संपर्क में आया। इसके बाद वह सही अर्थों में जज बन गया। मित्तल ने इस दौरान झज्जर की एक अदालत में एक जज की जबरन छुट्टी का आदेश भी तैयार किया और उनकी जगह खुद को वहां का मजिस्ट्रेट बना दिया। इसके बद मित्तल जज बन गया। इस दौरान उसने कुछ को जेल भेजा, अधिकांश विचाराधीन कैदियों को जमानत पर रिहा कर दिया। आपको बता दें कि ऐसा सब करने के लिए उसके पास सिर्फ कानून की डिग्री थी। समय बीतता गया, इस बीच मित्तल को लगने लगा था कि वह ज्यादा दूर तक नहीं पहुंच पाएगा। इसके बाद उसने फिर अपना पेशा बदल लिया। वह हरियाणा के परिवहन विभाग में क्लर्क बन गया, जहां उसने लोगों को जाली लाइसेंस बनवाने में मदद की। मित्तल का इस काम में भी कुछ दिनों के बाद मन उचट गया। वह ग्राफोलॉजी में कोर्स करने के लिए कोलकाता चला गया। इसके बाद वह रोहतक लौट आया और फिर से वकालत शुरू कर दी। अपने खाली समय में उसने कापों की चोरी जारी रखी। 1960 से 2000 के बीच हरियाणा, चंडीगढ़, पंजाब और राजस्थान में उसके खिलाफ कार चोरी के 150 से अधिक मामले दर्ज हुए। पुलिस का अनुमान है कि उसने अपने जीवनकाल में कार चोरी, धोखाधड़ी और जालसाजी सहित 1000 से अधिक अपराध किए। 2014-15 के बाद उसके अपराध रिकॉर्ड में गिरावट शुरू हो गई। पश्चिमी दिल्ली के पंजाबी बाग में एक कार चोरी की घटना में वह शामिल था। 2016 में 77 साल की उम्र में उसे अपने दैनिक आवागमन के लिए रानी बाग में एक कार चोरी करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। यह उसकी 95वीं गिरफ्तारी थी।

मित्तल का अतीत उन्हें जेलों में परेशान करता रहा। बुढ़ापे के कारण उसे लंबे समय तक जेल में नहीं रहना पड़ा। पिछले साल चंडीगढ़ के एक मामले में उसे कुछ समय के लिए जेल में रहना पड़ा था। अपनी रिहाई के बाद लगभग 85 वर्ष के हो चुके मित्तल ने अपने जांच अधिकारी को बताया कि आखिरकार वह जेल में रहकर थक गया है। कुछ ही हफ्तों में उसे लकवा मार गया। गुरुवार को मित्तल का दिल का दौरा पड़ने के बाद निधन हो गया। शनिवार को निगमबोध घाट पर मित्तल का अंतिम संस्कार किए जाने के बाद उसके बेटे ने कहा, उन्हें स्वास्थ्य संबंधी कई समस्याएं थीं। वह एक साल से बीमार थे। आपको बता दें कि मित्तल के खिलाफ अभी भी करीब दो दर्जन मामले लंबित हैं।

मणिपुर में 11 बूथों पर फिर से कराए जाएंगे मतदान, कांग्रेस ने लगाए गंभीर आरोप

इंफाल, एजेंसी। लोकसभा चुनाव के पहले चरण में मणिपुर हुई हिंसा के बाद आंतरिक मणिपुर की सीट पर 11 बूथों के मतदान को रद्द करने का आदेश दिया गया है। राज्य चुनाव आयोग ने कहा है कि 11 बूथों पर फिर से मतदान करवाए जाएंगे। बता दें कि मतदान के दौरान ही मणिपुर में कई जगहों पर हिंसा की घटनाएं सामने आई थीं। बीते एक साल से मणिपुर में हालात तनावपूर्ण बने हुए हैं। अब सोमवार को इन 11 बूथों पर फिर से वोटिंग करवाई जाएगी। इससे पहले कांग्रेस ने मणिपुर की दो लोकसभा सीट के लिए शुक्रवार को हुए मतदान के दौरान चुनाव में धांधली और बूथ पर कब्जा करने का आरोप लगाते हुए 47 मतदान केंद्रों पर पुनर्मतदान कराए जाने की मांग की थी। हिंसा प्रभावित मणिपुर में गोलीबारी, डराने-धमकाने तथा ईवीएम में तोड़फोड़ की घटनाओं के बीच 68 प्रतिशत से अधिक मतदान दर्ज किया गया। मणिपुर की दो लोकसभा सीट के लिए शुक्रवार को मतदान हुआ था। साठ-सदस्यीय मणिपुर विधानसभा के 32 निर्वाचन क्षेत्र 'इनर मणिपुर' लोकसभा सीट के तहत आते हैं, जबकि 28 विधानसभा क्षेत्र 'आउटर मणिपुर' संसदीय क्षेत्र का हिस्सा हैं।कांग्रेस की मणिपुर इकाई के अध्यक्ष के. मेघचंद्र ने कहा कि पार्टी ने मणिपुर के मुख्य निर्वाचन अधिकारी के पास शिकायत दर्ज कराई है और 'इनर मणिपुर' निर्वाचन क्षेत्र के 36 तथा 'आउटर मणिपुर' निर्वाचन क्षेत्र के 11 मतदान केंद्रों पर पुनर्मतदान कराए जाने की मांग की है। मेघचंद्र ने शुक्रवार रात पत्रकारों से कहा, 'अज्ञात हथियारबंद बदमाश कांग्रेस उम्मीदवार अंगोमचा बिमोल अकोइजाम और पार्टी चुनाव एजेंट को कुछ दिन से धमकी दे रहे हैं।' उन्होंने कहा, 'हमने इनर मणिपुर के 36 मतदान केंद्रों और आउटर मणिपुर के 11 मतदान केंद्रों पर पुनर्मतदान के लिए राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी के पास शिकायत दर्ज कराई है।'

यूपी-बिहार ने बढ़ाई भाजपा की चिंता, राजस्थान में भी आशंका, वोटिंग बढ़ाने में जुटी पार्टी

नईदिल्ली, एजेंसी। लोकसभा चुनाव के पहले चरण में मतदान में कमी की कई वजहें हो सकती हैं, लेकिन इससे राजनीतिक दलों की पेशानी पर बल दिख रहे हैं। इससे राजनीतिक दलों की चिंता बढ़ गई है। बाकी चरणों में सभी दलों को मिशन मोड में काम होगा। सत्तारूढ़ भाजपा और उसके सहयोगी भले ही बड़े दावे कर रहे हैं, लेकिन उनके भीतर भी एक-एक बूथ को लेकर मंथन हो रहा है और आगे की रणनीति का काम भी शुरू हो गया है। दूसरी तरफ विपक्षी इंडिया गठबंधन व अन्य दलों में भी इसी तरह के आकलन के साथ यह बात भी चर्चा में हैं कि कई स्थानों पर मतदाताओं को वोट डालने नहीं दिया गया है। बीते लोकसभा चुनावों की तुलना में इस चुनाव में अभी तक के अनंतिम आंकड़ों के मुताबिक मतदान में लगभग छह फीसद की कमी आई है। 2014 (66.40 फीसद) व 2019 (67.11 फीसद) में लगातार बढ़े मतदान के बाद इस बार पहले चरण में तेज गिरावट (62.37 फीसद) को लेकर राजनीतिक दलों में मंथन के साथ अलग अलग दावे हैं। सूत्रों के अनुसार, सत्तारूढ़ भाजपा इससे चिंतित तो नहीं है, लेकिन अंदरूनी तौर पर इसे अच्छा नहीं माना जा रहा है। उसने बाकी चरणों में अपने कार्यकर्ताओं को ज्यादा से ज्यादा मतदान के लिए जुटने को कहा है।

भाजपा को नहीं थी मतदान कम होने की उम्मीद : सूत्रों के अनुसार, भाजपा को इतना कम मतदान होने की उम्मीद नहीं थी। वह भी तब जबकि अभी गर्मी अपने प्रचंड रूप में नहीं है। ऐसे में हर सीट का अलग अलग आकलन किया जा रहा है। उसमें भी हर बूथ के एजेंटों के जरिए आंकड़ा तैयार किया जा रहा है कि किस बूथ पर सुबह से शाम तक किस तरह की वोटिंग हुई और भाजपा और विरोधी किस तरह के समर्थक ज्यादा रहे। बाकी चरणों के लिए इससे अब और ज्यादा आक्रामक रणनीति पर काम शुरू किया गया है।

हिंदी पट्टी के राज्यों को लेकर बढ़ी चिंता : सबसे ज्यादा चिंता हिंदी पट्टी के राज्यों को लेकर है, जो भाजपा के गढ़ हैं और विपक्ष को बीते चुनाव में यहां पर बुरी तरह पराजय देखनी पड़ी थी। पहले चरण में बिहार की चार, उत्तर प्रदेश की आठ, उत्तराखंड की सभी पांच, राजस्थान की 12, मध्य प्रदेश की आठ व छत्तीसगढ़ की एक सीट के लिए मतदान हुआ है। भाजपा नेताओं का कहना है कि सत्ता बरकरार रहने के माहौल के कारण मतदान में कमी हुई है, बदलाव के लिए ज्यादा मतदान होता है। पार्टी का अभी तक का आकलन है कि हर राज्य और हर सीट पर मतदान कम होने की अलग अलग वजह हैं। पार्टी नेता दबी जुबान से यह भी कह रहे हैं कि आप खुद देखिए कि बीते चुनाव में संवेदनशील कहे जाने बूथों पर मतदान बढ़ाने वाले इस बार कहां गए? खासकर उत्तर प्रदेश को लेकर यह बात कही जा रही है। सूत्रों के अनुसार भाजपा नेता मतदान में कमी को हल्के में नहीं ले रहे हैं। बिहार व उत्तर प्रदेश को लेकर कुछ चिंताएं है।

बड़ी योजना बना रहा लॉरेंस बिश्नोई? झारखंड के जेल में बंद अमन साहू के साथ किया

नईदिल्ली, एजेंसी। जेल में बंद गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई और उसके सहयोगियों ने झारखंड स्थित जेल में बंद गैंगस्टर अमन साहू के साथ गठजोड़ किया है। बिश्नोई और साहू के खिलाफ कई मामलों की जांच कर रही राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने इसका खुलासा किया है। बिश्नोई पिछले साल कई बार एनआईए की हिरासत में गया था। एजेंसी के अधिकारियों ने खालिस्तानी संगठनों के लिए फंडिंग से संबंधित मामले में उससे पूछताछ की थी। आपको बता दें कि पंजाबी गायक सिद्धू मूसेवाला की हत्या के मामले में मुख्य आरोपी बिश्नोई फिलहाल गुजरात की साबरमती जेल में बंद है। पूछताछ के दौरान बिश्नोई ने एनआईए को बताया कि उसके उत्तर प्रदेश (धनजय सिंह), हरियाणा (काला जठेरी), राजस्थान (रोहित गोदारा) और दिल्ली (रोहित मोई और हाशिम बाबा) के जेल में बंद गैंगस्टरों के साथ संबंध हैं। इस पूरे मामले पर एक सूत्र ने कहा, अपने प्रतिद्वंदियों को खत्म करने रे लिए एक-दूसरे को हथियारों के साथ-साथ शूटर भी मुहैया कराते हैं। वे उन्हें सीमा पार करने में भी सहायता प्रदान करते हैं।

इसके बदले में कमीशन दी जाती है। मुंबई पुलिस ने सोमवार देर रात दो लोगों सागर पाल और विक्की गुप्ता को बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान के बांद्रा स्थित आवास पर तड़के हुई गोलीबारी में उनकी भूमिका के लिए गुजरात के भुज से से गिरफ्तार किया। बिहार का मूल निवासी सागर पाल दो साल से हरियाणा में छोटी-मोटी नौकरी कर रहा था। वहीं, विक्की गुप्ता बिहार में रह रहा था। केंद्रीय एजेंसियों को शक है कि सलमान के घर पर फायरिंग ट्रायल रन हो सकती है और बिश्नोई कोई बड़ी योजना बना रहा है। फिलहाल अमन साहू जेल में हैं। झारखंड के आतंकवाद विरोधी दस्ते (ञ्जस्) और एनआईए जैसी एजेंसियां उसके खिलाफ दर्ज कई मामलों की जांच कर रही है। एक सूत्र ने कहा, कई मामलों की जांच से पता चला है कि साहू और उसके गिरोह के सदस्य प्रतिबंधित सीपीआई (माओवादी) सहित विभिन्न संगठनों को हथियार और गोला-बारूद की आपूर्ति करते हैं। वह जेल से अपने गिरोह के सदस्यों के माध्यम से काम कर रहा है। खनन क्षेत्रों में जबरन वसूली के लिए हथियारों और गोला-बारूद का उपयोग करते हैं। तिहाड़ जेल में साहू के एक सहयोगी ने बिश्नोई के सहयोगियों से मुलाकात की है। हाल ही में साउथ दिल्ली के एक बिजनेसमैन को रंगदारी के लिए कॉल आई और कॉल करने वाले ने लॉरेंस बिश्नोई और अमन साहू का नाम लिया। उस संबंध में मालवीय नगर पुलिस स्टेशन में एक प्राथमिकी दर्ज की गई थी और जांच चल रही है।

सूत्र ने बताया, रोहतक में शहर के सट्टेबाज सचिन मुंजाल की हत्या के मामले में दो लोगों की पहचान उत्तरी दिल्ली के वजीराबाद इलाके के निवासी शाहनवाज और जयपुर के सुल्तानिया गांव के निवासी सुनील करोलिया के रूप में की गई थी। उन्हें बिहार के मुजफ्फरपुर से तब गिरफ्तार किया गया जब वे नेपाल के लिए सीमा पार करने की कोशिश कर रहे थे। पिछले साल बिश्नोई ने एनआईए को बताया था कि वह डी-कंपनी और उसके प्रमुख दाऊद इब्राहिम के खिलाफ है।

बसपा का बड़ा ऐलान, अब हिमाचल प्रदेश में भी उतारेगी

शिमला, एजेंसी। बहुजन समाज पार्टी ने लोकसभा चुनावों को लेकर बड़ा ऐलान किया है। शनिवार को बसपा ने ऐलान करते हुए कहा कि हिमाचल प्रदेश की चारों लोकसभा सीटों पर वह अपने प्रत्याशियों को चुनावी मैदान पर उतारेगी। शुक्रवार को बसपा के प्रदेश नेतृत्व और केंद्रीय समन्वयकों के बीच प्रत्याशियों के नाम को लेकर मैराथन बैठक का आयोजन पार्टी के प्रदेश कार्यालय रक्कड़ कॉलोनी ऊना में किया गया। बैठक के दौरान प्रदेश के चारों संसदीय क्षेत्रों से लोकसभा चुनाव का टिकट पाने की चाहत रखने वाले बसपा नेता भी मौजूद रहे। बैठक की अध्यक्षता पूर्व सांसद ऐर केंद्रीय समन्वयक राजाराम ने की। जबकि दो केंद्रीय समन्वयकों में पूर्व राज्यसभा सांसद डॉक्टर अवतार सिंह करीमपुरी और दयाचंद भी मौजूद रहे। पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष विजय बाहड़ी प्रदेश नेतृत्व के रूप में बैठक में पधारे। इस मौके पर केंद्रीय समन्वयक और पूर्व सांसद राजाराम ने कहा कि बसपा ने कार्यकर्ताओं और पदाधिकारी के साथ चर्चा करने के बाद प्रदेश की चारों संसदीय सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारने का ऐलान किया है। उन्होंने कहा कि प्रत्याशियों को लेकर नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ लंबी चर्चा हुई है।

विनेश फोगाट ने जीता ओलंपिक कोटा

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत की विनेश फोगाट ने शनिवार को एशियाई ओलंपिक क्वालीफायर में महिलाओं के 50 किग्रा सेमीफाइनल में कजाकिस्तान की लॉरा गनिक्यज़ी को 10-0 से हराकर पेरिस 2024 ओलंपिक कोटा हासिल किया। एशियाई खेल और राष्ट्रमंडल चैंपियन फोगाट ने लॉरा गनिक्यजी के खिलाफ तकनीकी श्रेष्ठता के आधार पर 4 मिनट 18 सेकंड में मुकाबला जीत लिया।

अभिषेक शर्मा ने बताया अपनी सफलता का राज

गेम प्लान से मचा रहे तबाही

नईदिल्ली, एजेंसी। पंजाब से आने वाले सनराइजर्स हैदराबाद के विस्फोटक ओपनर अभिषेक शर्मा का बल्ला आईपीएल 2024 में जमकर बोल रहा है। वहीं उन्होंने अब अपनी इस आपार सफलता का राज भी बताया है।

दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ 12 गेंद में 46 रन की विस्फोटक पारी खेल सनराइजर्स हैदराबाद की बड़ी जीत की नींव रखने वाले सलामी बल्लेबाज अभिषेक शर्मा ने कहा कि आईपीएल में प्रतिद्वंद्वी टीम के मुख्य गेंदबाजों को ध्यान में रख कर तैयारी करने का उन्हें काफी फायदा मिला है। अभिषेक ने शनिवार को यहां ट्रेविस हेड (32 गेंद में 89 रन) के साथ महज 38 गेंद में 131 रन की साझेदारी के दौरान पावरप्ले में 125 रन बनाने का रिकॉर्ड भी कायम किया।

अभिषेक ने बताया अपना गेम प्लान

इस शानदार शुरुआत से सनराइजर्स हैदराबाद ने सात विकेट पर 266 रन बनाने के बाद दिल्ली की पारी को 19.1 ओवर में 199 रन पर समेट कर 67 रन से बड़ी जीत दर्ज की। उन्होंने अपनी पारी में 6 छक्के लगाये जिसमें 4 छक्के कुलदीप की गेंद पर आये। उन्होंने कहा कुलदीप की गेंदबाजी का वीडियो देखने से उन्हें फायदा हुआ। अभिषेक ने मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा, 'मैं व्यक्तिगत तौर पर स्पिनरों और विरोधी टीम के मुख्य गेंदबाजों के मुताबिक तैयारी करता हूं। इस साल भी मैंने कुलदीप के खिलाफ खेलने की तैयारी की थी क्योंकि वे उनके मुख्य गेंदबाज है। मैं उनका वीडियो देखता हूं। मैं अभ्यास सत्र में विरोधी टीम के गेंदबाजों की तरह गेंद डालने वाले किसी गेंदबाज के खिलाफ अभ्यास करने पर ध्यान देता हू। इससे काफी फायदा होता है।'

किस्मत अच्छी है कि हेड हमारी टीम में है

अपनी पारी में छह छक्के जड़ने वाले इस वामहस्त बल्लेबाज ने कहा कि उनकी मौजूदा लय उस कड़ी मेहनत का नतीजा है जो उन्होंने पिछले कुछ महीनों में की है। उन्होंने कहा, 'आईपीएल से पहले मैंने कड़ी मेहनत की थी। सैयद मुश्ताक ट्रॉफी (घरेलू टी20 टूर्नामेंट) में भी मैंने काफी मेहनत की थी इससे मुझे काफी फायदा हो रहा है।' अभिषेक ने कहा कि वह काफी समय से हेड के प्रशंसक रहे है और उनके साथ बल्लेबाजी करने का अनुभव शानदार रहता है। हेड ने अपनी 32 गेंद की पारी में 11 चौके और छह छक्के लगाये। अभिषेक ने कहा, 'ट्रेविस को बल्लेबाजी करते देखना काफी मनोरंजक होता है। हम मैदान के बाहर भी आपस में काफी बातें करते है। वह ऐसे खिलाड़ी है जिसका मैं अनुसरण करना चाहता हूं। पंजाब (राज्य क्रिकेट टीम) के मेरे साथी जानते है कि मैं तीनों प्रारूप में हेड की बल्लेबाजी का सम्मान करता हूं।

टी20 वर्ल्ड कप को लेकर भी बोले अभिषेक

अभिषेक बल्लेबाजी के साथ कामचलाऊ खब्बू गेंदबाज भी है। आईपीएल के मौजूदा और पिछले सत्र में हालांकि उन्हें गेंदबाजी का ज्यादा मौका नहीं मिला है। उन्होंने इस बारे में पूछे जाने पर कहा, 'मुझे लगता है कि सब को पता है कि मैं गेंदबाजी कर सकता हूं लेकिन 'इंपैक्ट प्लेयर' नियम के कारण टीम में एक अतिरिक्त गेंदबाज या बल्लेबाज होता है। हर हरफनमौला के साथ ऐसा हो रहा है यह पिछले साल भी था। मैं मानता हूं कि मुझे जब भी गेंदबाजी का मौका मिलेगा मुझे उसके लिए तैयार रहना चाहिये।' अभिषेक लगातार अच्छी बल्लेबाजी कर राष्ट्रीय टीम का दरवाजा खटखटा रहे है। उनसे जब पूछा गया कि क्या उनके दिमाग में आगामी टी20 विश्व कप के लिए राष्ट्रीय टीम में जगह बनाने की बातें चल रही है तो उन्होंने कहा, ' इस तरह के मुद्दों पर मैंने हेड से बात की है जिसके बाद मेरी सोच बिलकुल स्पष्ट है। मुझे ज्यादा दूर की चीजों के बारे में सोचे बिना जो भी मौका मिलेगा उसका फायदा उठाने पर ध्यान देना है।'

संक्षिप्त समाचार

दिल्ली में ट्रैविस हेड का तूफान, तोड़े कई रिकॉर्ड

नईदिल्ली, एजेंसी। आईपीएल 2024 में शनिवार को दिल्ली कैपिटल्स और सनराइजर्स हैदराबाद के बीच टूर्नामेंट का 35वां मैच दिल्ली में खेला गया। हालांकि, मैदान का वेन्यू जरूर बदला है लेकिन हैदराबाद की बल्लेबाजी का अंदाज नहीं। सनराइजर्स हैदराबाद ने आईपीएल 2024 में बल्लेबाजी के नए रिकॉर्ड स्थापित करने की आदत बना ली है और यह दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ भी जारी

रहा। पहले बल्लेबाजी करने उतरी एसआरएच की ट्रैविस हेड और अभिषेक शर्मा की ओपनिंग जोड़ी ने पावरप्ले में ही बोर्ड पर 100 से अधिक रन जोड़ लिए। खासतौर पर हेड ने दिल्ली के गेंदबाजों की धज्जियां उड़ा दी। हेड 32 गेंदों पर 89 रन बनाकर आउट हुए। उन्होंने 278.11 के स्ट्राइक रेट से रन बनाए जिसमें 11 चौके और 6 छक्के शामिल थे। वहीं अभिषेक शर्मा ने 12 गेंदों पर 46 रन ठोक डाले जिसमें दो चौके और 6 छक्के शामिल थे। अभिषेक ने 383.33 के स्ट्राइक रेट से रन जोड़े।हैदराबाद ने तोड़े ये रिकॉर्ड्स-टी20 में सबसे तेज 100 रन जो सिर्फ सिर्फ पांच ओवर में आए।किसी भी टी20 में पावरप्ले में सर्वाधिक स्कोर। इस जोड़ी ने पहले 6 ओवर में 125 रन का विशाल स्कोर बनाया।

भारतीय निशानेबाजों की नजर पेरिस ओलंपिक कोटा हासिल करने पर

नईदिल्ली, एजेंसी। पृथ्वीराज टोंडिमन, जोरावर संधू और विवान कपूर पुरुषों के ट्रैप में शेष उपलब्ध कोटा स्थान जीतने की कोशिश करेंगे, जबकि श्रेयसी सिंह, मनीषा कीर और नीरू महिलाओं की संबंधित स्पर्धा में भारत के पेरिस स्थानों को अधिकतम करने की कोशिश करेंगी। निशानेबाजी में रिकॉर्ड 20 ओलंपिक कोटा स्थान पहले ही हासिल कर चुका भारत रविवार से दोहा में आईएसएसएफ फाइनल ओलंपिक क्वालीफिकेशन चैम्पियनशिप (शॉटगन) शुरू होने पर 2024 पेरिस स्थानों के लिए अपने

अभियान की शुरआत करेगा। पृथ्वीराज टोंडिमन, जोरावर संधू और विवान कपूर पुरुषों के ट्रैप में शेष उपलब्ध कोटा स्थान जीतने की कोशिश करेंगे, जबकि श्रेयसी सिंह, मनीषा कीर और नीरू महिलाओं की संबंधित स्पर्धा में भारत के पेरिस स्थानों को अधिकतम करने की कोशिश करेंगी। भवनीश मेंदीरत्ता और राजेश्वरी कुमारी ने पिछली प्रतियोगिताओं में भारत के लिए पुरुष और महिला ट्रैप में एक-एक कोटा स्थान हासिल किया था। क्वालीफिकेशन तीन दिनों तक चलेगा और 23 अप्रैल को दोनों स्पर्धाओं के फाइनल के साथ समाप्त होगा। ट्रैप प्रतियोगिता के बाद पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए स्कीट स्पर्धा होगी, जहां भारत दो और कोटा स्थान जीत सकता है।

युवराज सिंह मुझसे खफा होंगे क्योंकि...

● अभिषेक शर्मा 12 गेंदों में 46 रन बनाने के बावजूद किस बात से घबराए

नईदिल्ली, एजेंसी। सनराइजर्स हैदराबाद के ऑलराउंडर अभिषेक शर्मा आईपीएल 2024 में अपनी ताबड़तोड़ बल्लेबाजी से जमकर सुर्खिया बटोर रहे हैं। उन्होंने अब तक सात मैचों में 215.96 के स्ट्राइक रेट से 257 रन बनाए हैं। उन्होंने शनिवार को दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ भी कमाल की पारी खेली। उन्होंने दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में 12 गेंदों में 46 रन बनाए, जिसमें दो चौके और 6 सिक्स शामिल हैं। अभिषेक ने ट्रैविस हेड (32 गेंदों में 89, 11 चौके, 6 छक्के) के साथ पहले विकेट के लिए 131 रन की साझेदारी की। हालांकि, तूफानी पारी खेलने के बावजूद अभिषेक एक

बात को लेकर घबराए हुए हैं। उन्होंने कहा कि पूर्व दिग्गज ऑलराउंडर युवराज सिंह दिल्ली के विरुद्ध उनके आउट होने के तरीक से खफा होंगे। अभिषेक को स्पिनर कुलदीप यादव ने सातवें ओवर की दूसरी गेंद पर पवेलियन की राह दिखाई थी। कुलदीप ने फुलर गेंद डाली, जिसके बाद अभिषेक ने ड्राइव किया लेकिन कवर पर अक्षर पटेल को कैच थमा बैठे। अक्षर ने आगे की ओर डाइव लगाकर कैच लिया।

अभिषेक शर्मा ने मैच के बाद कहा, जिस तरह से मैं आउट हुआ, उससे युवराज सिंह मुझसे खफा होंगे लेकिन कुल मिलाकर वह मेरी प्रोग्रेस से खुश होंगे। उन्होंने कड़ी मेहनत की है। बता दें कि युवराज 23 वर्षीय ऑलराउंड अभिषेक के मेंटॉर हैं। अभिषेक घरेलू क्रिकेट में पंजाब की ओर से खेलते हैं। युवराज भी पंजाब टीम से खेलते थे। अभिषेक ने युवराज के साथ ट्रेनिंग की है, जिससे उन्हें आईपीएल में दमदार प्रदर्शन करने में मदद मिल रही है। अभिषेक और हेड ने शुरुआती 6 ओवर में 125 रन जोड़े, जो टी20 क्रिकेट का पावरप्ले में सबसे बड़ा स्कोर है। हैदराबाद ने 266/7 का विशाल स्कोर खड़ा किया। नितीश रेड्डी ने 37 रन का योगदान दिया। शाहबाज अहमद ने नाबाद 59 रन की पारी खेली। जवाब में दिल्ली की टीम 199 रन पर ऑलरआउट हो गई। एसआरएच ने 67 रन से विजयी परचम फहराया। दिल्ली के लिए जेक फ्रेजर-मैकगर्क (65) ने सबसे ज्यादा रन बनाए। अभिषेक पोरेल ने 42 और कप्तान ऋषभ पंत ने 44 रन जुटाए।

टेनिस स्टार गार्बाइन मुगुरुजा ने संन्यास का ऐलान किया

● दो ग्रैंड स्लैम जीते, जनवरी 2023 के बाद से टेनिस कोर्ट में नहीं उतरी ● साल 2016 में फ्रेंच ओपन जीता।

नईदिल्ली, एजेंसी। पूर्व वर्ल्ड नंबर एक खिलाड़ी गार्बाइन मुगुरुजा ने 30 साल की उम्र में ही पेशेवर टेनिस से संन्यास लेने की घोषणा कर दी है। उन्होंने ये फैसला लंबे समय से टेनिस से दूर रहने की वजह से किया है। मुगुरुजा 2023 जनवरी से टेनिस नहीं खेली हैं। उन्होंने शनिवार को मैड्रिड में प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि मुझे लगता है कि अब संन्यास लेने और अपनी जिंदगी में एक नया अध्याय खोलने का समय आ गया है।

विलियम्स बहनों को ग्रैंड स्लैम फाइनल में हरा चुकी हैं

मुगुरुजा विलियम्स बहनों को ग्रैंड स्लैम फाइनल में हराने वाली इकलौती खिलाड़ी हैं।

उन्होंने साल 2016 में फ्रेंच ओपन के फाइनल में सेरेना विलियम्स को और 2017 में विम्बलडन फाइनल में वीनस विलियम्स को हराया था। वहीं स्पेनिश खिलाड़ी मुगुरुजा के नाम 10 करियर खिताब है। वह 2015 विम्बलडन तथा 2020 आस्ट्रेलियाई ओपन में उप विजेता रही थीं गार्बाइन मुगुरुजा ने 2017 में विम्बलडन फाइनल में वीनस विलियम्स को हराया कर खिताब अपने नाम किया था।

1998 के बाद फ्रेंच ओपन जीतने वाली पहली स्पेनिश खिलाड़ी- मुगुरुजा के पिता स्पेनिश हैं। जबकि मां वेनेजुएला की हैं। मुगुरुजा ने टेनिस का प्रशिक्षण लेने के लिए बार्सिलोना चली गईं। उन्होंने 2016 में फ्रेंच ओपन जीता। वह 1998 फ्रेंच ओपन में अरांत्सा सांचेज़ विकारियो के बाद ग्रैंड स्लैम ट्रॉफी जीतने वाली पहली स्पेनिश महिला बनीं।

टी-20 वर्ल्ड कप में खेलने को तैयार दिनेश कार्तिक

नईदिल्ली, एजेंसी। टीम इंडिया के विकेटकीपर-बल्लेबाज दिनेश कार्तिक टी-20 वर्ल्ड कप 2024 में खेलने के लिए तैयार हैं। इंडियन प्रीमियर लीग में रविवार को रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु का सामना कोलकाता नाइटराइडर्स के से होगा। इस मैच से पहले आरसीबी के विकेटकीपर कार्तिक ने कहा, मेरे जीवन के इस पड़ाव पर, भारत का प्रतिनिधित्व करना सबसे बड़ी खुशी होगी। मैं इसके लिए 100त्न तैयार हूं। मैं टी-20 वर्ल्ड कप के लिए टीम में शामिल होने के लिए हर संभव कोशिश करूंगा। कार्तिक ने अपना आखिरी इंटरनेशनल मुकाबला 2022 टी-20 वर्ल्ड कप में खेला था। तब से उन्होंने भारत के लिए कोई भी मैच नहीं खेला। इस दौरान वे कमेंट्री करते नजर आए।

आईपीएल के इस सीजन में 7 मैचों में दो अर्धशतक लगाए- 38 साल के दिनेश कार्तिक आईपीएल के इस सीजन में शानदार फॉर्म में हैं। उन्होंने 7 मैचों में 205.45 के स्ट्राइक रेट से 226 रन बनाए हैं। इसमें दो हाफ सेंचुरी शामिल है।

मेरे लिए धोनी मतलब क्रिकेट और क्रिकेट

मतलब धोनी... शिवम दुबे की वाइफ ने माही के लिए दिल खोलकर रख दिया

नई दिल्ली, एजेंसी। एक्ट्रेस और क्रिकेटर शिवम दुबे की पत्नी अंजुम खान ने शनिवार को भारत के महान कप्तान एमएस धोनी के लिए सोशल मीडिया पर एक इमोशनल पोस्ट शेयर किया है। अंजुम खान ने धोनी के साथ अपनी मुलाकात की तस्वीर सोशल मीडिया पर शेयर की है और उनके लिए लंबा कैप्शन भी लिखा। वह धोनी को कितना मानती हैं और उनका कितना सम्मान करती हैं। यह सब उन्होंने अपनी पोस्ट में लिखा।

शिवम दुबे की वाइफ ने धोनी के लिए शेयर किया खास पोस्ट

अंजुम खान ने सोशल मीडिया के सबसे चर्चित प्लेटफॉर्म इंस्टाग्राम पर धोनी के साथ अपनी मुलाकात की फोटो शेयर की। उसकी कैप्शन में उन्होंने लिखा, अल्हम्दुलिल्लाह धोनी यह नाम मैंने सुना था एक न्यूज चैनल पर...जब उनको कप्तान बनाया गया था भारतीय टीम का... और उसके पहले क्रिकेट पसंद था मुझे पर इतना नहीं कि मैं देखती रहूं... और मैं वो न्यूज चैनल पर रुक गई पता नहीं क्यों मैंने पूरा इंटरव्यू देख लिया।

जैक फ्रेजर ने लगाया आईपीएल 2024 का सबसे तेज अर्धशतक, एक साथ तोड़ा ट्रेविस हेड और अभिषेक शर्मा का रिकॉर्ड

नईदिल्ली, एजेंसी। आईपीएल 2024 के 35वें लीग मैच में दिल्ली कैपिटल्स को अपने घरेलू मैदान पर बेशक हार मिली, लेकिन इस मैच में इस टीम के बल्लेबाज जैक फ्रेजर ने कमाल की बल्लेबाजी की और आईपीएल 2024 का सबसे तेज अर्धशतक लगा दिया। इस मुकाबले में हैदराबाद की टीम ने पहले खेलते हुए 20 ओवर में 7 विकेट पर 266 रन का विशाल स्कोर बनाया और इसके जवाब में दिल्ली की टीम लड़खड़ा गई और 19.1 ओवर में 199 रन बनाकर आउट हो गई और उसे 67 रन से हार मिली।

जैक फ्रेजर ने तोड़ा हेड और अभिषेक का रिकॉर्ड- जैक ने इस मैच में 15 गेंदों पर अर्धशतक लगाया और आईपीएल 2024 में सबसे तेज अर्धशतक लगाने वाले बल्लेबाज बन गए। इस सीजन में इससे पहले ट्रेविस हेड और अभिषेक शर्मा ने 16-16 गेंदों पर अर्धशतक लगाया था।

संक्षिप्त समाचार

सोलर सेल बनाने वाली कंपनी का आ रहा आईपीओ, टाटा भी है क्लाइंट

नई दिल्ली, एजेंसी। सोलर सेल बनाने वाली कंपनी प्रीमियर एनर्जीज लिमिटेड ने आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के जरिए पैसे जुटाने के लिए बाजार नियामक सेबी के समक्ष दस्तावेज दाखिल किए हैं। हैदराबाद स्थित कंपनी आईपीओ के तहत 1,500 करोड़ रुपये के नए शेयर जारी करेगी। इसके अलावा प्रवर्तकों और निवेशकों की ओर से 2.82 करोड़ तक शेयरों की बिक्री पेशकश (ओएफएस) होगी। यह कंपनी आईपीओ से पहले 300 करोड़ रुपये तक के शेयर बड़े निवेशकों को जारी कर सकती है। यदि ऐसा किया जाता है, तो आईपीओ का साइज कम हो जाएगा। कोटक महिंद्रा कैपिटल कंपनी लिमिटेड, जेपी मॉर्गन इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज लिमिटेड इस इश्यू के बुक रनिंग लीड मैनेजर हैं। इक्विटी शेयरों को बीएसई और एनएसई पर सूचीबद्ध करने का प्रस्ताव है। इस आईपीओ से की गई कमाई का इस्तेमाल सहायक कंपनी, प्रीमियर एनर्जीज ग्लोबल एनवायरनमेंट प्राइवेट लिमिटेड (पीईजीईपीएल) में निवेश के लिए किया जाएगा। हैदराबाद, तेलंगाना में 4 गीगावॉट सोलर पीवी टॉपकॉन सेल और 4 गीगावॉट सोलर पीवी टॉपकॉन मॉड्यूल विनिर्माण सुविधा की स्थापना पर भी पैसे खर्च होंगे। वित्त वर्ष 2022-23 में कंपनी की परिचालन आय 1,428 करोड़ रुपये थी, जबकि बीते वित्त वर्ष में अप्रैल से दिसंबर, 2023 तक यह आंकड़ा 2,017 करोड़ रुपये रहा। इस साल मार्च तक कंपनी के पास 5,300 करोड़ रुपये से ज्यादा के ऑर्डर थे। प्रीमियर एनर्जीज लिमिटेड के ग्राहकों में टाटा की कंपनी टाटा पावर सोलर सिस्टम्स भी शामिल है। इसके अलावा एनटीपीसी, पैनासोनिक लाइफ सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड, कॉन्टिनम ग्रीन एनर्जी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, शक्ति पंप्स (इंडिया) लिमिटेड, फर्स्ट एनर्जी 6 प्राइवेट लिमिटेड (थर्मैक्स ग्रुप कंपनी), ल्यूमिनस पावर टेक्नोलॉजीज प्राइवेट लिमिटेड, हार्टेक सोलर प्राइवेट लिमिटेड, ग्रीन इंफ्रा विंड एनर्जी लिमिटेड भी ग्राहक हैं।

रत्न और आभूषणों का निर्यात पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में 12.17 प्रतिशत घटा

नई दिल्ली, एजेंसी। रत्न और आभूषण निर्यात पिछले वित्त वर्ष की तुलना में 2023-24 के दौरान 12.17 प्रतिशत घटकर 2,65,187.95 करोड़ रुपये (32,022.08 मिलियन अमेरिकी डॉलर) रह गया। रत्न व आभूषण निर्यात संवर्धन परिषद (जीजेईपीसी) के आंकड़ों से पता चला है कि इसका अमेरिका में उच्च ब्याज दर और चीन की इकोनॉमी में धीमी रिकवरी है। जीजेईपीसी के अध्यक्ष विपुल शाह ने पीटीआई से कहा, स्न्रङ्ग23 में रत्न और आभूषण निर्यात 3,01,925.97 करोड़ रुपये (स्ष्ठ 37,646.17 मिलियन) था। उन्होंने कहा, पिछला वित्त वर्ष सभी उत्पाद श्रेणियों के लिए काफी चुनौतीपूर्ण रहा। यह स्थिति मुख्य रूप से उच्च ब्याज दरों के कारण अमेरिका में मंदी के कारण बनी, जो इस सेगमेंट में निर्यात के लिहाज से भारत के लिए सबसे बड़ा बाजार है। कोविड-19 के बाद चीन के बाजार में सुधार की गति धीमी है। आंकड़ों के अनुसार पिछले वर्ष के 1,76,716.06 करोड़ रुपये (22,046.9 मिलियन अमरीकी डालर) की तुलना में वित्त वर्ष 24 के दौरान कट और पॉलिश किए गए हीरे का कुल निर्यात 25.23 प्रतिशत घटकर 1,32,128.29 करोड़ रुपये (15,966.47 मिलियन अमरीकी डालर) हो गया।

गोदरेज ग्रुप की ताले बनाने से हुई थी शुरुआत

नई दिल्ली, एजेंसी। गोदरेज ग्रुप देश के सबसे पुराने घरानों में से एक है। गोदरेज ग्रुप का बंटवारा शुरू हो गया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, परिवार के लोगों ने एक-दूसरे की कंपनियों के बोर्ड से इस्तीफा दे दिया है। अब आने वाले समय में जल्द ही शेयरों की अदला-बदली हो जाएगी। गोदरेज ग्रुप करीब 126 साल पुराना है। इस ग्रुप की शुरुआत 1897 में हुई थी। रिपोर्ट के मुताबिक, नादिर और आदि गोदरेज ने बोर्ड से इस्तीफा दे दिया है। वहीं जमशेद गोदरेज ने गोदरेज प्रॉपर्टीज और गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट लिमिटेड के बोर्ड में अपनी सीट छोड़ दी है। अब वह जल्द ही एक-दूसरे की कंपनियों में हिस्से बेच देंगे। यह विभाजन परिवार की दो शाखाओं के बीच हो रहा है। इसमें एक तरफ आदि गोदरेज और भाई नादिर गोदरेज हैं। वहीं दूसरी तरफ उनके

चचेरे भाई जमशेद गोदरेज और उनकी बहन स्मिता गोदरेज कृष्णा हैं। गोदरेज इंडस्ट्रीज एंड एसोसिएट्स का नेतृत्व आदि गोदरेज और उनके भाई करते हैं। वहीं गोदरेज एंड बॉयस (जी एंड बी) का नेतृत्व जमशेद गोदरेज और उनकी बहन करती हैं। आदि ओर नादिर गोदरेज एंड बॉयस में अपने हिस्से को दूसरी शाखा को बेच देंगे। जमशेद गोदरेज और उनके परिवार के लोग गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट्स (जीसीपीएल) और गोदरेज प्रॉपर्टीज में अपने चचेरे भाइयों को पारिवारिक व्यवस्था के तहत हिस्सेदारी हस्तांतरित करेंगे। ऐसा बताया जा रहा है कि यह बंटवारा सौहाद्रपूर्ण तरीके से हो रहा है।

बन गए दो ग्रुप

इस बंटवारे से पहले गोदरेज फैमिली में पहले से ही दो बिजनेस ग्रुप बन गए हैं। इनमें से एक ग्रुप गोदरेज इंडस्ट्रीज एंड एसोसिएट्स है जिसे आदि गोदरेज और उनके भाई नादिर गोदरेज संभालते हैं। वहीं दूसरी तरफ गोदरेज एंड बॉयस मैन्युफैक्चरिंग कंपनी को आदि गोदरेज के चचेरे भाई जमशेद गोदरेज और स्मिता गोदरेज संभालते हैं। इस ग्रुप की पांच कंपनियां शेयर बाजार में लिस्टेड हैं। इनमें गोदरेज इंडस्ट्रीज, गोदरेज कंज्यूमर प्रोडक्ट, गोदरेज एग्रोवेट, एस्टेक लाइफ साइसेंस और गोदरेज प्रॉपर्टीज शामिल हैं। इनकी वैल्यूएशन करीब 2.74 लाख करोड़ रुपये है।

ऐसे हुई थी ग्रुप की शुरुआत

गोदरेज ग्रुप की शुरुआत साल 1897 में ताले बेचने से हुई थी। आज गोदरेज ग्रुप कई सेक्टरों में कारोबार करता है। इसमें इंजीनियरिंग, इक्विपमेंट, सिक्योरिटी सॉल्यूशंस, एग्रीकल्चर प्रोडक्ट्स, रियल एस्टेट और कंज्यूमर प्रोडक्ट्स शामिल हैं। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, इन सभी सेक्टरों में फैले कारोबार का बंटवारा किया जा सकता है।

राजनीतिक दलों के मुफ्त उपहारों पर लाना चाहिए श्वेतपत्र, पूर्व आरबीआई गवर्नर की केंद्र को सलाह

हैदराबाद एजेंसी। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया (आरबीआई) के पूर्व गवर्नर डी सुब्बाराव ने मुफ्त उपहार को लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार को सलाह दी है। उनका कहना है कि सरकार को मुफ्त उपहार देने के मुद्दे पर राजनीतिक दलों के बीच सहमति बनाने के लिए श्वेत पत्र लाना चाहिए। साथ ही इस बारे में गहन बहस होनी चाहिए कि इस संबंध में राजनीतिक दलों पर कैसे अंकुश लगाया जाए।

सुब्बाराव ने यह भी सलाह दी कि आम जनता को इन मुफ्त उपहारों की लागत और लाभों के बारे में अधिक जागरूक किया जाना चाहिए और यह सरकार की जिम्मेदारी है कि वह इस बारे में लोगों को कैसे शिक्षित करे। उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि यह एक राजनीतिक मुद्दा है और इस पर राजनीतिक सहमति होनी चाहिए। इसका नेतृत्व केंद्र सरकार और प्रधानमंत्री को करना होता है। मेरा मानना है कि उन्हें एक श्वेत पत्र जारी करना चाहिए और इस पर आम सहमति बनाने का प्रयास करना चाहिए।

इस पर कैसे लगा सकते हैं रोक

आरबीआई के पूर्व गवर्नर का कहना है कि लोगों को मुफ्त उपहारों के बारे में जागरूक करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार को सुनिश्चित करना चाहिए कि हम इस पर कैसे रोक लगा सकते हैं और हम इसे कैसे लागू कर सकते हैं। उन्होंने आगे कहा कि भारत जैसे गरीब देश में यह सरकार की जिम्मेदारी है कि वह सबसे कमजोर वर्गों को कुछ सुरक्षा तंत्र प्रदान करे और यह भी आत्मनिरीक्षण करे कि वित्तीय बाधाओं को देखते हुए उन्हें कितना दूर तक ले जाया जा सकता है। उन्होंने सलाह देते हुए कहा, आपको पूछना चाहिए कि क्या यह इस धन का सर्वश्रेष्ठ उपयोग है या हम कुछ बेहतर कर सकते हैं। इसलिए मुझे लगता है कि हमें मुफ्त उपहारों पर अधिक जागरूक होना चाहिए। साथ ही जोरदार बहस करनी चाहिए और यह पता लगाना चाहिए कि हम राजनीतिक दलों पर कुछ संयम कैसे लगा सकते हैं।

वित्तीय अनुशासन बनाए रखना जरूरी

एफआरबीएम की सीमा का उल्लंघन करने वाले कुछ राज्यों के बारे में उन्होंने कहा कि राज्यों और केंद्र सरकार को वित्तीय अनुशासन बनाए रखना चाहिए और एफआरबीएम लक्ष्यों का पालन किया जाना चाहिए। एक सवाल पर सुब्बाराव ने कहा कि आईएमएफ के एक अध्ययन के अनुसार भारत को एक विकसित राष्ट्र बनने के लिए 2047 तक लगातार 7.6 प्रतिशत की दर से वृद्धि करने की जरूरत है। उन्होंने कहा, अगले 25 साल तक हर साल 7.6 प्रतिशत की वृद्धि दर को बनाए रखना, कुछ देशों ने ऐसा किया है, चीन ने यह किया है। लेकिन सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि जलवायु परिवर्तन, भू-राजनीतिक, वैश्वीकरण जैसी चुनौतियों के कारण क्या हम यह कर सकते हैं।

जोमैटो को भारी भरकम जीएसटी का नोटिस मिला

कंपनी को जुर्माने सहित 11.82 करोड़ रुपये टैक्स भरने को कहा गया है

जोमैटो के शेयर कल गिरावट के साथ बंद हुए थे

नई दिल्ली, एजेंसी। फूड डिलीवरी करने वाली कंपनी जोमैटो को बड़ा झटका लगा है। कंपनी को भारी भरकम जीएसटी का नोटिस मिला है। ऑनलाइन ऑर्डर लेकर खाना पहुंचाने वाले मंच जोमैटो को जीएसटी प्राधिकरण से 11.82 करोड़ रुपये की कर मांग और जुर्माना देने का आदेश मिला है। कंपनी के जुलाई 2017 से मार्च 2021 के बीच भारत के बाहर स्थित उसकी सहायक कंपनियों को दी गई निर्यात सेवाओं के संबंध में यह नोटिस मिला। यह आदेश अतिरिक्त आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, गुरुग्राम ने जारी किया। इसमें 5,90,94,889 रुपये की जीएसटी मांग के अलावा 5,90,94,889 रुपये का ब्याज और जुर्माना शामिल है। जोमैटो ने शुक्रवार देर शाम शेयर बाजार को बताया कि कंपनी उचित प्राधिकारी के समक्ष आदेश के खिलाफ अपील दायर करेगी। इससे पहले बीते महीने मार्च में भी जोमैटो को भारी-भरकम जीएसटी नोटिस मिला था।

कंपनी को यह नोटिस कर्नाटक में कमर्शियल टैक्स (ऑडिट) के असिस्टेंट कमिश्नर से मिला था। ऑनलाइन ऑर्डर देकर खाना मंगाने की सुविधा देने वाले मंच जोमैटो को कर अधिकारियों से 23.26 करोड़ रुपये की कर मांग का नोटिस मिला था। इसमें ब्याज और जुर्माना शामिल था। कंपनी ने कहा था कि वह आदेश के खिलाफ

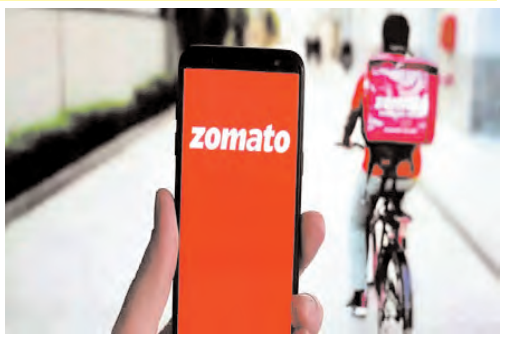

उपयुक्त प्राधिकार के समक्ष चुनौती देगी। इस बार कंपनी को नोटिस अतिरिक्त आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, गुरुग्राम ने जारी किया है।

या शेयर पर दिखेगा असर

जोमैटो का शेयर कल यानी कारोबारी सप्ताह के अंतिम दिन शुक्रवार को करीब दो फीसदी के उछाल के साथ बंद हुआ था। जोमैटो का शेयर अभी 188.50 रुपये पर बंद हुआ है। हालांकि पिछले 5 दिनों से जोमैटो के शेयर में गिरावट देखने को मिली है। शेयर करीब 5 फीसदी गिरा है। पिछले एक महीने में जोमैटो के शेयर ने निवेशकों को 11 फीसदी का रिटर्न दिया है। पिछले 6 महीने की बात करें तो जोमैटो का शेयर करीब 73 फीसदी तक उछला है। पिछले एक साल में जोमैटो के शेयर ने निवेशकों को 247.79 फीसदी का शानदार रिटर्न दिया है। निवेशकों को उम्मीद है कि आने वाले समय में जोमैटो के शेयर में और उछाल आ सकता है।

66 पर जाएगा कंस्ट्रशन कंपनी का यह शेयर, लगातार दे रहा मुनाफा, विजय केडिया के पास हैं 1 करोड़ शेयर

नई दिल्ली, एजेंसी। शेयर बाजार के दिग्गज निवेशक विजय केडिया के पोर्टफोलियो में कुछ ऐसे भी स्टॉक हैं जिनकी कीमत 60 रुपये से कम है। ऐसा ही एक स्टॉक सिविल कंस्ट्रक्शन से जुड़ी कंपनी- पटेल इंजीनियरिंग का है। बीते कुछ दिनों से सुस्त पड़े इस स्टॉक पर एक्सपर्ट बुलिश नजर आ रहे हैं। आनंद राठी की रिसर्च रिपोर्ट के मुताबिक इस कंपनी के स्टॉक मंदी के दौर से गुजर रहे हैं लेकिन शॉर्ट टर्म में खरीदारी बढ़ने की संभावना है। ब्रोकरेज आनंद राठी ने पटेल इंजीनियरिंग के स्टॉक को 56-58 रुपये के रेंज में खरीदारी की सलाह दी है। इसके साथ ही अनुमान लगाया है कि स्टॉक शॉर्ट टर्म में 66 रुपये के स्तर तक जा सकता है। वहीं, 53 रुपये पर स्टॉप-लॉस की सलाह दी गई है। वर्तमान में पटेल इंजीनियरिंग के शेयर की कीमत 59 रुपये है। छह फरवरी 2024 को इस शेयर की कीमत 79 रुपये तक गई।

कभी चप्पल खरीदने के लिए भी नहीं थे पैसे, आज हैं दुनिया की सबसे बड़ी थॉयरॉइड टेस्टिंग कंपनी के मालिक

नई दिल्ली, एजेंसी। थायरोकेयर टेक्नोलॉजीज लिमिटेड दुनिया की सबसे बड़ी थॉयरॉइड टेस्टिंग कंपनी है। इस कंपनी के 950 से अधिक ब्रांडेड और 5,000 से अधिक नॉन-ब्रांडेड आउटलेट्स हैं। कंपनी के फाउंडर, चेयरमैन और एमडी ए वेलुमणि का ताल्लुक तमिलनाडु के एक गरीब परिवार से है। उनके पिता एक गरीब किसान थे, उनकी अपनी जमीन नहीं थी। वेलुमणि का जीवन गरीबी में बीता। हालत यह थी कि उनके पास कपड़े और चप्पल खरीदने के लिए भी पैसे नहीं होते थे। लेकिन वेलुमणि ने अपनी मेहनत और लगन से बड़ा मुकाम हासिल किया। आज उनकी कंपनी का मार्केट कैप 3,300 करोड़ रुपये है। इसका कारोबार भारत ही नहीं बल्कि कई दूसरे देशों में भी फैला है।

वेलुमणि का जन्म तमिलनाडु में कोयंबटूर के करीब एक गरीब परिवार में हुआ। उनके तीन और भाई-बहन थे। परिवार का गुजारा करने के लिए मां दूध बेचने का काम करती थी। कई साल तक मां ने ही घर का खर्च चलाया। वेलुमणि ने अपनी स्कूलिंग गांव से पूरी की और फिर ग्रेजुएशन करने के लिए शहर चले गए। उन्होंने सारी पढ़ाई सरकारी स्कूल-

कॉलेजों से ही पूरी की है। 19 वर्ष की उम्र में उन्होंने बीएससी की डिग्री पूरी की और फिर कोयंबटूर में एक छोटी सी दवा कंपनी में काम करने लगे। यहां उनकी सैलरी 150 थी। सैलरी काफी कम थी लेकिन उन्होंने फिर भी वो 100 रुपये घर मां के पास भेजते थे, और किसी तरह से 50 रुपयों में खुद का खर्च चलाते थे। लेकिन कुछ समय बाद कंपनी ही बंद हो गई और वेलुमणि बेरोजगार हो गए।

मुंबई में पहली लैब

लेकिन कहते हैं कि एक रास्ता बंद होता है तो 100 रास्ते खुल जाते हैं। कंपनी बंद होने के बाद वेलुमणि ने भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर में लैब असिसटेंट की पोस्ट के लिए अप्लाई किया। इसमें उनका सेलेक्शन हो गया। इसमें काम करते हुए उन्होंने अपनी आगे की पढ़ाई पूरी की और फिर साइंटिस्ट बने। 14 साल तक भाभा में काम करने के बाद वेलुमणि ने अपनी कंपनी खोलने की बात सोची। उनकी शादी सुमति वेलुमणि से हुई थी जो एसबीआई में कर्मचारी थीं। जब 1995 में उन्होंने कंपनी खोली तो उनकी बीवी ही पहली कर्मचारी थीं। कंपनी के लिए उनकी पत्नी ने जॉब छोड़ दी थी। पहली लैब मुंबई में खोली गई। वेलुमणि ने अपने पीएफ के एक लाख रुपये से यह कंपनी खोली थी। शुरुआत में उनका फोकस केवल थॉयरॉइड के टेस्ट पर था लेकिन बाद में दूसरे टेस्ट को भी इसमें शामिल किया गया।

वेलुमणि का मकसद लोगों को सस्ते में लैब की सुविधा मुहैया कराना था। शुरुआत के दिनों में रोज के केवल दो सैंपल ही आते थे। लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और रात-दिन मेहनत की। धीरे-धीरे अपने बिजनस मॉडल को भी औरों से अलग बनाया। टेस्ट की लागत कम थी और ज्यादा लोगों तक पहुंच के कारण उन्हें काफी फायदा मिला। धीरे-धीरे देश के अलग-अलग हिस्सों में सैंपल लैब खोले गए। अब उनका यह कारोबार पूरे देश में अपनी पहचान बना चुका है। 2016 में उन्होंने कंपनी को लिस्ट कराया। कंपनी का आईपीओ करीब 73 गुना सब्सक्राइब हुआ और आज इसका मार्केट कैप 3,361.70 करोड़ रुपये है।

सादगीपूर्ण जीवन

हाल में एक पॉडकास्ट में वेलुमणि ने बताया कि शुरुआती दिनों में वह सैलरी नहीं लेते थे और अपनी कमाई का एक-एक पैसा कंपनी में निवेश करते थे। उनका परिवार सादगी के साथ रहता था। कंपनी का प्रॉफिट बढ़ने के बाद भी यही स्थिति रही। वह कहते हैं, शुरुआती जीवन में मेरी सफलता की प्रेरणा मेरी मां थी और मेरी बिजनस सक्सेस की वजह मेरी पत्नी थी। लेकिन 2016 में कंपनी का आईपीओ आने से कुछ ही दिन पहले उनकी पत्नी को कैंसर डिटेक्ट हुआ। वेलुमणि ने कहा, आईपीओ से 50 दिन पहले मैंने अपनी पत्नी को खो दिया था। 12 फरवरी को उनका निधन हुआ और मई में आईपीओ आया। उनकी मौत से 50 दिन पहले हमें पता चला कि उन्हें ग्रेड फोर का पैंक्रिएटिक कैंसर है। आपकी सफलता में आपके जीवनसाथी की अहम भूमिका होती है। अगर आपका जीवनसाथी आप पर भरोसा करता है तो आपकी 10 गुना बढ़ जाती है।

2023-24 में 18 फीसदी बढ़ा प्रत्यक्ष कर संग्रह, 19.58 लाख करोड़ रुपये हुआ

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत का शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह मार्च 2024 को समाप्त वित्त वर्ष में सालाना आधार पर 17.7 प्रतिशत बढ़कर 19.58 करोड़ रुपये हो गया। कर विभाग ने रविवार को कहा कि यह राशि संशोधित अनुमानों से काफी अधिक है।

त्यक्ष कर संग्रह में सबसे बड़ी हिस्सेदारी

आयकर और कॉरपोरेट कर संग्रह 2023-24 के दौरान बजट अनुमानों से 1.35 लाख करोड़ रुपये (7.40 प्रतिशत) और संशोधित अनुमानों से 13,000 करोड़ रुपये अधिक रहा। इनकी प्रत्यक्ष कर संग्रह में सबसे बड़ी हिस्सेदारी है। वित्त वर्ष 2023-24 में सकल प्रत्यक्ष कर संग्रह (अनंतिम) 18.48 प्रतिशत बढ़कर 23.37 लाख करोड़ रुपये हो गया। रिफंड के बाद शुद्ध आय 17.7 प्रतिशत बढ़कर 19.58 लाख करोड़ रुपये रही। प्रत्यक्ष कर संग्रह के आंकड़े अर्थव्यवस्था में उछाल और व्यक्तियों तथा कॉरपोरेट की आय में वृद्धि को दर्शाते हैं। सीबीडीटी ने एक बयान में कहा कि वित्त वर्ष 2023-24 में कुल 3.79 लाख करोड़ रुपये का रिफंड जारी किया गया।

वित्त वर्ष 2023-24 के लिए प्रत्यक्ष कर संग्रह के अनंतिम आंकड़े बताते हैं कि शुद्ध संग्रह 19.58 लाख करोड़ रुपये है। इससे पिछले वित्त वर्ष में यह राशि 16.64 लाख करोड़ रुपये थी। वित्त वर्ष 2023-24 के बजट में इस वर्ष के लिए संग्रह 18.23 लाख करोड़ रुपये निर्धारित किया गया था, जिसे बाद में संशोधित कर 19.45 लाख करोड़ रुपये कर दिया गया।

संशोधित अनुमान से 0.67 प्रतिशत अधिक

बयान में कहा गया कि अनंतिम प्रत्यक्ष कर संग्रह (रिफंड को छोड़कर) बजट अनुमान से 7.40 प्रतिशत और संशोधित अनुमान से 0.67 प्रतिशत अधिक है। इस दौरान रिफंड के समायोजन से पहले प्रत्यक्ष करों का सकल संग्रह (अनंतिम) 23.37 लाख करोड़ रुपये रहा। यह राशि वित्त वर्ष 2022-23 के 19.72 लाख करोड़ रुपये के सकल संग्रह से 18.48 प्रतिशत अधिक है। वित्त वर्ष 2023-24 में सकल कॉरपोरेट कर संग्रह (अनंतिम), इससे पिछले वर्ष के 10 लाख करोड़ रुपये की तुलना में 13.06 प्रतिशत बढ़कर 11.32 लाख करोड़ रुपये हो गया। वित्त वर्ष 2023-24 में शुद्ध कॉरपोरेट कर संग्रह (अनंतिम) 9.11 लाख करोड़ रुपये रहा, जो पिछले वर्ष के 8.26 लाख करोड़ रुपये से 10.26 प्रतिशत अधिक है।

शुद्ध व्यक्तिगत आयकर संग्रह 10.44 लाख करोड़ रुपये

समीक्षाधीन अवधि में प्रतिभूति लेनदेन कर (अनंतिम) सहित सकल व्यक्तिगत आयकर संग्रह 12.01 लाख करोड़ रुपये रहा, जो पिछले वर्ष के 9.67 लाख करोड़ रुपये के संग्रह से 24.26 प्रतिशत अधिक है। इस दौरान एसटीटी (अनंतिम) सहित शुद्ध व्यक्तिगत आयकर संग्रह 10.44 लाख करोड़ रुपये रहा, जो इससे पिछले वित्त वर्ष के 8.33 लाख करोड़ रुपये से 25.23 प्रतिशत अधिक है। बयान में कहा गया कि वित्त वर्ष 2023-24 में 3.79 लाख करोड़ रुपये के रिफंड जारी किए गए, जो वित्त वर्ष 2022-23 में जारी किए गए 3.09 लाख करोड़ रुपये के रिफंड से 22.74 प्रतिशत अधिक है।

Govt. of Jharkhand
Cabinet (Election) Department,
Sector-2, Dhurwa, Ranchi.

Corrigendum

No-02/Ele(Tender)34-02/2023/2350 **Date : 20.04.2024**

e-Tender Notice for inviting request for proposals from eligible firm/ agencies for "selection of vendor for providing GPS based vehicle tracking system during upcoming General Election to Parliamentary Constituency and Legislative Assembly 2024" was published on e-tender website on 20.04.2024 vide e-Tender Reference No. 02/Ele(Tender)34-02/2023/2337 dated: 19.04.2024 is partially amended [Technical Capacity (Point No. I of 2.2)] as follows:-

1) The Bidder should have experience of rendering similar services for Election Commission of India or any Chief Electoral Officer in India with a minimum order value of Rs 50 lakhs and 3,500 GPS devices or GPS enabled device service during last five financial years (2018-2019, 2019-2020, 2020-21, 2021-22 & 2022-23)

2) The Bidder should have executed minimum of 3 GPS based vehicle Tracking System for any state/Central Government including ECI during last five financial years (2018-2019, 2019-2020, 2020-21, 2021-22 & 2022-23)

(or)

The Bidder should have executed minimum of 3 election related work of Rs 25 lakhs each for any Chief Electoral Officer in India during last five financial years (2018-2019, 2019-2020, 2020-21, 2021-22 & 2022-23)

All other parts of the original RFP will remain the same.

(K. Ravi Kumar)
Chief Electoral Officer-cum-Secretary,
jharkhand

(PR No. 323960 (Election) 24-25

निदेशक की कलम से...

संजय कुमार
निदेशक, विकास पब्लिक स्कूल

शिक्षा के बिना मनुष्य सुगंध रहित फूल के समान है। मनुष्य प्रकृति की सर्वोत्तम कृति है और शिक्षा ही उसे सभ्य सुसंस्कृत, शक्तिशाली और अनुशासित बनाती है। लेकिन खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि आज भी करोड़ों भारतीय अच्छी शिक्षा से वंचित हैं। इसलिए यह हमारा परम कर्तव्य बनता है कि जो व्यक्ति शिक्षा से वंचित है, वैसे व्यक्तियों तक शिक्षा का प्रकाश फैलाने में कोई कसर नहीं छोड़ी जाये। शिक्षा दान राष्ट्रीय विकास की दिशा में सर्वोत्तम दान है। इस विद्यालय में सभी जाति, धर्म, संप्रदाय, भाषा, संस्कृति या समाज के सभी वर्ग के छात्र-छात्राएं शिक्षक-शिक्षिकाएं एक साथ मिलकर पूरे उत्साह और तत्परता के साथ राष्ट्र के विकास में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं। मैं विद्या अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों को सलाह देना चाहूंगा कि समय बहुत कीमती है। समय का महत्व समझते हुए उसका सही ढंग से इस्तेमाल करने की जरूरत है, क्योंकि जो समय बीत जाता है, फिर वापस नहीं आता। अगर आप अध्ययन के प्रति ईमानदार और अनुशासित रहेंगे तो निश्चय ही सफलता आपके कदम चूमेगी। निदेशक होने के नाते मैं बच्चों में नैतिकता एवम देश भक्ति की भावना उत्पन्न करना चाहता हूं। इस पवित्र कार्य के लिए में सदैव दृढ़ संकल्पित हूं।

विकास पब्लिक स्कूल

नौनिहालों का भविष्य संवारने में जुटा है विद्यालय

विकास पब्लिक स्कूल सन 1994 में स्थापित हुआ। विकास शिक्षण सोसायटी द्वारा संचालित यह विद्यालय अपने सम्पूर्ण छात्रों को उच्च कोटि की बौद्धिक, शारीरिक एवम नैतिक शिक्षा प्रदान करता है, जिससे छात्र अपने जीवन के लक्ष्य प्राप्त कर व्यक्तिगत एवम सामाजिक उत्तरदायित्व भलीभांति निभा सकें। रांची के पुंदाग में स्थित यह विद्यालय पुंदाग, अरगोड़ा, डीबडीह, नयासराय, टुंडुल, पिपरटोली, दीपाटोली, हरमू, कडरू के केंद्रीय स्थल पर भारतीय विज्ञान संस्थान विकास नगर, पुंदाग के पास स्थित है। इस विद्यालय की अपनी जमीन एवम भवन है, इसमें समृद्ध पुस्तकालय, प्रयोगशालाएं, विषय विभाग एवम अन्य सुविधाओं के साथ परिपूर्ण कक्षाएं हैं। यह विद्यालय पुंदाग क्षेत्र में चमकते हीरे के समान हैं, जहां विद्वान, कर्मठ एवम दीर्घ अनुभवी शिक्षक राष्ट्र के भविष्य नौनिहाल बच्चों को सजाने संवारने में मनोयोग से सलंग्न है। भारतीय परिवेश के अंतर्गत यह विद्यालय बच्चों के सर्वांगीण विकास एवम सामाजिक समन्वय के लिए सौहार्दपूर्ण वातावरण प्रदान कर रहा है। विषय संबंधी ज्ञानार्जन के साथ-साथ जीवनोपयोगी अतिरिक्त क्रियाकलाप, कला साहित्य, कार्यानुभव, खेलकूद, कराटे प्रशिक्षण, सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे आयोजनों के द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास में लगा है। शिक्षकों का विद्यार्थियों एवम अभिभावकों के साथ रगात्मक तारतम्यता है। समय-समय पर समग्र रूप से विद्यार्थियों के साथ विकास हेतू अभिभावकों के साथ बैठक की जाती है। विकास पब्लिक स्कूल न केवल विद्यार्थियों को पुस्तकीय ज्ञान प्रदान कर रहा है, अपितु विद्यार्थियों के मानसिक, शारीरिक एवम भावात्मक विकास में अहम भूमिका निभा रहा है। विद्यालय, अंतर विद्यालय स्तरीय प्रतियोगिताओं में विद्यालय के विद्यार्थी अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार कौशल विकास के लिए विभिन्न ग्रुप की सरंचना की है और विद्यार्थी बढ़-चढ़कर उसमें हिस्सा ले रहे हैं। वर्तमान में विकास पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी देश-विदेश के अनेक क्षेत्रों में अपनी कार्यकुशलता का प्रदर्शन कर रहें हैं तथा देश और विद्यालय का नाम रौशन कर रहें हैं। शिक्षकेतर कर्मचारियों का भी विद्यार्थियों के साथ रगात्मक और भावात्मक संबंध है। शिक्षा को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए समय-समय पर विद्यालय प्रबंधन समिति के सदस्य, प्राचार्या तथा शिक्षकों के बीच वार्तालाप तथा बैठक होती रहती है और विद्यार्थियों के हित में निर्णय लिये जाते हैं। यह विद्यालय बिना किसी मानसिक दवाब के विद्यार्थियों के चतुर्दिक एवम बहुमुखी विकास पर निरंतर जोर देता आ रहा है।

शिक्षा ही समस्त प्रगति का आधार : अंशु

अंशु तिवारी
प्रधानाचार्य, विकास पब्लिक स्कूल

सफल होने के लिए, हमें पहले यह विश्वास करना होगा कि हम कर सकते हैं। शिक्षा ही समस्त प्रगति का आधार है। इसका उद्देश्य छात्रों में मानवीय मूल्यों, ज्ञान, करुणा, साहस और विश्वसनीयता को विकसित करना है। शैक्षणिक उत्कृष्टता के साथ-साथ सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी शिक्षा की प्रक्रिया को पूरा करती है और मुझे बेहद खुशी है कि स्कूल छात्रों के समग्र विकास की दिशा में अपने सभी प्रयासों में प्रगति कर रहा है। 1994 में बोये गये एक विचार के बीज जल्द ही मजबूत पौधे बन गये हैं। स्कूल शिक्षा का प्रकाश फैलाने और प्रत्येक छात्र के लिए उत्कृष्टता का मार्ग प्रशस्त करने के लिए आगे बढ़ा है। पूरे वर्ष छात्रों की उपलब्धियों और स्कूल की प्रगति को देखकर खुशी होती है। सत्य और ज्ञान की किरण हमें सही रास्ता दिखाये।

कार्यक्रम की झलकियां